

मान पद्य संग्रह

अथवा

व्यावहारिक आत्म-ज्ञान

तीसरा भाग

और

वाणी संग्रह

संग्रहकर्ता तथा प्रकाशक

रामगोपाल मोहता

बीकानेर

पहली बार
१००० प्रति

संवत् २००७

मूल्य
१।।) रुपया



मुद्रक:—
भारतीय मुद्रण मन्दिर
खजांची भवन,
बीकानेर

सूची पत्र



मान पद्य-संग्रह

तीसरे भाग की प्रस्तावना



"मान पद्य-संग्रह" का प्रथम भाग संवत १९६५ में प्रकाशित हुवा था और दूसरा भाग संवत १९६७ में प्रकाशित हुआ था। इसके पीछे जोधपुर निवासी सूरदास साधु मोहनरामजी कबीर पंथी ने राजरिषि भूतपूर्व जोधपुर नरेश महाराज श्री मानसिंहजी कथित जो भजन गा कर सुनाये उनका संग्रह इस तीसरे भाग में प्रकाशित किया जाता है। साथ ही कई अन्य महात्माओं की वाणियाँ भी इस पुस्तक के उत्तरार्ध में "वाणी समह" के नाम से प्रकाशित की जाती हैं और स्वय साधु मोहनरामजी की छाप के कुछ भजन सामयिक तर्जों के भी प्रकाशित किये जाते हैं।

आशा है इस विषय के प्रेमी लोग इन भजनों से लाभ उठावेंगे।

बीकानेर पौष बदी ८ सोमवार
संवत २००७ ता० १-१-१९५१  रामगोपाल मोहता



ज्ञान पद्य-संग्रह

अथवा

व्यावहारिक आत्म-ज्ञान

भाग तीसरा

॥ दोहा ॥

आनहिं इस जगत में, साधू बहुत चहाय।
पर जिनकी हमको चाहना, सो साधू कहुँ नांय॥
सब ही जग में मैं फिर्यो, साधू असंख्यों जोय।
ढूँढत ढूँढत एक मिलिया, साथ देव नि–

॥ भजन ॥

राग सारंग; तर्ज वाणी की । ताल दीपचन्धी ॥

साधो भाई म्हांने मिलियो न वैद्य सुघड़ रे । वैद मिल्या सो मिलिया स्वार्थिया, बेठा बांह पकड रे ॥टेर॥

स्वार्थी वैद्यों सू मिटेना बिमारी; ज्यांरो मन स्वारथ लियो हर रे।
स्वारथ हेत वातों करे बहुता, कोई कहे खुशक कोई तर रे ॥ १ ॥
वात न पित्त कफ नहीं मेरे; क्यों भूठो करो थे जिकर रे।
म्हारी बिमारी मेटसी वोई; काटे अपणो शिर रे॥ २ ॥
म्हारो वैद्य सहज नहीं बणनों; जीवत जावे मर रे ।
जीवत मरे सो मेटे बिमारी; ले आवे गिरधर रे ॥ ३ ॥
काली मिरच कुटक क्या पावे, क्या तू देवे हरड़ रे।
थांनो दवाई मिले नहीं थाने; चारों खूंट आवो फिर रे ॥ ४ ॥
नाथजी वैद्य मिल्या म्हांने पूरा, जिको राखी नहीं कसर रे।
ममता मिरच कर्म री कुटकी, घोट पिलाई रगड़ रे ॥ ५ ॥
पाँचू तत्व पित्तपापड़ो कीनो, मैं तो समता सूंठ लियो कर रे।
चित्तरो चिरायतो ऐसो डारयो; पीतांई स्वस्थ सुघड़ रे ॥ ६ ॥
ऐसो वैद्य मान जद पायो, फिर कुण भटके घर घर रे ।
और वैद्य सूं भली नहीं होई; पायो वैद्य सदर रे ॥ ७ ॥

॥ सवैया ॥

पन्थ अनन्तां ने जुल्म कियो सन्यास असल की जड़ यह खोई।
पन्थ ही पन्थ की पोल मचा कर आप डूबे सब जगत डुबोई।
दीन दयाल यदि कृष्ट देखियो तो इन मे फिर खोटी होई।
जूत पडे यम के शिर पै तो छुडावण हार मिले नहीं कोई।
मान कहे गुरु देव ही नाथ ने हाथ गहे समझा दियो मोई।
सहज सन्यास को जोय लियो जब ब्रह्म के बीच मे वृत्ति पोई ॥

॥ सवैया ॥

त्याग को त्याग कियो हमने फिर त्याग कहाँ पै रह्यो वह विचारो।
तीनों ही लोक को त्याग कियो पर त्याग्यो नहीं निज रूप हमारो।
त्यागत त्यागत भाग कियो जब त्याग और भाग को लक्ष उठायो।
लक्ष उठाय के देख लियो तो त्यागनहार तो आप कहायो।
देवहू नाथ कृपा करके असली निज त्याग सो मोय बतायो।
मान कहे अब त्याग और ग्रहण को भेद मिट्यो निज त्यागी कहायो॥

॥ सवैया ॥

असल सन्यास को धार लहे तब तीनों ही लोक करे जो गुलामी।
बेपरवाह रहे परवाह नहीं वह तीनों ही लोक को है जो स्वामी।
गृहस्थ छते ही सन्यासी बन्यो जिन पाय लियो उर में धन नामी।
मान कहे रंग है उनको जिन जान लियो उर अन्तर्यामी॥

॥ सवैया ॥

ब्रह्म वैराग्य धर्यो उरमें जब छाय रही दिल में एकताई।
चित को अपने किया चेला जब मिथ्या अहंकार को दीन बहाई।
वृत्ति नार को मूंड की चेली निर्भय रहे उस नगर के मांई।
भीख अखण्ड दिवी गुरु देव ने सो कबहूं नहीं खूटत खाई।
नाथ ने कीन कृपा हम पै तब असल सन्यास की जुगति बताई।
मान सन्यास सव्यो अस सुन्दर तो इत उत भटकूं अब नांई॥

॥ भजन ॥

राग सारंग; तर्ज बाणी की। ताल कैरवा॥

साधो रे भाई मैं तो वस्ती बसू न ऊजड़ रे। मेरी गति तो मैं ही जानूं; मत करना गड़बड़ रे॥ टेर॥
तुमरी कही एक ना मानूं; क्यों बकते बड़ बड़ रे। पोला पन्थ को अन्त कर दीनो; मेट दीवी अड़बड़ रे॥१॥ बाचो पोथा थोथा यूं ही; बोझ लादे

ज्यू म्हर रे। मैं तो पोथी प्रेम री बाची; पोंच्यो परे मूं पर रे ॥ २ ॥ सब वसुधैव कुटुम्ब है मेरो, मेरा धाम सदर रे। मेरो ही हुकम सभी पर चाले, मुझ पर किणरो उजर रे ॥ ३ ॥ गोरख कबीर घणी ही भाखी; राखी नांही कसर रे। थाँरे मेघ कितांई बरसो; पण पत्थर न होवें तर रे ॥ ४ ॥ भूप भरथरी भूल न राखी; जिण भाखी शब्द समर रे। मारचा तीर ताक कर तन में, पण हृदय भयो बजर रे ॥ ५ ॥ मान कहे में कूड़ ना भाखूं; कहूं निष्पत्त निडर रे। अबकी कही सन्तो नहीं मानों; तो हो थे पशु नहीं नर रे ॥ ६ ॥

राग मारग मल्हार, तर्ज वाणी की। ताल दीपचन्दी ॥

हीरा घण मू कद डरे, घण री चोट चढावे हाँ।
यों साधू मन ना डरे हाँ हाँ, ते शब्द परखावे जी ॥टेर॥
बिना परख बिना गुरु किसा, जाग्रत बिन क्या चेला हाँ।
अन्ध अन्ध की संग में हाँ हाँ, भव जल कूप गिरेला जी।
बिन पारख गुरु नहीं कीजिए, ग्रंथ में साख सुणावे हाँ।
हीरा घण सूं० ॥१॥

हँस जिके तो हंस है, चुग रया मोतियों का चारा हां।
खीर पीये पानी छोड़दे हाँ हाँ, वे हंस लागे प्यारा जी।
हंस समान ये हरिजन, जग में नहीं अलुझावे हाँ।
हीरा घण सूं० ॥२॥

कनक कामिनी खोटी कहे, ज्याँने कायर जाणो हाँ।
मन ज्यांरो माने नहीं हाँ हाँ, अवरां ने दोष लगाणो जी।
साधू जिके तो सूरवा, सन्मुख अड़ जावे हाँ।
हीरा घण सू० ॥३॥

देवनाथ गुरु मन जीत है, जिन मेरो मन बस कीनो हाँ।
मान कहे अड़ काल सूं हाँ हाँ, उणने ही उत्तर न दीनो जी।
चत्री सुन हरिजन संग से, शिर धर निज पद पावे हाँ।
हीरा घण सूं० ॥४॥

राग सारंग-मल्हार, तर्ज वाणी की। ताल दीपचन्दी ॥

मोय गरीबी भावे नहीं, दीन ही दीन पुकारे हाँ।
घणी गरीब जो गाडरी, जिणने हर कोई मारे जी ॥टेर॥
गाडर होय घणा दिन रह्यो, अति दुःख उठायो हाँ।
सिंह कियो म्हारा नाथ जी, भेड़ भ्रम दूर भगायो जी ॥१॥
सिंह भयो जद सुख भयो, अबे ज्यांने सिंह करिया हाँ।
भिड़तां भेड़ पण भागियो, भेड़ों ने चरिया जी ॥२॥
दीन दीन बण डूबियो, देश री जहाज डुबाई हाँ।
ब्रह्म-विद्या जाणी नहीं, अपणी आप गुमाई जी ॥३॥
एक एक की खेंच में, उल्टा अलुझावे हाँ।
भारत भूमि क्यों नहीं धसे, कहि विध जीवित रहावे जी ॥४॥
पढ़ वशिष्ठ ने देख लो, कहीं नहीं दीन बतायो हाँ।
कठ बृहदारण्यक ईशावास्य, तूंही है तूंही है गायो जी ॥५॥
दोय दोय बार कही कृष्ण जी, अर्जुन समझायो हाँ।
गीता अनुगीता के मांही, कहीं नहीं दीन बतायो जी ॥६॥
आर्य सभी के गुरु हुते, शिष्य होतो जग सारो हाँ।
मान कहे अब दीनता, दिल सं दूर निवारो जी ॥७॥

॥ दोहा ॥

देश देश सब ही कहे, देश न देख्यो कोय।
बिना देश देख्याँ बिना, 'देश' गाय मत रोय ॥
बिना देश देख्याँ बिना, कैसे पावे देश।
दिशा विहूणा बावरा, क्यों धरे नकली भेष ॥
देश देश सब ही करे, और बसे आप परदेश।
मान आनन्द जब आवही, जब बस हीं निज देश ॥

राग देश-सोरठ। ताल कैरवा ॥

चालो उण देश में रे जोगिया, जहाँ नहीं मजहब नहीं पन्थ ॥टेर॥

चार वेद षट शास्त्र नहीं रे जोगिया, नहीं धरम नहीं ग्रन्थ। अल्ला राम दोनों नहीं रे जोगिया, नहीं स्वर्ग न जिन्नत। चलो उण देश० ॥१॥ ना वैकुण्ठ ना वहिश्त है रे जोगिया, नर्क दोजख ना कहन्त। ना कोई पंडित काजी मुल्ला रे जोगिया, ना कोई सत महन्त। चालो उण देश० ॥२॥ जीव ब्रह्म दोनों नहीं रे जोगिया, जहाँ है सबको अन्त। श्रुति पुरान कुरान नहीं रे जोगिया, सबसे अलग रहन्त। चालो उण देश० ॥३॥ देवनाथ गुरु हाथ गह्यो रे जोगिया, जब ये बात लखन्त। मानसिंह आनन्द सदा रे जोगिया, अपने में आप बसन्त। चलो उण देश० ॥४॥

राग देश–सोरठ। ताल कैरवा ॥

अगम दरबार मे रे जोगिया, अटक किणी ने नाय ॥टेर॥
जात ना वर्ण ना धरम कोई रे जोगिया, जो चाहे सो आय। ऊंच नीच जहाँ है नहीं रे जोगिया, छोट मोट कोई नांय। अगम दरबार में० ॥१॥ शीश उतार धरे कोई रे जोगिया, सो उण घर चढ़ जाय। पग विन पंथ चले कोई रे जोगिया, जब वह मार्ग लखाय। अगम दरबार में० ॥२॥ जीव ईश जहाँ हैं नहीं रे जोगिया, जहा नहीं राम खुदाय। इणी देश आनन्द है रे जोगिया, नहीं आवे नहीं जाय। अगम दरबार में० ॥३॥ चार वेद जहां हैं नहीं रे जोगिया, पट शास्त्र जहा नांय। नहीं कुरान की पहुँच है रे जोगिया, वाणी वाक्य नहीं पाय। अगम दरबार में० ॥४॥ देवनाथ सत गुरु मिले रे जोगिया, दीनो भेद बताय। मानसिंह निज आप में रे जोगिया, रयो शुद्ध रूप समाय। अगम दरबार में० ॥५॥

राग देश-सोरठ। ताल कैरवा ॥

समाधि म्हारे कौन करे रे जोगिया, मैं स्वत समाधि मांय ॥टेर॥
ए खट पट तो घणाई किया रे जोगिया, पण हाथ लग्यो कुछ नांय। रेत रुलाई इण देह ने रे जोगिया, पुनि पुनि जन्म धराय। समाधि म्हारे ॥१॥ घणा ही दिवस भूखा मरया रे जोगिया, अन्न जल दिया हटाय। धूणी पांच भी तापली रे जोगिया, पर मन स्थिरता नहीं पाय। समाधि म्हारे० ॥२॥

अनन्त देश मैं भटकियो रे जोगिया, कब तक कहूं मैं गिनाय। नर मादा नाना भयो रे जोगिया, जिणरो अन्त नहीं आय। समाधि म्हारे० ॥३॥ आंख खुली जद कुछ भी नहीं रे जोगिया, सब सुपनो ही दरसाय। अनन्त जन्म ऐसा लग्या रे जोगिया, एक पलक रे मांय। समाधि म्हारे० ॥४॥ देवनाथ गुरु वशिष्ठ मिल्या रे जोगिया, हम जब राम कहाय। राम वशिष्ठ दोनों नहीं रे जोगिया, मिल गये मेरे मांय। समाधि म्हारे० ॥५॥ मैं ब्रह्म मद में चूर भयो रे जोगिया, मन आवे ज्यूं बक जाय। जगत तमासो जाणसी रे जोगिया, मरजीवा है जिके पाय। समाधि म्हारे०॥६॥ बकणो म्हारो बेगम घणो रे जोगिया, कोई न करे विश्वास। जो विश्वास कोई कर लेवे रे जोगिया, तो देव रहे न कोई दास। समाधि म्हारे० ॥७॥

राग भैरवी। ताल तिताला ॥

यह नहीं देश हमारा है, साधो यह नहीं देश हमारा है॥ टेर॥
याही देशकी दुनिया दीवानी, मेरी गम किन हू नहीं जानी।
यह माया बीच विचारा है। साधो यह नहीं देश० ॥ १ ॥
याही देश में भेद भाव बहु, मेरी बात जाने नहीं हर कहु।
भूले मति मन्द गवांरा है। साधो यह नहीं देश० ॥ २ ॥
मेरे देश दिवस नहीं रजनी, जहां बिलसी है सुरता सजनी।
चन्द सूर नहीं तारा है। साधो यह नहीं देश० ॥ ३ ॥
मेरे देश का ढंग निराला, होवे हँस रहे मतवाला।
जग से कौन किनारा है। साधो यह नहीं देश० ॥ ४ ॥
मानसिंह कहे सुनो गुनिज्ञानी, वेद शास्त्र बहां है सच कहानी।
अपना ही आप निहारा है। साधो यह नहीं देश० ॥ ५ ॥

राग भैरवी। ताल कैरवा ॥

क्या पूछो हमें हम कहां से आये॥ टेर॥
आय गये अब कैसे बतावें, या को अंत कछु नही पाये॥ १ ॥
आना जाना है नहीं मुझ में, जन्म मरण दुख नहीं पाये॥ २ ॥

चार वेद पट शास्त्र नहीं रे जोगिया, नहीं धरम नहीं ग्रन्थ । अल्ला राम दोनों नहीं रे जोगिया, नहीं स्वर्ग न जिन्नत । चलो उण देश० ॥१॥ ना वैकुण्ठ ना बहिश्त है रे जोगिया, नर्क दोजख ना कहन्त । ना कोई पंडित काजी मुल्ला रे जोगिया, ना कोई संत महन्त । चालो उण देश० ॥२॥ जीव ब्रह्म दोनों नहीं रे जोगिया, जहाँ है सबको अन्त । श्रुति पुरान कुरान नहीं रे जोगिया, सबसे अलग रहन्त । चालो उण देश० ॥३॥ देवनाथ गुरु हाथ गह्यो रे जोगिया, जब ये बात लखन्त । मानसिंह आनन्द सदा रे जोगिया, अपने में आप बसन्त । चलो उण देश० ॥४॥

राग देश—सोरठ । ताल कैरवा ॥

अगम दरबार में रे जोगिया, अटक किणी ने नाय ॥टेर॥
जात ना वर्ण ना धरम कोई रे जोगिया, जो चाहे सो आय । ऊँच नीच जहाँ है नहीं रे जोगिया, छोट मोट कोई नांय । अगम दरबार में० ॥१॥ शीश उतार धरे कोई रे जोगिया, सो उण घर चढ़ जाय । पग बिन पंथ चले कोई रे जोगिया, जब वह मार्ग लखाय । अगम दरबार में० ॥२॥ जीव ईश जहाँ हैं नहीं रे जोगिया, जहा नही राम खुदाय । इसी देश आनन्द है रे जोगिया, नहीं आवे नहीं जाय । अगम दरबार मे० ॥३॥ चार वेद जहां है नहीं रे जोगिया, पट शास्त्र जहां नांय । नही कुरान की पहुँच है रे जोगिया, वाणी वाक्य नहीं पाय । अगम दरबार में० ॥४॥ देवनाथ सत गुरु मिले रे जोगिया, दोनो भेद बताय । मानसिंह निज आप मे रे जोगिया, रयो शुद्ध रूप समाय । अगम दरबार मे० ॥५॥

राग देश-सोरठ । ताल कैरवा ॥

समाधि म्हारे कौन करे रे जोगिया, मैं स्वत समाधि मांय ॥टेर॥
ए खट पट तो घणाई किया रे जोगिया, पण हाथ लग्यो कुछ नाय । रेत रुलाई इण देह ने रे जोगिया, पुनि पुनि जन्म धराय । समाधि म्हारे ॥१॥ घणा ही दिवस भूखा मरया रे जोगिया, अन्न जल दिया हटाय । धूणी पांच भी तापली रे जोगिया, पर मन स्थिरता नहीं पाय । समाधि म्हारे० ॥२॥

अनन्त देश मैं भटकियो रे जोगिया, कब तक कहूं मैं गिनाय। नर मादा नाना भयो रे जोगिया, जिणरो अन्त नहीं आय। समाधि म्हारे० ॥३॥
आंख खुली जद कुछ भी नहीं रे जोगिया, सब सुपनो ही दरसाय। अनन्त जन्म ऐसा लग्या रे जोगिया, एक पलक रे मांय। समाधि म्हारे० ॥४॥
देवनाथ गुरु वशिष्ठ मिल्या रे जोगिया, हम जब राम कहाय। राम वशिष्ठ दोनों नहीं रे जोगिया, मिल गये मेरे मांय। समाधि म्हारे० ॥५॥
मैं ब्रह्म मद में चूर भयो रे जोगिया, मन आवे ज्यूं बक जाय। जगत तमासो जाणसी रे जोगिया, मरजीवा है जिके पाय। समाधि म्हारे० ॥६॥
बकणो म्हारो बेगम घणो रे जोगिया, कोई न करे विश्वास। जो विश्वास कोई कर लेवे रे जोगिया, तो देव रहे न कोई दास। समाधि म्हारे० ॥७॥

राग भैरवी। ताल तिताला ॥

यह नहीं देश हमारा है, साधो यह नहीं देश हमारा है ॥ टेर ॥
याही देशकी दुनिया दीवानी, मेरी गम किन हू नहीं जानी।
यह माया बीच विचारा है। साधो यह नहीं देश० ॥ १ ॥
याही देश में भेद भाव बहु, मेरी बात जाने नहीं हर कहु।
भूले मति मन्द गवांरा है। साधो यह नहीं देश० ॥ २ ॥
मेरे देश दिवस नहीं रजनी, जहां बिलमी है सुरता सजनी।
चन्द सूर नहीं तारा है। साधो यह नहीं देश० ॥ ३ ॥
मेरे देश का ढंग निराला, होवे हँस रहे मतवाला।
जग से कौन किनारा है। साधो यह नहीं देश० ॥ ४ ॥
मानसिंह कहे सुनो गुनिज्ञानी, वेद शास्त्र वहां है सब कहानी।
अपना ही आप निहारा है। साधो यह नहीं देश० ॥ ५ ॥

राग भैरवी। ताल कैरवा ॥

क्या पूछो हमें हम कहां से आये ॥ टेर ॥
आय गये अब कैसे बतावें, या को अंत कछु नहीं पावे ॥ १ ॥
आना जाना है नहीं मुझ में, जन्म मरण दुख नहीं पावे ॥ २ ॥

की, अपने दिल से लाग मिटाने रे। मेरा भेद० ॥१॥ भेदी मिले तो भेद बताऊँ, नेक रखूँ नहीं छाने। जीवन मुक्ति पलक मे देऊँ, जैसे जल बिच तरंग समाने रे। मेरा भेद० ॥२॥ मेरा भेद लखेगा वोही, हरदम रहे मस्ताने। हस्तामलक ज्यूँ सब जग देखे, खुद नटवा बन खेल खेलाने रे। मेरा भेद० ॥३॥ मानसिंह कहे सुनो हो मित्रो, हम हैं मस्त दिवाने। या मस्ती को वोही पावे, पाप पुन सुख दुख नहीं माने रे। मेरा भेद० ॥४॥

राग भैरवी, तर्ज 'कन्हैया तेरो कारो" की। ताल कैरवा ॥

रहे मस्तान ऐसी घूंटी पाऊँ रे। रहे मस्तान० ॥टेर॥
खुद मस्ती की घूँटी पाकर, जीवत मृतक बनाऊँ। काम क्रोध मद लोभ मोह का, जड़ा मूल से खोज मिटाऊँ रे। रहे मस्तान० ॥१॥ मानो गयन्द समान झूम रहे, ऐसो आनन्द दिलाऊँ। हर्ष शोक से रहित होय फिर, परमानन्द पद सहज मिलाऊँ रे। रहे मस्तान० ॥२॥ रंक हो जिसको करूँ बादशाह, दुर्मति दूर हटाऊँ। आय बादशाह चरण सिर नावे, ऐसो अद्भुत खेल खेलाऊँ रे। रहे मस्तान० ॥३॥ कहे मानसिंह सुनो हो मित्रो, तत से मन समझाऊँ। जीवन मुक्त करूँ या तन मे, अजब अनोखी मौज कराऊँ रे। रहे मस्तान० ॥४॥

राग भैरवी, तर्ज "कन्हैया तेरो कारो" की। ताल कैरवा ॥

पतड़ो खोल पण्डित कहा मोहे सुनावे रे। पतड़ो खोल० ॥टेर॥
जेती बात मेरे पतड़े मैं, तेती तुम नहीं पावे। मम पतड़े आधार तुमारो फिर फिर के तो पन्डित यहीं पर आवे रे। पतड़ो खोल० ॥१॥ पतड़ो खोल बात कहे सगरी, आखिर यूँ समझावे। तेरी कही बात नहीं होवे, तो फिर ईश्वर को बतलावे रे। पतड़ो खोल० ॥२॥ तुम जो कहो ईश्वर रे पन्डित, वो तो निजर नहीं आवे। मेरी कही मानले पण्डित, तो ईश्वर तोहे सहज मिलावे रे। पतड़ो खोल० ॥३॥ तेरो पतड़ो जो यह पण्डित, बरस मे रद हो जावे। मैं पतड़ो तोहे ऐसो पढ़ाऊँ, आदि अनादि से बचियो ही जावे रे। पतड़ो खोल० ॥४॥ तव पतड़े मे एक जन्म की, बात जरा कह जावे। मम

पतड़े में अनन्त जन्म की, बात निजर जैसे आज दरसावे रे। पतड़ो खोल० ॥५॥ एक बात अजब रे पन्डित, मम पतड़े में पावे। इसको बांच धारले रे पन्डित, मह तो दूर फिर जन्म न आवे रे। पतड़ो खोल० ॥६॥ तू तो पन्डित बात कहे यह, मेरी समझ नहीं आवे। ज्यों अन्धे की लकड़ी अन्धे, पकड़ के दोनों कूप गिरावे रे। पतड़ो खोल० ॥७॥ मानसिंह कहे सुनो हो पन्डित, यह रस तुम में न आवे। तू तो मरे के बाद मोक्ष दे, हम तो जीवत मोक्ष पठावें रे। पतड़ो खोल०. ॥८॥

राग भैरवी, तर्ज "कन्हैया तेरो कारो" की। ताल कैरवा॥

मोहे चहिये नांय, मेरा तो मैं ही हूं जाचिया रे। मोहे चहिये नांय० ॥टेर॥ अपना जप तो आपको करना, वेद और ग्रन्थ सुनावे। अवर भरोसे रहे आलसी, ऐसो आलस तो मोहे नहीं भावे रे। मोहे चहिये नांय० ॥१॥ अन्धविश्वास तो उड़ गयो सगरो, समझ गयो मन मांई। जन्तर मन्तर जप और माला, ऐसी पोल अब चले यहां नांई रे। मोहे चहिये नांय० ॥२॥ देखो ये अवरन के ऊपर, बैठा मौज उड़ावे। ऐसे क्या मोंदू हम ही हैं, हम तो कमावें और इन्हें जीमावें रे। मोहे चहिये नांय० ॥३॥ रिषियों के दृष्टान्त देत हैं, वे तो थे निज ज्ञानी। बिना काम के दान न लेते, खुद भी थे वे तो देने के दानी रे। मोहे चहिये नांय० ॥४॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शुद्र थे, चारों एक समाना। गुण अनुसार करम सब बांटे, वेद और गीता का देऊँ प्रमाना रे। मोहे चहिये नांय० ॥५॥ वेश्या पुत्र वशिष्ट जो कहिये, सूत शूद्र सुत जाना। बालमीकि था भील जाति का, स्वयम् राम के गुरु जिन माना रे। मोहे चहिये नांय० ॥६॥ काकभुषन्ड गरुड़ पक्षी थे, उनको भी सनमाना। बन्दर रींछ हृदय से लगाये, हाय गयो कहां वह विज्ञाना रे। मोहे चहिये नांय ॥७॥ बालक गुडियां खेल करे ज्यों, ऐसो खेल मचायो। फूटे भाग इस भारत देश के, जब ही बुरो दिन ऐसो आयो रे। मोहे चहिये नांय० ॥८॥ रूठ गयो भगवान देश से, छाई रात अंधारी। नर नारी सब उल्लू हो गये, बड़े तो उल्लू हैं ये सन्त पुजारी रे। मोहे चहिये नांय० ॥९॥ देवनाथ गुरु दया करी जब, यह मद हमको दीना।

की, अपने दिल से लाग मिटाने रे। मेरा भेद० ॥१॥ भेदी मिले तो भेद बताऊँ, नेक रखूँ नहीं छाने। जीवन मुक्ति पलक में देऊँ, जैसे जल बिच तरंग समाने रे। मेरा भेद० ॥२॥ मेरा भेद लखेगा वोही, हरदम रहे मस्ताने। हस्तामलक ज्यूँ सब जग देखे, खुद नटवा बन खेल खेलाने रे। मेरा भेद० ॥३॥ मानसिंह कहे सुनो हो मित्रो, हम हैं मस्त दिवाने। या मस्ती को वोही पावे, पाप पुन सुख दुख नहीं माने रे। मेरा भेद० ॥४॥

राग भैरवी, तर्ज "कन्हैया तेरो कारो" की। ताल कैरवा॥

रहे मस्तान ऐसी घूँटी पाऊँ रे। रहे मस्तान० ॥टेर॥

खुद मस्ती की घूँटी पाकर, जीवत मृतक बनाऊँ। काम क्रोध मद लोभ मोह का, जड़ा मूल से खोज मिटाऊँ रे। रहे मस्तान० ॥१॥ मानो गयन्द समान भूम रहे, ऐसो आनन्द दिखाऊँ। हर्ष शोक से रहित होय फिर, परमानन्द पद सहज मिलाऊँ रे। रहे मस्तान० ॥२॥ रंक हो जिसको करूँ बादशाह, दुर्मति दूर हटाऊँ। आय बादशाह चरण सिर नावे, ऐसो अद्भुत खेल खेलाऊँ रे। रहे मस्तान० ॥३॥ कहे मानसिंह सुनो हो मित्रो, तन से मन समझाऊँ। जीवन मुक्त करूँ या मन में, अजब अनोखी मौज कराऊँ रे। रहे मस्तान० ॥४॥

राग भैरवी, तर्ज "कन्हैया तेरो कारो" की। ताल कैरवा॥

पतड़ो खोल पण्डित कहा मोहे सुनावे रे। पतड़ो खोल० ॥टेर॥

जेती बात मेरे पतड़े में, तेती तुम नहीं पावे। मम पतड़े आधार तुमारो फिर फिर के तो पन्डित यहीं पर आवे रे। पतड़ो खोल० ॥१॥ पतड़ो खोल बात कहे सगरी, आखिर यूँ समझावे। तेरी कही बात नहीं होवे, तो फिर ईश्वर को बतलावे रे। पतड़ो खोल० ॥२॥ तुम जो कहो ईश्वर रे पन्डित, वो तो निजर नहीं आवे। मेरी कही मानले पण्डित, तो ईश्वर तोहे सहज मिलावे रे। पतड़ो खोल० ॥३॥ तेरो पतड़ो जो यह पन्डित, बरस में रद हो जावे। मैं पतड़ो तोहे ऐसो पढ़ाऊँ, आदि अनादि से बचियो ही जावे रे। पतड़ो खोल० ॥४॥ तव पतड़े में एक जन्म की, बात जरा कह जावे। मम

ज्ञान को सूर्य उगायो अन्दर, तब यह तत्त्वमसि मद हम पीना रे। मोहे चहिये नांय० ॥१०॥ मानसिंह उर भयो उजालो, अब न अन्धेरे में जावें। उल्लू अपनी बकते रहयो, हम तो उजाले में मौज उड़ावें रे। मोहे चहिये नांय० ॥११॥

राग भैरवी, तर्ज "कन्हैयो तेरो कारो" की। ताल केरवा ॥

हूँ ये गुलाम, कैसे भेद बताऊँ रे। हूँ ये गुलाम० ॥टेर॥ जन्म जन्म तक की गुलामी, ठाकुर कैसे बनाऊँ। गोरख कबीर ने ढोल बजायो तो मैं इन बहरों को कैसे सुनाऊँ रे। हूँ ये गुलाम० ॥१॥ ईश्वर जुदा जुदा खुद रहते, कैसे एक बताऊँ। मांग मांग के उमर बिताई, इन मंगतों को कैसे माल दिखाऊँ रे। हूँ ये गुलाम० ॥२॥ कोई वैकुण्ठ समुद्र में ढूँढे मैं क्यों गोते खाऊँ। कोई चौथे आसमान में दौड़े, इन डरपोकों से क्यों स्यान गमाऊँ रे। हूँ ये गुलाम० ॥३॥ राजा मंगते परजा मंगते, मंगते देव बताऊँ। मंगतों का ईश्वर भी मंगता, इन मंगतों को मैं तो देख हंसाऊँ रे। हूँ ये गुलाम० ॥४॥ देवनाथ दाता के दाता, नाथ के रूप समाऊँ। मान अनाथ कभी नहीं होवे, जो कोई बने उनको नाथ बनाऊँ रे। हूँ ये गुलाम० ॥५॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह ससार में, भरी है भूल अनन्त।
गिनती करता थक गया, कितना कहिये पंथ ॥
मानसिंह संसार के, कहिये मता अनेक।
एक से एक अड़ता रहे, मारे एक को एक ॥
मानसिंह मन मान ली, करड़े मते ली धार।
पोल पंथ में ना पजूँ, कर लो जतन हजार ॥
बहुत दिनां तक फंस लियो, फंस कर खाई मार।
पूरब पुन किरपा भई, उपज्यो ज्ञान विचार ॥
सतगुरू मिल गये नाथजी, ये वे सच्चे नाथ।
नाथ कियो नृप मान को, मेट दियो है अनाथ ॥

राग प्रभाती। ताल कैरवा॥

मेरी माला तू क्या फेरे, अपनी आप मैं फेरूँ रे। मेरी माला तू ॥टेर॥ माला जैसो काम जगत में, अवरां ने कौन मोलावे रे। इतनो ही काम होय नहीं हमसे, तो क्यों मनुष्य तन पावें रे ॥१॥ ऐसी माला फेर फेर कर, सबको आलसी कीना रे। झूठा धोखा दे दे जगत को, अपना घर भर लीना रे ॥२॥ माला फेरयां लक्ष्मी आवे, माला सूं दुख जावे रे। तू फिर क्यों यूं फिरे मांगतो, क्यों इतनो दुख पावे रे ॥३॥ तीन तांप सूं शान्ति करसी तो, अपनी क्यों नहीं करले रे। आप दुखी हो फिरे जगत में, क्यों न दरिद्रता हरले रे ॥४॥ माला जैसी चीज जगत में, मांगी मिले उधारी रे। देखो ठगों ठगाई मांडी, पोल मचाई भारी रे ॥५॥ ऐसी माला हमें न चहिए, यहां मत पोल चलावो रे। ऐसो खुशामदी ईश्वर तुम्हारो, उसको दूर हटावो रे ॥६॥ इण माला सूं तो यों ही आछा, मन आवे जहां जावें रे। स्वर्ग नरक जो मिले कोई भी, नहीं गुलाम रहावें रे ॥७॥ आठों पहर फिरत है माला, पलक ढील नहीं लावे रे। बिना सुमेर गांठ बिन फिरती, मणिया कौन घिसावे रे ॥८॥ सदा अजय हूं जय क्या बोले, जय की जय क्या होवे रे। कर कर पोल गोल इण जग में, क्यों तू जगत डुबोवे रे ॥९॥ ऐसी पोल चले नहीं यहां, पर, हम अपने अधिकारी रे। मान मार विज्ञान के गोले, बिगड़े शान तुम्हारी रे ॥१०॥

राग प्रभाती। ताल कैरवा॥

ऐसो निरत करे ओ सब में, कथक निजर ना आवे रे ॥टेर॥
जैसो निरत भाव से ही पूरे, रत्ती न कसर दिखावे रे।
भाव बरोबर देखे सब जग, तो ही न खोज लगावे रे ॥१॥
देखे हँसे और नाचे गावे, नई-नई तान सुनावे रे।
बाल वृद्ध और तरुण होय कर, नाना स्वांग धर आवे रे ॥२॥
स्थावर जंगम सभी इसी में, नाना चरित चरितावे रे।
खुशी होय तो निरत करे यो, नहीं तो चुप हो जावे रे ॥३॥

रूप निरखी रो निरत देखतां, बुद्धि नाच रचावे रे।
आप अकेलो बैठो रहवे, सब ने नाच नचावे रे ॥४॥
बिना रूप रंग साज बजावे, बिन स्वर सुन्दर गावे रे।
पाँच पचीस माय कथक के, एक दूर नहीं जावे रे ॥५॥
क्या मजाल जो कोई पलटे, डोरी हाथ रहावे रे।
जो स्वर भंग कोई कर दे तो, पकड़ ठिकाने लावे रे ॥६॥
कई तो स्वांग धार लिया कथक, कई धारणो जावे रे।
कैसा स्वांग फेर ओ धरमी, जिण रो अन्त न आवे रे ॥७॥
जो कथक ने खोजण जावे, पाछो जबाब न लावे रे।
कथक रूप होय ने नाचे कथक में मिल जावे रे ॥८॥
देवनाथ गुरु कथक पूरे, कथनी कथन सिखावे रे।
मानसिंह कथक में मिलणो, फेर फेर कुण आवे रे ॥९॥

राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

इण नट डोर पकड़ सब जग री, अपणे हाथ नचायो रे ॥टेर॥
जगत पूतली रूप सभी है, आप ही खेल खेलायो रे।
सब की आंख मीच दीवी नटवे, देखो भरम फैलायो रे ॥१॥
अचरज एक देख्यो इण नट रो, सो किम जाय बतायो रे।
जेती पूतली तेती में सब, एक ही नटवो गायो रे ॥२॥
बिन नटणी नटवो नहीं रहवे, कैसो जाल बिछायो रे।
इणी जाल से जो नट निकले, नटवे रूप कहायो रे ॥३॥
काशी मथुरा गया द्वारका, जंगल पहाड़ फिरायो रे।
फिर फिर करके पूछत रेहयो, नट नो किणी ना बतायो रे ॥४॥
जहाँ जहाँ गयो डाल बाड़े में, मारयो और धमकायो रे।
लूट लियो धन पास न रेयो, फिर आगो सरकायो रे ॥५॥
मारयो कुटयो रोवण लागो, कोई दया नहीं लायो रे।
इतने नाथ हाथ आय पकड़यो, दिल रो दरद पूछायो रे ॥६॥
किण कारण शिष्य फिरे भटकतो, किण कारण दुख पायो रे।

मन री बात खोलदी सारी, हृदय जभी भर आयो रे ॥७॥
कौण आधार जगत ओ नाचे, संशय मोय रहायो रे।
जगत नचावे देखूं उण ने, यह मेरे मन भायो रे ॥८॥
रे रे मान भूलकर रह गयो, क्यों यह वक्त गमायो रे।
तू ही नट जग तू ही नचावे, किण ने खोजण धायो रे ॥९॥
ज्ञान भान ऊगो उर अन्दर, पड़दो दूर हटायो रे।
आप आप लख आप हँस्यो मैं, आछो ठगन ठगायो रे ॥१०॥

राग टोडी। ताल दीपचन्दी ॥

हेला दे समझाऊं, कछु मैं गुप्त न राखूं। हेला दे समझाऊं ॥टेर॥
काम नहीं पड़दे को यहाँ पर, सहज स्वरूप दिखाऊं। जो देखे सोई मित्र हमारे, ब्रह्म में जीव मिलाऊं। कछु मैं गुप्त० ॥१॥ भेदाभेद छेदकर आवे ज्यांने, ज्ञान अमीरस पाऊं। पी कर प्याला मस्त रहे नित, मन के भरम भगाऊं। कछु मैं गुप्त० ॥२॥ अन्ध विश्वास मोय नहीं भावे, चौड़े ढोल बजाऊं। आप पराई कछु नहीं देखूं, तुरन्त ही धूल उड़ाऊं। कछु मैं गुप्त०॥३॥ देवनाथ कबीर मिले गुरु, ज्यों पाई दरसाऊं। मान अज्ञान निकट क्यों आवे, जब ज्ञान को भान उगाऊं। कछु मैं गुप्त० ॥४॥

राग टोडी। ताल दीपचन्दी ॥

ठगन को कैसे जाय ठगायो।
बहुत दिनाँ तक जाण्यो नांही, तब तक माल लुटायो ॥टेर॥
भंग अफीम चरस में भर भर, बहुत दिनां तक पायो। बहुत दिनां तक डर्यो इनके डर, हाथ नहीं कुछ आयो ॥१॥ ग्रह राशिन में बहुत दिनाँ तक, इन मोही अलुझायो। अबके खबर पड़ी जब मुझको, सगरो विघ्न मिटायो ॥२॥ देवनाथ गुरु हाथ पकड़ के, पूरो साथ निभायो। मानसिंह सब ठग पाखंड को, दे ठोकर ठुकरायो ॥३॥

राग टोडी। ताल दीपचन्दी ॥

अब हम मस्त भये क्या बोलें ॥टेर॥
अपने आप की है ये मस्ती, शिर साटे की मोलें। मगन होयकर बैठ गये

हम, अब इन उत नहीं डोलें ॥१॥ जा बैठे उस हाट के ऊपर, पी लिया मद अनतोले। पीते पीते हो गये मद छक, झूलत प्रेम हिंडोले ॥२॥ मगन भये झांकी एक देखी, परवत राई ओले। झांकी देखत मिल गये उसमें, कौन ढके कौन खोले ॥३॥ इस मस्ती में दावा न किसी का, होवे सो ही होले। मानसिंह कहे वह नहीं माने, जो अमृत में विष घोले ॥४॥

राग टोडी। ताल दीपचन्दी ॥

रहे हम उस रंग मे मतवारे ॥टेर॥
मेरे रंग की मैं ही जानू, क्या जाने भोले बेचारे। सब को रग में रंग देते है, फिर रहते हैं न्यारे ॥१॥ एक ही रंग ढंग एक मेरा, जो कोई इसे निहारे। देखत देखत रग में मिले है, फेर सुरत नही टारे ॥२॥ मेरो रग देऊं नहीं जीवत, पहले उसको मारे। मर रंगू रग फिर करू जिन्दा, काल से भी नहीं हारे ॥३॥ मरके जीवे वह आशिक सच्चा, देखे नैन निजारे। मानसिंह कहे सुनो भाई साधो जो चाहो रंगत हमारे ॥४॥

राग मालकोश। ताल तिताला ॥

ऐसा अ र अमरकेश हम पाया ॥टेर॥
यह मेरा कोश कभी नहीं खूटे, चाहे जितना बन्टाया।
ज्यों बांटे ज्यों बढ़ता ही जावे, तस्कर हाथ न आया ॥१॥
अमरकोश के ताले अजब है, जिन खोला खुलवाया।
पर से पडयो हाथ नहीं आवे, यों ही कगाल रहाया ॥२॥
जिनको चाह उन्हीं को मिलता, सतगुरु खोल दिखाया।
जनम जनम भिक्षुक बन राजी, उनको नाँय धताया ॥३॥
हमतो जन्म जन्म से मांगते, बहुत हैरान हो आया।
जब मागन ते दुखी हुवे हम, सतगुरु अरज सुणाया ॥४॥
अमरकोश माल का मिल गया, मालकोश तब गाया।
याही कोश को अकेला न राखूं, सब को बांट कर खाया ॥५॥
देवहू नाथ साथ कर मेरो, ऐसा विराज बताया।
मान चौगुणो लाभ कियो है, सुपने कसर न आया ॥६॥

राग मालकोश । ताल तीताला ॥

जो पीते उन्हें पिलाते है। नहीं मुफत में है मद मेरा, नहीं खुशामद चाहते हैं ॥टेर॥

कीमत बहुत कछू नहीं कीमत, कहो तो तुम्हें समझाते हैं। सिरफ एक शिर लेऊं उतारके, अपना उसे बनाते हैं ॥१॥ है दुकान चौड़े बजार में, नहीं किसको बतलाते हैं। जो हैं शौकीन आप ही आते, देके शिर ले जाते हैं ॥२॥ अपनी धुन हम गाते रहते, नहीं डर चुप हो जाते हैं। पीने वाले पीयें प्रेम से, गाफिल गोते खाते हैं ॥३॥ कहे मानसिंह मस्त हो कोई, मेरे यहाँ चल आते हैं। फिर नहीं चाहते पीछा जाना, पी यहीं पर सो जाते हैं ॥४॥

राग सारंग । ताल रूपक ॥

आज री आनन्द सजनी कैसे कहूं बताय रे। गुरु न चेला हूं अकेला, निर्भय रहूं मन मांय रे ॥टेर॥

कौन किसकी करूं गुलामी, कोई दाय न आय रे। एक अन्तरयामी हूं मैं, घट घट रयो समाय रे ॥१॥ नहीं कर्म और नहीं करणी, नहीं पंथ चलाय रे। कौन की है माला जपणी, हँसी रूप दिखाय रे ॥२॥ चार वाणी चार खाणी वहां पहुँचे नांय रे। इन सभी को किया मैंने, मुझको कौन बनाय रे ॥३॥ चार वेद और शास्त्र षट सब, मोही ते उपजाय रे। ब्रह्मा विष्णु मोते उपजे, मेरे बीच समाय रे ॥४॥ नित्य हूं आनन्द हूं सत् चित्त सबके मांय रे। नेति नेति निगम थाके कहे सके नहीं ताय रे ॥५॥ हूं स्वतन्तर नहीं परतन्तर अपने रूप के मांय रे। निजानन्द की अजब मस्ती, अन्तर लागे नांय रे ॥६॥ हमी देवा हमी नाथ हमी जात अजाय रे। मान मान अमान हम हैं, हमी हमको ध्याय रे।

राग सारंग । ताल रूपक ॥

छीलरियों में कूण न्हावे, पड्यो समदां सीर रे। भूलने कुण जहर पीवे, मिली सुन्दर खीर रे ॥ टेर ॥

ज्ञान गम रो ओढ्यो दुशालो, अब कौण ओढे चीर रे।
घर में धन और कौण मांगे, कौण बणे फकीर रे॥ १॥
पथर पाथर कौण पूजे, स्वतः हैं हम पीर रे।
आप अपना करे सब कुछ, क्या करे तकदीर रे॥ २॥
जगत तो मति हीन हो गई, भूले दुख रे तीर रे।
ज्ञान दियो गुरुदेव जी, जद टूट गई जंजीर रे॥ ३॥
तोड़िया तकदीर म्हेतो, भया ज्ञान गम्भीर रे।
ज्ञान रो दरियाव उलट्यो, समता शुद्ध समीर रे॥ ४॥
हम गोपाल और गाय हम हैं, कौन बने अहीर रे।
अपनो पय हम आप पीयो, पीयत भया बेपीर रे॥ ५॥
नाथजी रो साथ कीनो, मेटी झूठी लकीर रे।
मान लकीर ने सांप मान्यो, जिते न लगी तदबीर रे॥ ६॥

राग सारंग। ताल रूपक॥

भारी जीवों ने बांधिया यां खूब मचाई रोल रे।
एक एको गली लांबी, निकलन रो नहीं डौल रे॥ टेर॥
चोर मिलिया चोर सेती, मची भ्रमर भोल रे।
जीव बपुरा जाणे नांही, गूढ अन्तर पोल रे॥ १॥
कोई कहे कर धरन मिलसी, कोई पूजा जोर रे।
कोई कहे नित मन्त्र जपणो, मिले नवलकिशोर रे॥ २॥
कोई कहे परणाय तुलसी, मिलें हरिपुर ठौर रे।
छोरो ने यूं चोर लूंटे, खूब जमावे जोर रे॥ ३॥
वृक्ष बनड़ी ने पत्थर बनड़ो, मिली कैसी जोड़ रे।
ब्याह क्या यह धनको लूटण, लाग्या रहे चकोर रे॥ ४॥
नाथ आया सूता जगाया, दिया बचन अमोल रे।
दिव्य दृष्टि कर खोलल्यो उर, लियो कांटे तोल रे॥ ५॥
तत्त्व की तुलसी म्हारे, असि ठाकुर सोय रे।
तत्त्वं मिल असि होया, टूटा बन्ध कठोर रे॥ ६॥

पीव प्यारी एक होया, बन्ध्या गाढा कोल रे।
मान मिल गयो पीव में, जद बज्यो जंगी ढोल रे॥ ७॥

राग सारंग। ताल रूपक॥

अमर प्याला पियो अवधू, फेर मरणो नांय रें। शीश अलगो मेल पीवे, ज्याने हजम हो जाय रे॥ टेर॥

रात दिन मिल पीव रेवे, बैठो सुरत लगाय रे।
उठत बैठत हालत बोलत, पलक नहीं अटकाय रे॥ १॥
अमर प्याला पी लिया वे, कहो क्यों मर जाय रे।
मरने जीवे जिके पीवे, रया ब्रह्म समाय रे॥ २॥
काल रा वण काल बैठा, काल किण विध खाय रे।
जीव थो सो ब्रह्म मिल गयो, किणने जम लेजाय रे॥ ३॥
पीया जिके तो अमर है, इण देखो जगरे मांय रें।
नहीं पिया जिके झूठा स्वांगी, फिरे स्वान डराय रे॥ ४॥
पीया जिके तो मस्त हो गया, बैठा मौज उड़ाय रे।
इन्द्र जैड़ी सायबी वे, ठोकर सूं ठुकराय रे॥ ५॥
नाथजी मस्तान मिलिया, बरजत दियो म्हांने पायरे।
पीवतां तो दोरो लाग्यो, अब अजब आनन्द आयरे॥ ६॥
बीज रो निज बीज जोयो, जगत सब इण मांयरे।
महा माया रहे इण में, इण बिना कोई नांय रे॥ ७॥
ऐसा प्याला पिया अनुभव, रह्या शुद्ध समाय रे।
चारूँ दिश सूं सिमट बैठा, जंमरी बही जलाय रे॥ ८॥
माम मारग मिल्यो सीधो, कौन ऊजड़ जाय रे।
महान रूप समा रह्यो, अब चेतन एक दिखाय रे॥ ९॥

राग सारंग। ताल रूपक॥

जगत मंगता फिरे मांगत, सोय भावे नांय रे।
हर किसी से मांगणों, म्हारे नहीं आवे दाय रे॥ टेर॥

गुरू मगता चेला मंगता, मंगता भूप कहाय रे।
मंगतां आगे मांगे मंगता, हँसी इण री आय रे॥ १॥
काजी मगता पंडित मंगता, मंगता पीर रहाय रे।
ब्रह्मा मंगता विष्णु मंगता, मंगता शंभु कहाय रे॥ २॥
देव मंगता मंगता पुजारी, मागत नहीं शरमाय रे।
[रो मघ मेलो मंडियो, लूंटा खोस मचाय रे॥ ३॥
मांगियें तो कुछ ना देवे, भूठा मांगो जाय रे।
आपरे खुद पास नहीं है, क्या देवे थांने लाय रे॥ ४॥
मैं भी मगता नाथका, पण मांग्यो दियो मिलाय रे।
मिलगयो जब मिट्यो मांगण, अब निर्भय मौज उड़ायरे॥ ५॥
बिना म ग्या देऊँ सबको, चाहे सो लेजाय रे।
मांगण री ज्यांरे पड़ी आदत, कैसे देऊँ छुड़ाय रे॥ ६॥
दातारां ने जाणे नांही, पास मगतां रे जाय रे।
मानसिंह निर्भय भयो, म्हारे खच्यों खूटे नांय रे॥ ७॥

तर्ज डके की। ताल कैरवा॥

आलीजा थांने, ढूंढ लियो जग सारो रे॥ टेर॥
कोई कहे वेदों पुराण में, कोई कहे ओ है कुराण में। कहे सब न्यारो ही न्यारो रे। आलीजा थांने०॥ १॥
प्यारी म्हांने, क्यों नें ओलखियो न्यारो ए॥ टेर॥
घट घट में मैं परगट बोलू, रात दिवस मैं सब मे डोलू। आलस उड्यो नहिं थारो ए। प्यारी म्हांने०॥ २॥ अनन्त जन्म की नींद में सूती, जगह जगह गई जहां कूटी। कोई न मिल्यो बतावण हारो रे। आलीजा थांने०॥ ३॥ न्यारो हुवे तो कोई बतावे, घर में हुवे तो कौन दिखावे। क्यों न लख्यो उणियारो ए। प्यारी म्हांने०॥ ४॥ कोई चौथे असमान बतायो, कोई वैकुण्ठ पाताल सुनायो। कोई कहे पथरों में प्रीतम न्यारो रे। आलीजा थांने०॥ ५॥ लोक कहे तैं जाणी भूठी, जिण सूं थाने मारी

कूटी। उगरो आनन्द लाग्यो प्यारो ए। प्यारी म्हांने ॥ ६ ॥ गुरु मिल्या सो मिल्या स्वार्थी, कोई न म्हांने मिल्यो परमार्थी। जिण सूं रैयो अंधियारो रे। आलीजा थांने० ॥ ७ ॥ झूठों री तैं पल बहु करली, वैर वैर जनमी और मरली। अब क्या मतो है तुम्हारो ए। प्यारी म्हांने० ॥८॥ देवनाथ है प्रीतम मेरा, प्रण करके निश्चय कर हेरा। सगलोई जग लागे खारो रे। आलीजा थांने० ॥ ९ ॥ नहिं खारो और ना कोई फीको, नहिं खारो और ना कोई नीको। सब जग रूप तिहारो ए। प्यारी म्हांने० ॥ १० ॥ मान अज्ञान रैयो नहिं कोई, पक्की निश्चय गुरु मुख होई। अनन्त भास उजियारो रे। आलीजा थांने० ॥ ११ ॥

तर्ज डंके की। ताल कैरवा ॥

क्या पूछे सहेली, इसड़ो आनन्द उण घर को ए ॥ टेर ॥

उण घर री तो वात्यां म्हारी; कहियन आवे ऐसी प्यारी; धारयां सूं मिट जावे अमरो धड़को ए ॥ १ ॥ पीव सयाना मिल्यो गुण खाना, आनन्द हो गयो प्रगट पिछाना; धोखो मिट्यो है पर सर को ए ॥ २ ॥ गुणतीत है ऐसो स्वामी, सब घट व्यापक अन्तर्यामी; मन और वाणी सूं परको ए ॥ ३ ॥ ऐसी सुन्दर सैज बिछाई, नारी पुरुष जहां दीखे नांई; मिट गयो देह अभिमान को चरको ए ॥ ४ ॥ मान स्वरूप भयो है अनूप, छाया न धूप है निज रूप; संग किये अजर अमर को ए ॥ ५ ॥

तर्ज डंके की। ताल कैरवा ॥

ओ ब्रह्म मद प्यालो, शीश दियो जिन पीयो रे ॥ टेर ॥

होय मस्ताना, सहज दिवाना, पायो ज्ञाना; सहज अमी रस लीयो रे ॥ १ ॥ चारूँ वाणी, चारूँ खाणी, त्याग दिवी सब जग की निशाणी; बिना प्राण बिन जीयो रे ॥ २ ॥ हो बेखटके, कहीं न अटके, भूल भरमरी मटकी पटके; अजर अमर पद लीयो रे ॥ ३ ॥ मान सुजाना, ताही को माना, जिनके अन्तर आतम ज्ञाना; घट घट दरसन दीयो रे ॥ ४ ॥

बधावो राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

आनन्द मिल्यो सो क्यों कर कहूँ हेजी होजी। मुख से कह्यो नहीं जाय। आनन्द मिल्यो० ॥ टेर ॥

कहद् तो कोई माने नहीं हेजी होजी; बात समझ मे नहीं आय।
भेद विहूणा है सभी हेजी होजी, ज्यांरे मन इचरज थाय ॥ १ ॥
बहुत अटपटी बात है हेजी होजी, बिन पग पन्थ चलाय।
जाणे जिके तो चल सके हेजी होजी, औरों सूं चल्यो नहीं जाय ॥ २ ॥
जगरी खटपट मिमटे नहीं हेजी होजी; अधबिच गोता खाय।
खटपट मेट झटपट लखे हेजी होजी; जिके नर निज पद पाय ॥ ३ ॥
आ खटपट कोई अलगी नहीं हेजी होजी, खटपट है मन मांय।
मनडे री खटपट छोड़ दो हेजी होजी; सर्व सुखी हो जाय ॥ ४ ॥
म्हांने मिल्या सतगुरु नाथजी हेजी होजी; उलझन दिवी सुलझाय।
मान निशंकिन सो रह्यो हेजी होजी; अब नहीं कोई रे जगाय ॥ ५ ॥

राग कानड़ा । ताल दीपचन्दी ॥

मुझ में जगत हुवा नहीं होई। होत मिटत मिथ्या है दोई ॥ टेर ॥ गंधरव नगर मिथ्या ही भासे. ऐसे ही जग है नाना तमासे। मरुधर नदी मे नीर कहां जोई, वहां तो नीर मिले नहीं कोई ॥ १ ॥ तिमिर दोष ते अवर दिखावे, है तो कुछ और कुछ और बतावे। जैसे जल मे सूर्य अनेका, जल सूके सूरज भयो एका ॥ २ ॥ बालक छाया में भूत बतावे, समझ पड़ी जब झूठ दिखावे। रज्जू मे सरप सीप में चान्दी, तैसे ही मन की भावना मानी ॥ ३ ॥ पाप और पुन कौन को लागे, जो सोवे सो नींद से जागे। मैं चेतन नित रहत सदाई, जाग्रत मे नित जाग्रत पाई ॥ ४ ॥ ना कोई फुरना ना कोई फुरिया, आप अलख शब्द नहीं जुड़िया। मानसिंह लखी गम गुंजा। परम पवित्र प्रकाश के पुंजा ॥ ५ ॥

राग कानड़ा । ताल दीपचन्दी ॥

मैं हूं परम आस्तिक प्यारा। परम नास्तिक मजहबी सारा ॥ टेर ॥

कोई चौथे आसमान बतावे, कोई बैकुंठ समुद्र धुमावे। कोई मूरत में ईश्वर समझावे, अपनी मति बके न्यारा न्यारा ॥ १ ॥ कोई कहे ईश्वर वेद की वाणी, कोई कहे ईश्वर जोत निसाणी। न्यारी न्यारी करें खैंचा ताणी, असल बात से किया है किनारा ॥ २ ॥ कोई कहे ईश्वर आवाहन से आवे, कोई माला और मंत्र जपावे। कोई ईश्वर को दानी बतावे, यों कर प्रपंच फैलावे अपारा ॥ ३ ॥ मेरा ईश्वर ऐसा है भाई, मैं खुद ईश्वर और न पाई। आल जाल मेरे कुछ नांहि, कौन मरे कौन धरे अवतारा ॥४॥ परम नास्तिक जग कियो नाशा, गुडियां खेल ज्यों करत तमाशा। मेरा सब में प्रगट प्रकाशा, आंख मीचे जद घोर अन्धारा ॥ ५ ॥ देवनाथ गुरु अंखियां खोली, माननें वस्तु अमोलक जोली। अखिल ब्रह्मान्ड कांटे धर तोली, मेरा रूप है अगम अपारा ॥ ६ ॥

राग कानड़ा। ताल दीपचन्दी ॥

मेरा मजहब मजहबों से न्यारा। मेरे मजहब में मजहब सारा ॥ टेर ॥ सारे मजहबों में गोता खावे, हाय हाय करके थक जावे। दुख पावे रोवे चिल्लावे, मेरे मजहब में आनन्द अपारा ॥ १ ॥ अल्लाह अल्लाह कहे यवन चिल्लावे, मक्के जाय मदीने धावे। दोजख बहिश्त जिन्नत फिर आवे, तो भी दुख को न वार न पारा ॥ २ ॥ हिन्दू कर कर पत्थर पूजा, आपसे इतर देव कहे दूजा। अन्तर ओलख कभी नहीं सूझा, जाते फिरे जगमें फकमारा ॥ ३ ॥ केते पितर और प्रेत पुजावे, केते सूरज को छांटा लगावे। केते गंग पावन होने जावे, तदपि न मिटी है चौरासी की धारा ॥ ४ ॥ केते वेद ईश्वर कृत गावे, कई ईश्वर निराकार बतावे। रूप वरण बिन कई ध्यान ध्यावे, यों कर अलूझ गया जग सारा ॥ ५ ॥ सब कुछ कर जब मुझमें आवे, मुझ में आय कहीं नहीं जावे। सब मजहबों को आग लगावे, जल बल कर हो जाय सब छारा ॥ ६ ॥ नहीं मैं हिन्दु मुसलमां हूं नांहि। नहीं मैं जैन न बुध्य ईसाई। ये तो भरत प्रपंच के मांहि, मैं हूं इन सब का सरदारा ॥ ७ ॥ ये हैं अपवित्र मैं पवित्र सदाई, ये शुद्ध हों जब मुझ में

आई । सुरनर सब का गुरु हूं मैं भाई, मुझसे इतर कहां जावन हारा ।।८।। मान कहे मैं मानूं नांई, सब जग रही है मोय मनाई । हैं ये अभेद भेद न पाई , आंख छते फिर भी अन्धियारा ।। ६ ।।

राग कानड़ा । ताल दीपचन्दी ।।

सबमें महस्थ मेरो है भारी । अनन्त कुटम्ब उधांरो नहीं कोई पारी ।।टेर।। एक महस्थ होय छोड़ के जाऊ, अनन्त महस्थ को कहां छिटकाऊं । जहाँ जाऊ वहां रहय न लारी ।। १ ।।अनन्त पुत्र मेरे अनन्त ही भाई, बाप अनन्त मेरे अनन्त हो माई । और अनन्तो है मेरे नारी ।। २ ।। अनन्त कुटा और अनन्त ही भवना, अनन्त ही वन उपवन कियो गमना । अनन्त मन्दिर और मठ लिये धारी ।। ३ ।। मैं ही धनी और मैं ही राजा, मेरे दश् दिश बाजे बाजा । सब मे नीच कंगाल हूँ भारी ।। ४ ।। हस्ती चींटी एक समाना, स्वान और गाय एक कर जाना । ब्राह्मण चान्डाल को एक विचारी ।। ५ ।। चाहे चान्डाल को गोद बैठाऊं, चाहे विप्र को शीश उडाऊ । मार विप्र नहीं ब्रह्महत्यारी ।। ६ ।। जन्म आधार पर विप्र न मानूं, ब्रह्म कर्म से विप्र पिछानूं । कर्म प्रधान वरण लख चारी ।। ७ ।। मेरी गम लखे मुझसा होई, पाप ने पुन लगे नहीं कोई । सुपने न होवे दुख से दुखारी ।। ८ ।। मानसिंह ऐसे महस्थ संयोगी, आदू अजर अमर है योगी । क्या जाने यह जगत विचारी ।। ६ ।।

राग कानडा । ताल दीपचन्दी ।।

अट पट है सन्तो बात हमारी । तीन लोक से है यह न्यारी ।। टेर ।। मेरी बात लखे कोई सूरा ,लोक वेद से रहवे दूरा । सब कुछ भोग रहवे ब्रह्मचारी ।। १ ।। सब कुछ करत रहत सन्यासी, मुक्ति जिनके चरण की दासी । जीवत मरन की करी जिन तैयारी ।। २ ।। नारी पुरुष यह भेद न जाने, इनसे परे जब होय पहिचाने । गुरु मुख होकर रूप निहारी ।। ३ ।। बिन पग पंथ चढे सो ज्ञानी, केवल रूप की यह है निशानी । नहीं पहुंचे वहां वाणी चारी ।। ४ ।। मान आन अब कैसे माने, अपने रूप का हाल लखाने । क्या करही अब माया विचारी ।। ५ ।।

तर्ज एली की। ताल कैरवा ॥

किणने कहूं समझाय, बोली तो म्हारी अटपटी रे बाला ॥ टेर ॥
मैं हूं गूंगा बोल न जाणूं, बोलूं तो समझे नांय, बाला मैं हूं गूंगा०।
जगत बिचारी आंख बिना रे, इणने तो नहीं दरसाय। बोली तो म्हारी०
॥ १ ॥ जहां मैं पहुंचूं जग नहीं पहुंचे, पहुंचे बिन किम पाय, बाला जहां
मैं०। पावे नहीं तो कैसे बतावे, फिर फिर गोता खाय। बोली तो म्हारी०
॥ २ ॥ मेरो स्वर है जग से न्यारो, मेलो मिले न कोय, बाला मेरो स्वर०।
जिण सूं जगत मोहे बुरो बतावे, है जैसा हम होय। बोली तो म्हारी०
॥ ३ ॥ मेरी बोली वोही समझे, जाणे बोली बोल, बाला मेरी बोली०।
तीन लोक ने कांटे ऊपर, धर धर लीनो तोल। बोली तो म्हारी० ॥ ४ ॥
तीन लोक ने वो ही तोले, जल सूं ही शीतल होय, बाला तीन लोक०।
जल भी इणरी शोभा करे रे, पार न पावे कोय। बोली तो म्हारी० ॥ ५ ॥
निर्मल रहे शुद्ध निशिवासर, जरा कलेश न थाय, बाला निर्मल०। मल
विक्षेप आवरण सूं वे, हरदम दूर रहाय। बोली तो म्हारी० ॥ ६ ॥ मुझसा
होय जोय निज आतम, तभी खबर पड़ जाय, बाला मुझ सा०। मानसिंह
कहे अनुभव मेरा, नहीं आवे नहीं जाय। बोली तो म्हारी० ॥ ७ ॥

रेखता। ताल कवाली ॥

यहाँ तो रोकड़ी सौदा, इधर देना इधर लेना ॥ टेर ॥
सिखाया कृष्ण ने हमको, तुरंत ही हाथ से देना। उधारी किस लिए रखना,
इधर देना इधर लेना ॥ १ ॥ मरे के बाद जो लेवें, मिले या ना मिलेगा
तो। जमा हम हाथ से करके, इधर देना इधर लेना ॥ २ ॥ हैं कहते बाद
मरने के, अमर हैं हम मरे ना कब। आश क्यों आगली करना, इधर देना
इधर लेना ॥ ३ ॥ ठगों के देश में आकर, भरोसा क्यों करें हम भर।
जमा डूबे भरोसे में, इधर देना इधर लेना ॥ ४ ॥ दिया गुरु देवने हमको,
अमोलख वाक्य निज पद का। धरें हम शीश चरणों में, इधर देना इधर
लेना ॥ ५ ॥ वरण आश्रम बड़ा अभिमान, काटा शीश वो हमने। किया

गुरु देव के अर्पण, इधर देना इधर लेना ॥ ६ ॥ मिले जब नाथजी ऐसे, किया स्वीकार मेरा सिर। मफाया मान दम भर में, इधर देना इधर लेना ॥ ७ ॥

राग सोरठ, तर्ज वाणी की। ताल रूपक॥

अवधू देवो भूल मिटाय। अवधू देवो भूल मिटाय, जद निज आतम दरशण पाय, अपने आप बीच समाय। अवधू देवो० ॥ टेर ॥
जगत जोग मोय एक दीखे जी; ए तो दोय निजर न आय। किणने त्यागूं किणने पकडूं, मोरी ममझ में नांय। अवधू देवो० ॥ १ ॥ जद जग त्यागू कोई दूजो दीखे जी; ओ तो मैं ही खेल खेलाय। खेल मेरो दोष किणने, क्यों मैं भागू जाय। अवधू देवो० ॥ २ ॥ मैं ही जोगी मैं ही भोगीजी, मै हूं सब रस मांय। नरक स्वर्ग भी मैं ही कहिये, किण ने दुख सुख थाय। अवधू देवो० ॥ ३ ॥ हमी काम और रति हम हैं जी; अब किण सू डरें डराय। करें खुशी से भोगें खुशी से; हम पर दूजो नांय। अवधू देवो० ॥ ४ ॥ हम ही ज्ञानी हम अज्ञानी जी, अखिल जग मुझ मांय। चाहे जैसा खेल करतूं, चाहे रुदन हँसाय। अवधू देवो० ॥ ५ ॥ ऐसो योग कोई करे योगी जी; वो असली संत कहाय। एक करके दोय मेटे, देवे भरम उड़ाय। अवधू देवो० ॥ ६ ॥ नाथ जी रो साथ कीयो जी; म्हांने दीवी सुगति बताय। मानसिंह मन बीच समझयो, नहीं आवे नहीं जाय। अवधू देवो० ॥ ७ ॥

राग सोरठ, तर्ज वाणी की। ताल रूपक॥

अवधू बाहर रंग मत लाय। अवधू बाहर रंग मत लाय, जिण सूं काल डरसी नांय। अवधू बाहर रंग मत लाय ॥ टेर ॥
मांयलो मन रंगो जोगी जी, रंग्यौं उतरे नांय। आठ पहरी यूं ही रहसी, देख जम डर जाय। अवधू बाहर रंग० ॥ १ ॥ अन्दर दागा मेट अवधू जी, जनम मरण मिटाय। फेर जनमण फेर मरणो, नित रो कुण दुख पाय। अवधू बाहर रंग० ॥ २ ॥ बिरह धूणी करो अन्दर जी, जिणमे तृष्णा इन्धण जलाय। एसी तपस्या ताप अवधू, जोग सिद्ध हो जाय। अवधू बाहर

रंग० ॥ ३ ॥ शिखर घर में अमृत बरसे जी, बिन मुख होकर पाय। तीन चौकी त्याग के सू, चौथे वास बसाय। अवधू बाहर रंग० ॥ ४ ॥ ज्ञान भान जद ऊगसी जी, तिमिर तम उड़जाय। तिमिर उड़ उजियाला होया, सन्मुख रूप दिखाय। अवधू बाहर रंग० ॥ ५ ॥ कुण नित धोवे रंगे कुण नित जी, ओ तो कचो रंग लगाय। मान कहे रंग लगो पक्को, मगन रहूं मन मांय। अवधू बाहर रंग० ॥ ६ ॥

राग सोरठ। ताल दीपचन्दी ॥

फकीरा मन मगरूरी छोड़। मन मगरूरी मिटी न मनसूं, भेष धर रयो होड ॥ टेर ॥

हां, ऊपर भेष रंगाया भगवां, कर रयो होडा होड। कर्मां रा केश मुंडाया न मन सूं, क्यों थे मुंडायो है मोड ॥ १ ॥ हां, जैसे पूंठ दिवी थें जगने, मनने पाछो मोड़। समझ विचार सार लख अन्तर, दिलरी दुविधा ने छोड़ ॥ २ ॥ हां, ब्रह्म विचार धार उर अन्दर, मान्डो भरम रो फोड़। चेतन होय दोय ने खो दे, वस करले चित चोर ॥ ३ ॥ हां, देवनाथ गुरु साथ कियो जद, मिल गई साची ओट। मानसिंह घर बैठां फकीरी, पटकी कर्मां री पोट ॥ ४ ॥

तर्ज पणिहारी की। ताल कैरवा ॥

भक्ति रस कोई विरला पीवे; बिन जाएयां जग प्यासा रे ॥ टेर ॥
कोई मूरत में कोई तस्वीर में, ये सब करत तमासा रे। मेरो साहब सब घट दीखे, रहत सबी के पासा रे ॥ १ ॥ जैसे मृग के नाभ कस्तूरी, सूंघत बन मांय घासा रे। कोई चौथे असमान बतावे, सुन सुन आवे हांसा रे ॥ २ ॥ कोई भैरव हनुमान मनावे, कोई देवी के दासा रे। खोजत फिरे हाथ नहीं आवे, फिर फिर होत उदासा रे ॥ ३ ॥ सबमें ठाकुर सब ठाकुर में, ऐसो है आनन्द विलासा रे। मानसिंह वे खुशी है सदाई, भया ब्रह्म परकासा रे ॥ ४ ॥

तर्ज पणिहारी की। ताल कैरवा ॥

भक्तों सम मंगता नहीं कोई, कर निश्चय मन मांही रे ॥ टेर ॥
मांगत मांगत नीन्द आय गई, मांगे सुपने मांई रे। आंख खुली फिर मांगण लागे, देखो क्या मंगताई रे ॥ ॥ पग पग पर ये मांग रहे है, कैसी है नकटाई रे। देवणहार या सूँभी नकटो कुछ भी देवे नांई रे ॥ २ ॥ बेटा मांगे पोता मांगे, लक्ष्मी आश न जाई रे। देवण हार या रो केणो मान ले. तो घर री नार गुसाई रे ॥ ३ ॥ स्वर्ग मांग वैकुंठ मांगलियो, तो ही आश गई नांई रे। मांगत मांगत खुद ने मांग लियो, लक्ष्मी रोवे घर मांई रे ॥ ४ ॥ आ मंगतों री भक्ति संतो, म्हारे मन नहीं भाई रे। मांग्यो ऊमर भर मिल्यो कछु नाई, ज्यों आया ज्योंई जाई रे ॥ ५ ॥ देवनाथ गुरु से नहीं मांग्यो, भेंट दिवी मंगताई रे। अखिल विश्व को शाहनशाह मैं, ऐसी मौज उड़ाई रे ॥ ६ ॥ नाथ के साथ नाथ होय बैठा, अब न अनाथ रहाई रे। मानसिंह निज शुद्ध भक्ति लख, इनको धूड़ बगाई रे ॥ ७ ॥

तर्ज पणिहारी की। ताल कैरवा ॥

कर्मयोग करले सोई योगी, सो साचा सन्यासी रे ॥ टेर ॥
निश्चय धार करम करे सब कुछ, तोड़ी अविद्यारी फांसी रे। कर र्‌यो करम अकर्मी रहवे, नहीं भुगते चौरासी रे ॥ १ ॥ नीति छोड़ अनीति वरते, चाहे ज्यूं कर दिखलासी रे। कारण समझ काज कर लेवे, ज्यांरी न होवे हांसी रे ॥ २ ॥ भोगे नारी रहे ब्रह्मचारी, नहीं कुछ भोग विलासी रे। समय प्रमाण अशुभ शुभ जाणे, वह नहीं होय उदासी रे ॥ ३ ॥ सबमें मिल्यो सरब सूं न्यारो, निजानन्द को वासी रे। नाश रूप जग खेल समझले, आप सदा अविनाशी रे ॥ ४ ॥ घर में रहे मोह नहीं घर सू, ताही जाण बनवासी रे। जगहित करम करत है खुशी से, आप पूरण प्र-काशी रे ॥ ५ ॥ देवनाथ को साथ कियों सू कर्मयोगता आसी रे। मान-सिंह लख एक अनेको, स्वतः ही आप विलासी रे ॥ ६ ॥

तर्ज लावणी की । ताल कैरवा ॥

रस रसिक होय पीते हैं । यह कायर के क्या काम का ॥ टेर ॥
रस पीते हैं रसिया नामी; सबमें पायो अन्तर्यामी; नहीं किसी की करत गुलामी । नहीं बन्धन खुदा और राम का; वे मर करके जीते हैं ॥ १ ॥ कोई नास्तिक कहे उसको क्या; कोई आस्तिक कहदे परवाह क्या; धर्म अधर्म की उसे चाह क्या । वह वासी है निज धाम का; अपना सुमरन लेते हैं ॥ २ ॥ वेद शास्त्र को वह क्या जाने; और पुराणों को वह क्यों माने; वेद शास्त्र तो उसे बखाने । वह स्वामी विश्व तमाम का; नहीं दुख सुख को सीते हैं ॥ ३ ॥ शोभा निन्दा कुछ भी करलो; उसका कुछ भी तुम नहीं हरलो; अपने भाव की गठड़ी भरलो । परवाह न नाम बदनाम का; वे नहीं भरे रीते हैं ॥ ४ ॥ मान कहे ऐसे हैं ज्ञानी; चारों खान की हैं वे खानी; उनमें कुछ आनी नहीं जानी । खाक है वस्तु तमाम का; वे नहीं ढोले पीते हैं ॥ ५ ॥

तर्ज लावणी की । ताल कैरवा ॥

वे जीवत जग के मांई । कुछ करते पर उपकार हैं । ॥ टेर ॥
जोड़ जोड़ धन कट्ठा करते; ज्यों आये त्यों ही वे मरते; पाप पुन से जरा न डरते । वे रहवेंगे हार में; यों भटक चौरासी मांई ॥ १ ॥ दिन और रात तके पर नारी; पर धन वस्तु लागे प्यारी; बात ज्ञान की लागे खारी । उन लोगों को धिक्कार है; जो करते निंदा पराई ॥ २ ॥ उनका जीवन सार्थक कहिये; सबसे मिल कर शामिल रहिये; बुरा किसी का मुख से न कहिये । उर में ज्ञान विचार है; जाके राग द्वेष मन नांई ॥ ३ ॥ सतसंग नित रहत सो ज्ञानी; हर्ष शोक मनमें नहीं आनी; ब्रह्म स्वरूप सकल को जानी । मेटे द्वैत विकार है; अमृत पीते और पाई ॥ ४ ॥ जग व्यवहार कुशल से करते; अपनो निरचय मन में धरते; मान कहे वे ही यम से लड़ते । यम के बन्ध निवार के; वे ब्रह्म स्वरूप सदाई ॥ ५ ॥

तर्ज हेली की । ताल कैरवा ॥

नित प्रापत प्राप्ती कहा हे हेली । यह मोहे हांसी आय ॥ टेर ॥
स्वतः प्रापत आप है हे हेली । किणने खोजण जाय । आप खोजी ने आप खोज है हे हेली । क्या गुमियो क्या पाय ॥ १ ॥ आप ही एक अनेक है हे हेली । आप हसे आप रोय । आप आपने भूलग्यो हे हेली । आप ही दरसे दोय ॥ २ ॥ नित प्राप्त ने जाण ले हे हेली । तो खोजण नहीं जाय । कर को कगण बांय चख्यो हे हेली । निजर पड़ी जद पाय ॥ ३ ॥ गोदी को बालक गोद में हे हेली । खोयो भरम रयो होय । निजर पड़ी जद गोद में हे हेली । गयो आयो नहीं कोय ॥ ४ ॥ ज्यों कुंभक भान्डा घडे हे हेली । धर धर नाम अनेक । भान्डा फूट कर चूर हुआ हे हेली । जो वस्तु है वो ही देख ॥५॥ सोना आदि मध्य अन्त है हे हेली । नाना भूषण कीन । गाल दियो सोनो भयो हे हेली । सोई उण कीमत लीन ॥६॥ इण विध सबमें आतमा हे हेली, नाना दृष्टान्त पहिचान । मान कहे दृष्टा आप है हे हेली । भई है दृश्य की हान ॥ ७ ॥

तर्ज हेली की । ताल कैरवा ॥

चवड़े मे चेतन मिल्यो हे हेली । कुण जड़ खोजण जाय ॥टेर॥
पुरुष बोलतो प्रत्यक्ष लख्यो हे हेली । अणबोल्यो ने कुण ध्याय ।
पूजा करो फिर बोले नहीं । हे हेली कुण फिर समय गुमाय ॥१॥
गावों रोवो तो कुछ ना कहे हे हेली । मुक्ति हाथ न आय ।
मरियों पीछे मुक्ति देवे । हे हेली । मोहे तो भरोसो नांय ॥२॥
गुण अवगुण खोजे नहीं हे हेली । करत पराई आस ।
सुपने मुक्ति नहीं पावसी हे हेली । होय पथरों का दास ॥३॥
बात कहूं समझाय के हे हेली । सो तो सुणे कोई नांय ।
मानसिंह चौड़े चौक में हे हेली । नहीं देखे दुख पाय ॥४॥

तर्ज हेली की । ताल कैरवा ॥

जगत सूतो ने जोगी जागतो हे हेली । नींद निकट नहीं आय ॥टेर॥

जगत स्वपन में रो रयो हे हेली । जोगी तो मौज उडाय । जोगी देखे निज रूप ने है हेली । यो किण विध दुख पाय ॥१॥ मरने जीवे जिके जोगिया है हेली । मौत रो भय कुछ नांय । मरण-डरे तो जोगी नहीं है हेली । कायर जीव कहाय ॥२॥ साधु सूता सुख नीन्द में है हेली । है चेतन मन मांय । गाफल पल भर रहे नहीं है हेली । काल देख गभराय ॥३॥ पलक एक परतन्त्र नहीं है हेली । रहत स्वतन्त्र सदाय । मान कहे मन जानली है हेली । क्या कहूं कयो नहीं जाय ॥४॥

॥ दोहा ॥

ऐसी बेगम नीन्द में, सुणे न जगरी हाय ।
जगत योंही बकती रहे, मेरी जगे बलाय ॥

॥ चौपाई ॥

मोह नीन्द सोवत नहीं जोई । सोय नीन्द जोगी नहीं होई ॥
आलस भय प्रमाद नहीं आवे । कामदेव जाको नहीं सतावे ॥
सदा सन्तोषी निरमल बैना । साची देत अमोलक सैना ॥
मान कहे वे सन्त सुखदाई । बिना भेष भल ग्रहस्थ के मांई ॥

॥ सवैया ॥

केशव भाषी है गीता के मांही सो गीता को रहस्य पहिचानो ।
जगत सोवे जब साधु जगे और जगत जगे जब साधु घुरानो ।
जगत और जोगी को खेल है उलटो साची बात यह भूठ न मानो ।
जगत करे जो साधु करे नहीं साधु को खेल तो और ही ठानो ।
देव हू नाथ कृपा करके उलटो जो हतो सुलटो सुलभानो ।
मान न गाई को गाई है यह जैसी कही करके दिखलानो ॥

॥ कुंडलिया ॥

मानसिंह उण देश री, बात न माने कोय ।
जिण रे होसी आवणो, घरज्यो रहे न सोय ॥

बरज्यो रहे न सोय, बरजतां आही आवे ।
बरजो लोक अनेक दूजों री दाय न आवे ।।
लोकायन डरता रहे, वे बैठेला रोय ।
मानसिंह उण देश री, बात न माने कोय ।।

राग देश-सोरठ । ताल कैरवा ।।

जोगी हूं उण देश रो रे जोगिया, सकल देश उण मांय ।।टेर।।
सात द्वीप नवखंड सभी रे जोगिया, बसे जोगिये रे डर मांय ।
जोगी खावे ने जोगण काडले रे जोगिया, अचरज खेल दिखाय ।।१।।
जोगी अमर जोगण नहीं मरे रे जोगिया, ए मिलकर खेल रचाय ।
जैसे बीज में वृक्ष है रे जोगिया, यो जोगण छिप जाय ।।२।।
जोगी अनन्त तो जोगण रो रे जोगिया, कहो अन्त कुण पाय ।
कब हु तो जोगण ऐसी करे रे जोगिया, जोगिये ने गटकाय ।।३।।
साचा सतगुरु जद मिले रे जोगिया, पकड़ ने पाछो लाय ।
अपणा अपणा दाव है रे जोगिया, जीते सो ले जाय ।।४।।
नाथ को साथ जो मैं कियो रे जोगिया, दीना दाव मिटाय ।
मानसिंह निर्भय भयो रे जोगिया, मिट गई सकल बलाय ।।५।।

।। सवैया ।।

मैं हूं जोगी और इच्छा है जोगण, सातों द्वीप नव खण्ड बसायो ।
ब्रह्म में जगत समाय गयो, इच्छा जब ही यह उपाय लगायो ।
एक के बहुत होन को चाहत, यों कर जग पाछो फुर आयो ।
माया प्रबल बढ़ी जब ही तब, ब्रह्म मिट्यो और जीव बणायो ।
देव हु नाथ दया करके, जो भेद हुतो सो सभी समझायो ।
मान तो बाजी हार्यो थो, गुरुदेव दया करि फिर जीतायो ।।

तर्ज डके की । ताल कैरवा ।।

हाँ समझ निज देश दिखावो, प्रेम पियाला भर भर पावो । जावे जिकां ने आवण री खुशी सूं, आवे जिकां ने लावो । निज देश दिखावो ।।टेर।।

आदत पड़ गई छूटे नांय; होय गया हरयाई गाय।
पोल पंथ रा जूत खावत है, उण में ई मौज बतावो।
निज देश दिखावो ॥१॥

ज्यों कुतड़ा चाबत है हाड; योंही कुटावे आपणी टाट।
कही सुणी ये कदेई न माने, कहदो कि भलाँई कूटावो।
निज देश दिखावो ॥२॥

याँरे नहीं है एक जबान; पत मत करज्यो यांरी जाण।
नकटा बण यह समाज बढावे, समज्या मत नाक कटावो।
निज देश दिखावो ॥३॥

कभी तो कहे नन्दजी रो जायो; कभी कहे ईश्वर अणजायो।
कभी ये कहे तकदीर हमारे, ढब पड़तो ज्योंही गावो।
निज देश दिखावो ॥४॥

नहीं माने वे खासी मार; समझावो कर जतन हजार।
एक मनुष्य री कैसे माने, माने नहीं ब्रह्मा समझावो।
निज देश दिखावो ॥५॥

दुर्योधन भीषम समझायो; कृष्ण जाय उपदेश सुणायो।
स्थूल पणो नहीं छोडे मूरख, थे क्यों समय गुमावो।
निज देश दिखावो ॥६॥

पगों विनारा नीचा रहसी; पापी पाप कर्म सुख लेसी।
दीन गुलाम जिके करत गुलामी, वाँ ने परा ठुकरावो।
निज देश दिखावो ॥७॥

देवनाथ कहे सुन तू मान; अपणे तो कदेय न रेणो अणजाण।
अपणो स्वरूप विश्व सारी में, मिलणो चावे जिकों ने मलावो।
निज देश दिखावो ॥८॥

तर्ज डंके की। ताल करवा॥

हां देख निज मंदिर मांई; क्यों डरपे देखत परछांई।
परछांई ने ईश्वर माने, अकल भांग क्यों खाई।
निज मंदिर मांई॥ टेर॥

वालकवत बुध हो गई जोय, दीनो जन्म मुफत ही खोय।
जन्म गमायो हाथ न आयो, बैठी है मूल ठगाई।
निज मंदिर मांई ॥ १ ॥

मूल मिले निज मारग आय; मारग आयों दुख है नांय।
अपणे में आप खोज कर हेली, बाहिर भटक दुख पाई।
निज मंदिर मांई ॥ २ ॥

भरम भूत अब देनी छोड़, असली आतम में मन जोड़।
नहीं आवे और नहीं वह जावे, रहवत अचल सदाई।
निज मंदिर मांई ॥ ३ ॥

जगह जगह पर सीस कुटाय; अज हू सबूरी आई नांय।
पूज पूज पत्थर पाथर को, नाहक स्यान गुमाई।
निज मंदिर मांई ॥ ४ ॥

देवनाथ सम समधी पाय; असल पिया सू कीनो ब्याह।
मान आन दुख भूली म्हारी सुरता, समझयाँ पीव मिलाई।
निज मंदिर मांई ॥ ५ ॥

राग सारग। ताल रुपक ॥

जाग रे मन हंसला तूं चाल निर्भय देश रे। सुख रे सागर झूलणो उठे दुख रो नहीं लव लेश रे। जाग रे मन हसला० ॥ टेर ॥
साची कैवे सन्तजन ज्यांरा धार उर उपदेश रे। धारियों सूं धीरज आवे, मिटे भरम सन्देह रे ॥ १ ॥ मिथ्या मोह में उलझ बैठो क्यों खोसावे केश रे। सत्य जाको ओलख उर में, परम धाम प्रवेश रे ॥ १ ॥ देवनाथ गुरु महर कीनी, पायो अलख अचलेश रे। मान ओलख आप में, यूं रहत मगन हमेश रे ॥ ३ ॥

राग माड-आसावरी। ताल दीपचन्दी ॥

अमराणे निज देश, चालो रे मना अमराणे निज देश ॥ टेर ॥
इण अमराणे रे देश में रे, पहुंच्या सन्त सुरेश। इसड़ा नर पहोंचे नहीं रे

ज्यां शिर नकली भेष। चालोरे० ॥१॥ सात सुन्न रे पार है रे, जहां तुम कर हो प्रवेश। जमरो दाव लागे नहीं रे, नित रहे निर सन्देह। चालोरे० ॥२॥ जन्म मरण जहां है नहीं रे, नहीं-दुखरो लव लेश। उण घर जो नर पहुँचिया रे, अमर रहत हमेश। चालोरे० ॥३॥ देवनाथ सत-गुरु मिल्या म्हांने, साचो दियो उपदेश। मान ओलख्यो आपने रे, आप ही करत आदेश। चालोरे० ॥४॥

राग मंगल। ताल दीपचन्दी ॥

सैंया ए म्हारी अलबेलां रे देश कोई अलबेला आवे हे ॥ टेर ॥ उलमयोड़ा जीव सुलझनो न चावे हे। सैंया ए म्हारी लख चौरासी रे बीच जिकांने फल खारा भावे हे ॥ १ ॥ होय अलबेला सब खटपट मेटी हे। सैंया ए म्हारी करता अकरता होय जिकांने जम नांय सतावे हे ॥ २ ॥ भूत भविष्यत सगला खोया हे। सैंया ए म्हारी आदि अन्त लियो पाय अबे नहीं आवे न जावे हे ॥ ३ ॥ झूमरचा निज अपने आपमें हे। सैंया ए म्हारी चवदे भवन रा नाथ आप वे तो आप कहावे हे ॥ ४ ॥ मानसिंह अलबेला ऐसा हे। सैंया ए म्हारी भयो है काल रो काल काल म्हां सूं डर जावे हे ॥ ५ ॥

राग मंगल। ताल दीपचन्दी ॥

बालाजी म्हारा जगत बहकावण बात नरेश्वर म्हांने नहीं भावे हो ॥ टेर ॥ चवदे भवन रा नाथ कैसे कहिये हो। बालाजी म्हारा थांरे तो मरुधर एक दूजो म्हारे निजर न आवे हो ॥ १ ॥ काल को काल कैसे तुम्हें मानूं हो। बालाजी म्हारा दिन दिन घटत शरीर काल थांने नित प्रति खावे हो ॥ २ ॥ ईश्वर के ईश्वर कैसे तुम हो हो। बालाजी म्हारा जो ईश्वर कर देय थांसूं सुपने नहीं आवे हो ॥ ३ ॥ बात आपरी निपट अनोखी हो। बालाजी म्हारा वंक कहे हो भूप म्हारी बुद्धि चकरावे हो ॥ ४ ॥

राग मंगल। ताल दीपचन्दी ॥

बालाजी म्हारा मन्द जिकां रा भाग बात म्हारी दाय न आवे रे ॥ टेर ॥

निजानन्द री सुध नहीं ज्यांने रे। बालाजी म्हारा बण रया ब्रह्म सूं जीव स्वान मुख हाड चबावे रे ॥ १ ॥ आतम आप सदा परिपूरण रे। बाला जी म्हारा देह दृष्टि उरधार दीन हो के उलझावे रे ॥ २ ॥ जिण ईश्वर को खोज खुर नहीं है रे। बालाजी म्हारा उण सू डरे दिन रात पते बिन सिमरया ही जावे रे ॥ ३ ॥ कोई कहे जीव ईश्वर दोनों घट मे रे। बाला जी म्हारा जीव जिकांरो दास ईश्वर उण पर हुकम चलावे रे ॥ ४ ॥ घट है ठोस अवकाश जहां नांही रे। बालाजी म्हारा इतनी जगह कहां पाय जठे जीव ईश्वर मावे रे ॥ ५ ॥ जो अणबणत कभी होय जावे रे। बाला जी म्हारा होय परस्पर युद्ध फेर वांने कौण छुड़ावे रे ॥ ६ ॥ दास भोलायो जो काम करे नहीं रे। बालाजी म्हारा ईश्वर काड दे बाहर जीव कठे कठे जावे रे ॥ ७ ॥ किसेरे लोभ सूं जीव करे नौकरी रे। बालाजी म्हारा किसड़ो स्वारथ सिद्ध होय गुलाम जिण सू जीव रहावे रे ॥ ८ ॥ खान पान ईश्वर जो देवे रे। बालाजी म्हारा खान पान में समाय ईश्वर ने जीव कैसे खावे रे ॥ ९ ॥ नौकर जो मालक ने खावे रे। बालाजी म्हारा किणरो नौकर फिर होय इण री म्हांने हांसी आवे रे ॥ १० ॥ म्हारे तो मालक ईश्वर नहीं कोई रे। बालाजी म्हारा मालक नौकर जिके होय वा पर म्हांने दया जो आवे रे ॥ ११ ॥ सब कुछ हम और हम में सब है रे। बालाजी म्हारा हमसे भिन्न कुछ नांय मान नहीं आवे ना जावे रे ॥ १२ ॥

राग मगल। ताल दीपचन्दी ॥

सैंयाए म्हारी चहूं दिश मच रयो शोर, सांवरियो क्यों नहीं आयो हे ॥टेर॥ राग रागणी में गुणी जन गावे हे। सैंया ए म्हारी हान उपज करे शोर, प्रभुजी ने भजन सुणावे हे ॥ १ ॥ कई एक भगत नाचे और कूदे हे। सैंया ए म्हारी नाच मंजीरा बजाय, हरीने घणाई रिझावे हे ॥ २ ॥ भूखे मरे कई लकड़ा वाले हे। सैंया ए म्हारी कर कर कई एक स्वांग, नाना विध भाव दिखावे हे ॥ ३ ॥ क्या तो भगत भूठा क्या हरि नहीं है हे सैंया ए म्हारी क्या दब गयो भूकम्प रे मांय, समन्दरों मे जाय डुबायो हे

॥ ४ ॥ मान कहे म्हारी सुण लो नाथजी हो। सैंया ए म्हारी इणरी संशय मन मांय, महर कर खोल बतावो हो ॥ ५ ॥

राग मंगल। ताल दीपचन्दी ।॥

सैंया ए म्हारी इण कारण नहीं आयो, सांवरियो रुठ्यो यां सूं है ॥ टेर ॥ नाम तो भगत ए नास्तिक पक्का है। सैंया ए म्हारी ऊपर वाले सैण कास दुस्मण रो दिखावे है ॥ १ ॥ एक हरी रा टुकड़ा कीना रे। सैंया ए म्हारी कंकर जिता शंकर होय, जिकांरे किसड़ो रामजी आवे है ॥ २ ॥ झूठो कलक ए देवे उणने है। सैंया ए म्हारी इण कारण वांने कान आपणो मुख न दिखावे है ॥ ३ ॥ महायोगेश्वर कृष्ण कहीजे है। सैंया ए म्हारी कहवे व्यभिचारी ने चोर, भारत माता शरमावे है ॥ ४ ॥ विश्व प्रेमी भगवान कहायो है। सैंया ए म्हारी मजहबों रो आर न पार, जिकेसूं हरि नहीं आयो है ॥ ५ ॥ कृष्ण बुलावो तो सब मजहब मेट दो है। सैंया ए म्हारी काढो इण कचरे न बार, हरी झट दरश दिखावे है ॥ ६ ॥ श्याम रिझावण करे न कोई भक्ति है। सैंया ए म्हारी जगत रिझावण काज, नाचे और गावे बजावे है ॥ ७ ॥ हरिने रिझावण मान तेवड़ियो है। सैंया ए म्हारी दिया सब धर्मों ने छोड़, स्वधर्म आपणो निज पायो है ॥ ८ ॥

राग मंगल। ताल दीपचन्दी ॥

सैंया ए म्हारी अनन्त गोप्यों में गोपाल, रास जिणरो कयो नहीं जावे ए ॥टेर॥ नाम ने रुप सकल है गोपी ए; सैंया ए म्हारी चेतन एक गोपाल, सभी मांय नाच नचावे ए ॥१॥ इसड़ो रास तो कोई नहीं देखे ए; सैंया ए म्हारी कूदे ज्यूँ वेताल, काम केरी आग जगावे ए ॥२॥ स्वारथिया सब जगत बहकावे ए; सैंया ए म्हारी खोय दीवी निज लाल, खोयोड़ी फिर हाथ न आवे ए ॥ ३ ॥ इसड़ो रास कोई देखण आवे ए, सैंया ए म्हारी डरतो रेवे ज्यांसू काल, आगेसूं ऊभो शीश नवावे ए ॥४॥ इसड़ो रास मैया ने देखायो ए; सैंया ए म्हारी यशुमति मुख ने उघाड़, देखत ज्यांरो मन अकुलावे ए ॥५॥ इसड़ो रास पारथ ने दिखायो ए; सैंया ए म्हारी देखो

देखो गीता सम्भाल, राम नहीं छाने छिपावे ए ॥६॥ अखिल ब्रह्माण्ड में मन ने जोड़ो ए, मैया ए म्हारी साख्ययोग उरधार, जदे वह निजरां आवे ए ॥७॥ मानसिंह एसो रास रमायो ए, सैंया ए म्हारी सतगुरु मिलिया दलाल, आनन्द ज्यांने अनुभव आवे ए ॥८॥

तर्ज इके की । ताल कैरवा ॥

॥ प्रश्न ॥

भूपति यह मन हाँसी आय, कैसे कृष्ण मे विश्व समाय ॥ टेर ॥
कृष्ण हतो जो एक शरीर । थे वो एक हलधर को बीर ।
कैसे दीनो जगत दिखाय । कैसे कृष्ण मे० ॥१॥

॥ उत्तर ॥

कवि यह कर मत जुल्म अपार, देह दृष्टि मन मे मत धार ॥ टेर ॥
कृष्ण नहीं हलधर को बीर । अखिल विश्व को एक शरीर ।
योग दृष्टि चित राख विचार । देह दृष्टि मन में० ॥२॥
क्या उन योग समाधी कीन ; क्या उन बकनाल मग लीन ।
इतनी समय वहाँ थी पण नांय । कैसे कृष्ण मे० ॥३॥
स्वत समाधी स्थित गोपाल । रहत एक रस मे हर हाल ।
नहीं जाणे नर मूढ़ गमार । देह दृष्टि मन में० ॥४॥
फिर वह योग अवर क्या थाय । सो हम को दीजे समझाय ।
जब मेरे मन मे पत आय । कैसे कृष्ण मे० ॥५॥
जगत अनन्त वशिष्ठ बताय । सो है अपने मन के मांय ।
राम सुन्यो यह बार ही बार । देह दृष्टि मन मे० ॥६॥
यो ही कृष्ण विराट स्वरूप । देख्यो पारथ अपणो रूप ।
मिट गया जिण रा द्वैत विकार । देह दृष्टि मन में ॥७॥
बंक कहे दोनों कर जोड़ । शुद्ध भई भूपति मति मोर ।
लीयो रूप विराट ने पाय । कैसे कृष्ण में० ॥८॥

पाय लीयो सो दीयो नहीं खोय। आप ही अपणो रयो तू सोय।
आपही दी है नींद उधार। देह दृष्टि मन में ॥६॥
मान कहे अब ही पहिचान। गई सो गई रही पर ध्यान।
तो उतरे भव जल से पार। देह दृष्टि मन में० ॥ ०॥

तर्ज डंके की। ताल कैरवा ॥

सुण सुण अमर पियाजी री नार; किण कारण भटके तू बार ॥ टेर ॥
जिण से प्यारी तू नेह लगाय। ये तो अन्त रहन के नांय।
तेरो तो अमर सदा भरतार। किण कारण भटके तू बार ॥१॥
अमर पिया ने दीनो त्याग। मुड्दों संग में रही तू लाग।
सुरसो द्वैत रो लीनो सार। किण कारण भटके तू बार ॥२॥
असल पिया ने गई तू भूल। नकली मांय रही तू भूल।
धार विषय को तन शृंगार। किण कारण भटके तू बार ॥३॥
जिनको तू अपना कर माने। जिन से हेत अति तू ठाने।
ये सब हैं दो दिन के यार। किण कारण भटके तू बार ॥४॥
सुख सुख करती गोता खाय। सुख तो है तेरे घर के मांय।
क्यों बाहर कर रही व्यभिचार। किण कारण भटके तू बार ॥५॥
नहीं बालक नहीं वृद्ध जवान। नहीं दानो और नहीं नादान।
सदा एक रस सुख सरदार। किण कारण भटके तू बार ॥६॥
देवनाथ नित तोय समझाय। मान भूल में तू दुख पाय।
महान मिल्या विन पड़सी मार। किण कारण भटके तू बार ॥७॥

राग भैरवी। ताल तिताला ॥

नार बड़ी अलबेली; मिली एक नार बड़ी अलबेली ॥ टेर ॥
काहू की बेटी न बहू काहू की, न वो काहू की चेली।
हरदम रहे वो साथ पुरुष के, पलक न रहत अकेली। मिली० ॥१॥
अजब विचित्र स्वभाव नार को, नहीं सैणी नहीं गैली।
नाच नचावे अपने मन चायो, बरजी नांय रहेली। मिली० ॥२॥

इण नारी प्रीतम वश कीनो, होई फिरे रंग छेली।
परणी कंवारी कुछ नहीं कहिये, भोगत भोग नवेली। मिली० ॥३॥
भोग भोग सब जग उपजायो, फिर निकलक रहेली।
जानन चाहे कोई याके पांव को, तो पहिले इन मति लेली। मिली० ॥४॥
देवनाथ गुरु दया करी जद, समझी गुरत सहेली।
मानसिंह ले राह हम इनकी, ब्रह्म राह फिर भेली। मिली० ॥५॥

राग माड। ताल दादरा॥

पीणो तो घृत ही पीणो, मरके जीणो, छाछ तो पीणी नाय।
पीणो जितनो हजम होय जाय॥ टेर॥
वेद शास्त्र को दूध दुवो तुम, राखो बुद्धि गाय।
नित्य विचार के माट जमाओ, जरणा को ठकण लगाय॥१॥
मांग्यो उधारो घृत पिये कुण, फिर फिर पाछो चुकाय।
स्वास उस्वास बिलोय अहम् पद, तुरिये घर रे मांय॥२॥
मन बाछड़िये ने सबलो राखो, जब दूजेला गाय।
ब्रह्म विचार रो देणो बांटो, जद नित आनंद आय॥३॥
तत्त्वमसि री आग तपावो, छाछ सभी जर जाय।
घृत निकाल के खोट न आवे, पीयत अमर होय जाय॥४॥
जीव पणेरी है कमजोरी, धीरे धीरे मिट जाय।
संकल्प विकल्प रोग लग्या है, कमजोरी मांय सताय॥५॥
सतगुरु साचा भेट ने पीजो, सत वां सूं मिल जाय।
कूड़े गुरू सूं कदेई मत पीजो, पीयोड़ो गुण नहीं आय॥६॥
नाथजी पायो मोय समझायो, जुगती दी दरसाय।
मान महान लग्यो दीरघ रोग यह, हमके दियो मिटाय॥७॥

राग माड़। ताल दादरा॥

म्हे तो नित परबो म्हावों, मौज उडावों, बाहर कुण म्हारे जाय।
म्हांने जम रो डर नहीं आय रे। म्हे तो नित परबो० ॥टेर॥

नित सोमोती ने नित संक्रांति, एक जैसी दरसाय।
क्या जो मकर की क्या जो कुम्भ की, मेष की कौन कहाय रे ॥१॥
कुण जय बोले ने कुण न्हावे गंगा, कुण म्हारे विपत उठाय।
आशा तृष्णा गंगा में डूबने, कुण म्हारे जनम धराय रे ॥२॥
कुण न्हावे कुम्भी ने कुण अर्ध कुंभी, कुण म्हारे भीड़ मचाय।
ब्रह्म महन्त री निकसी सवारी, नित उठ दरसण पाय रे ॥३॥
मन हस्ती पर ब्रह्म सवारी, अनहद बाजा बजाय।
ज्ञान के घाट में न्हावण कीनो, आनंद कह्यो नहीं जाय रे ॥४॥
हिमगिरी सूं गंगा चाली, भारत भूतल मांय।
सागर तांही पहुँची जितरे, अनन्त ही नगर तिराय रे ॥५॥
उण गंगा सूं निपजी अनन्तो, भूतल वस्तु अपार।
जिण सूं भारत उधरयो सारो, भयो भूख सूं पार रे ॥६॥
देह की मुक्ति अन धन करके, इण गंगा सूं होय।
जीव की मुक्ति पावे जद ही, ज्ञान गंगा न्हावे जोय रे ॥७॥
नाथ को साथ भयो जद म्हारे, अमर स्नान कराय।
मान कहे ऐसी गंगा में न्हायो, नाथ स्वरूप समाय रे ॥८॥

॥ सवैया ॥

भरत श्रेष्ठ रघुकुल सगर जिनके सुत का गंग कीन उद्धारी।
श्री मद्भागवत देत प्रमाण है सो तुम झूठ कहो किम सारी।
वंक कहे यह बात जो वांकुरी तहां नहीं पहुंचत बुद्धि हमारी।
के तो नरेन्द्र हमें समझावो नहीं तर झूठी यह बात तुम्हारी॥

॥ सवैया ॥

रे कवि बावरो है तू तो अब बात लखे नहीं अन्तर मेरी।
एक वेर को कहा कहूँ समझाय दियो तोहे वेर ही वेरी।
भूल गयो कवि फेर कहूं तोहे जीभ घसे कुछ भी नहीं मेरी।
वन इन गंग को अर्थ कहूँ तू देके देखले दिल में फेरी।

मान कहे फिर भी नहीं मानहि ना अपने दिल अन्दर हेरी।
तो मेरो कुछ दोष नहीं कविराज होवेगी भूल जो तेरी ॥

॥ दोहा ॥

सगर सुतन के कारणे, भागीरथ गंग लाय।
सो कविराज झूठी नहीं, परतक देत दिखाय॥
मुक्ति भई इण कारणे, ॰ विवर सोच विचार।
सगर के सुत उधरे कहा, भारत दियो उद्धार॥

तर्ज वाणी की। ताल कैरवा॥

साधो भाई तन धोया मन मैला होजी। तन धोयां सूं काम नहीं चलसी,
जमरा डन्डा पड़ेला रे। साधो भाई तन धोया० ॥टेर॥
समता रो साबन ज्ञान नीर कर, करणी री कून्डी ह्वेला होजी।
श्वासोश्वास मार फटकारा, सुरत शिला, रगडेला रे ॥१॥
ममतारो मैल मेट भया उजला, गमरी गेरू रंगेला होजी।
वे फिकरी री लगी फिटकड़ी, दिन दिन दूणो घुटेला रे ॥२॥
जब तक मन मैलो रहे मांही, जब तक योंही भटकेला होजी।
साचे गुरु बिन मैल कुण धोवे, दुविधा नांय हटेला रे ॥३॥
समझ विचार सार लख उर में, गुरु मुख ज्ञान सुणेला होजी।
सुन कर ज्ञान ध्यान सूं धारे, वे नर नांय डरेला रे ॥४॥
देवनाथ को साथ कियो जद, अब क्य सशय रहेला होजी।
मान स्थान कियो सुरधनी पर, निभय निसाण बजेला रे ॥५॥

॥ दोहा ॥

रंक कहे सुन भूपति, कौन है जमको दन्ड।
जम तो कुछ भी है नहीं, यह क्यों कहो पाखन्ड ॥

सवैया

बात तो सत्य है झूठ नहीं, ना जम है और ना दन्ड जो होई।

अपनी करणी -आप संकल्प कर, आप खड़ो जम करके जोई।
संकल्प मांय भयो जम राजा, संकल्प पाप कियो दुख खोई।
संकल्प में पुनि दंड मिले, और संकल्प में दुखी होय के रोई।
मान कहे जब ज्ञान भयो, जमराज गयो तब दंड भी खोई।
अपनो खेल यह आप करे, और आप ही एक हुयो है दोई॥

राग माछली की। ताल दीपचन्दी॥

साधो भाई म्हारी छिल रही प्रेम तलाई। सत रो सावण भाव बरस्यो भादू; अब जल मावे नांई॥ टेर॥
शील सन्तोष पाज मजबूती; टूटे नहीं लाख उपाई।
निश्चय रा वृक्ष चारों दिस ठाडा; होय रही अखण्ड नित छांई॥१॥
करुणा कमल नीर पर छाया; फूल लग्या बेफिकराई।
छाई विचार बेल बहो दशूं दिस; सत्तरी कमोद सवाई॥२॥
चित चौकीदार खड़ो रहे हरदम; चौकस राखे सदाई।
कुबध रा काग आवण नहीं देवे; ममता री मछियां कढ़ाई॥३॥
आशा ने तृष्णा कामण लागी; समता इनमें समाई।
तत्त्वमसी धुन कोयल बोली; कैसी छटा छबि छाई॥४॥
अगम सिंहासन सतगुरु बैठा; झूले और झूलाई।
श्रुति स्मृति निरति नार मिल; मीठा मंगल गाई॥५॥
आवण जावण रा फल दोय छोड्या; अब मैं लेऊं नांई।
शीश नारेल चढ़ायो जिसको; तत्त्व परसादी पाई॥६॥
भाव भादू के अन्त मांयने; यूं एकादशी ध्याई।
है इग्यारह व्रत यूं थापीया; अब छिलके मुलके नांई॥७॥
गो अतीव गोपाल संग में; रावे संग प्यारे आई।
मान चरित्र देख्यो हम ऐसो; दीनो है मान गुमाई॥८॥

राग परज। ताल धमाल॥

यामें बड़ी नर नहावे, भर्यो है दधि जो अनन्त रे॥टेर॥

देखी निर्भेद भई है डंके चोट। अब पाप पुन सब गया है खूट।
रंग प्रीतम प्यारी रया है घोल ॥३॥
अब मेट दिया सखी जीव जीव। अब जहां देखूं जहाँ पीव पीव।
जब लियो है आप में आप खोल ॥४॥
सखी चहूं दिश देख्यो मान मान। अब मान बिना कोई मिल्यो न आन।
सखी मान मान तज लियो है मोल ॥५॥

राग काफी। ताल दीपचन्दी ॥

मना अब थिर होय बैठो, नाच थक्यो दिन रात ॥टेर॥
जब तक मनवो नाचण लागो, किणरी सुनी नहीं बात।
आप सुनी न सुनन नहीं देतो, हाकोई हाक मचात ॥१॥
यह तो नाचे पर हम नही नाचें, विध विध किया उत्पात।
यह थाक्यो अब हम नाचेंगे; खुद मस्ती सुख पात ॥२॥
हम नाचें अब उन मुन धुन में, जहां मन आव न जात।
मेरे बीच मन बोल सके नही, चुप गूंगे गुड़ खात ॥३॥
मैं मेरो जहां मन नहीं पहुँचे, चारो वेद थक जात।
मन बपुरो अब क्या जोवेगो; सुपने न आऊं या के हाथ ॥४॥
जब तक इण मन को वश पूगो, तब तक रयो अनाथ।
नाथ के साथ तज्यो सग मन को, हो गयो मान सनाथ ॥५॥

राग काफी। ताल दीपचन्दी ॥

अब हम असल ब्यौपारी, ऐसे बने हैं बजाज ॥टेर॥
मेरी वस्तु मिले न किसी में, सब बनियों के सरताज।
मेरी दुकान बन्द नहीं होवे, होवे तो बिगड़े काज ॥१॥
मेरे यहां कमी नहीं कछु भी, जी चाहे ले साज।
मेरा भेद लखे कोई भेदी, करत तुरीय पद राज ॥२॥
मुझसे बनिज वही कर सकता, छोडे जगत की लाज।
सब धर्मों को मुझ में मिलावे, तोड़ धर्म की पाज ॥३॥

खरे दलाल मिले मोहे ऐसे, देवनाथ महाराज।
मानसिंह इस विश्व समुद्र में, निर्भय चले मेरी जहाज ॥४॥

राग काफी। ताल कैरवा ॥

रंगीलो चए कोई आवे; उस पर ढोलूँ रंग ॥टेर॥
मेरो रंग चढ्यो नहीं उतरे; जाणो मत रंग पतंग ॥१॥
समझ विचार धार कोई आवे; मरजीवों के संग ॥२॥
जग सूँ जुदो ही रँग मेरो कहिये; टूटे मिथ्या प्रसंग ॥३॥
जो कोई आया ज्याँने पूछो; सब सूँ होय निशंक ॥४॥
मान यूँ साथ नाथ रो कीयो; बाजी है अनुभव चंग ॥५॥

राग काफी। ताल दीपचन्दी ॥

रंग बरसे चहुँ ओर; भीजे कोई नार सुभागी ॥टेर॥
रंग को छोड़ कीच बिच जावे, देखो कर्म कठोर।
जन्मो जन्म कीच पग चाहत, होय रही मति भोर। भीजे कोई० ॥१॥
जो लागी सो लाग गई रे, जैसे चन्द्र चकोर।
लाल रंग में होय रही लाली, होय रही चित चोर। भीजे कोई० ॥२॥
ऐसे पिया संग खेली होरी, नहीं कोई बाल किशोर।
प्रौढ और वृद्ध कछू नहीं सजनी, रूप अवर को और। भीजे कोई० ॥३॥
देवनाथ गुरु हाथ पकड़ के, ले लियो अपनी ओर।
मानसिंह निर्भय की होरी, मिट गयो जम को जोर। भीजे कोई० ॥४॥

राग काफी। ताल दीपचन्दी ॥

नाथ मैं अखण्ड कुमारी, रंग मत डारो मोय ॥टेर॥
मैं हूं कुमारी बाला बिचारी, भेद न जानूँ कोय।
रंग मत डारो जगत हँसेगो, समझाऊँ मैं तोय।
आई हूँ मैं शरण तुम्हारी। रंग मत डारो मोय ॥१॥
बावरी क्यों मन शंके, फिकर देय सब खोय ॥टेर॥

तू है कुमारी बाला विचारी, तो हम परसे नहीं कोय।
आज तोय हम एक करेंगे; देंगे दोय को खोय।
हमी हैं ऐसे ढग के। फिकर देय सब खोय ॥२॥
तुम हो पुरुष और मैं हूं नारी, दूर रहो मो से सोय।
यह ससार जाने नही तुमको; मैल मोय पर होय।
लगे जिनको डर भारी। रंग मत डारो मोय ॥३॥
नारी पुरुष भाव तेरे मन के, मेट देऊँ सब खोय।
भेद मिटाय एक रंग करदूं; आन मिलाऊँ तोय।
रहूँ नित ही बिन अंग के। फिकर देय सब खोय ॥४॥
बरजत बरजत रंग तुम डार्यो, रग में दीनी डुबोय।
भली बुरी सो है सब तुमको; मैं तेरे रंग गई होय।
भूल गई सुध बुध सारी। रंग मत डारो मोय ॥५॥
कहाँ है जगत कौन है कैसो, नाहक रही क्यों रोय।
तू ही है तू अब और सब मिट गया; मैल दिया सब धोय।
होय गई रंग मेरे रंग की। फिकर देय सब खोय ॥६॥
ले दरपण अपनो मुख देख्यो, पिव में मिल गई सोय।
पीव जीव और जीव पीव भयो; न्यारो रयो न कोय।
नाथ थांरी जाऊँ बलिहारी। रंग मत डारो मोय ॥७॥
पीव और प्यारी न्यारी कहाँ अब, भेद रयो नहीं कोय।
देवनाथ ऐसे एक रंग होनो; बुरी कहे नहीं कोय।
डरो नहीं जम के जंग से। फिकर देय सब खोय ॥८॥
एक एक भेद सब छेक्या, जीव ब्रह्म में पोय।
मान मिथ्या अब मान भयो है, अपणो रूप जग जोय।
मेट दी न्यारी न्यारी। रंग मत डारो मोय ॥९॥

राग काफी। ताल दीपचन्दी ॥

होरी में सुरता गोरी, अब अटकेगी नांय ॥टेर॥

खेलन को निकसी जद घर से, पूरो भाव जमाय।
जो आवे कोई मुक्सा करूंगी, एक रंग बीच डुबाय ॥१॥
पंथा पंथ के डफर बापुरे, कैसे सकेंगे बजाय।
ज्ञान को ढोल बजेगा मेरो, सब की शान गमाय ॥२॥
भंग शराब नशे घड़ी दोय के, इनकी तू कब नांय।
ब्रह्मानन्द मद जरपो निकरूं, कोई मद नहीं ठहराय ॥३॥
पामर जीव भेड़िये बपुरे, मेरे निकट ना आय।
ऐसी धाक करूं बावन सी, फाट कलेजो जाय ॥४॥
देवनाथ गुरु सिंह शरोवर, उन संग मंगल गाय।
मानसिंह कहे सुरत सहेली, अवर ताप सहे नांय ॥५॥

राग काफी। ताल धमाल ॥

अब रेणो रे सम होय कर रेणो; सारों सूं मिलने बेणो रे ॥टेर॥
अपणो रूप समझ सारे जग ने, कटुक वचन नहीं केणो। सारा सूं० ॥१॥
भेदाभेद छेद कर मन सूं, दुख सुख सिर पर सेणो। सारों सू० ॥२॥
हरदम निर्मल मैल नहीं राखो, मारग सीधे नित बेणो। सारों सूं० ॥३॥
मान कहे मानो ना मानो, मेरो तो सब ही से केणो। सारों सूं ॥४॥

राग काफी। ताल धमाल ॥

अब जागो रे समझकर जागो; मारग निज लागो रे ॥टेर॥
पन्थापन्थ में बहुत दिन भटक्या, अब तो अलगो त्यागो। मारग० ॥१॥
होय स्वाधीन निसंक रहो नित, तोड़ भरमना रो धागो। मारग० ॥२॥
पराधीनता में बहुत दिन बीता, बिछुड़ गयो निज सागो। मारग० ॥३॥
भाग भाग कर फिरत भटकतो, यों ही रेवेला निरभागो। मारग० ॥४॥
नाथ को साथ मान मन मान्यो, मिलयो जिम सोनो सुहागो। मारग० ॥५॥

राग काफी। ताल धमाल ॥

यो नीको रे ब्रह्म मद नीको; मीठो नहीं फीको रे ॥टेर॥

ओ तो ब्रह्म मद ऐसो कहिये, प्राण सदा शिवजी को। मीठो० ॥१॥
चार वेद षट शास्त्र उपनिषद, है सब ही को टीको। मीठो० ॥२॥
ओ मद पिया जिके सब दुख त्यागया, भाव मिटायो मन सूं जी को। मीठो० ॥३॥
शीश उतार कोई ओ मद पीवे, होवे हजम उस ही को। मठो० ॥४॥
मानसिंह ऐसो मद पीयो, आनन्द लियो है उमी को। मीठो० ॥५॥

राग काफी । ताल धमाल ॥

कोई चढ़िया रे ज्ञान घोड़े चढ़िया; वार कई पढ़िया रे ॥टेर॥
पड़ गुड़ कर असवार हो गया; जाय काल सूं भिड़िया। वार कई० ॥१॥
होय अलबेला तोड़ सब बंधन; तुरिये पद ने खड़िया। वार कई० ॥२॥
जीवत मरे जिके नर चढ़िया; शीश काट कर धरिया। वार कई० ॥३॥
जीवत मरने जीय गया वे, फिर किण सूं ई नहीं मरिया। वार कई० ॥४॥
मानसिंह असवार एक रत; मोक्ष मोत की करिया। वार कई० ॥५॥

राग काफी । ताल धमाल ॥

आनन्द आयो रे अमर सुख पायो; कपट बिसरायो रे ॥टेर॥
नित्यानन्द ने *भूल दुखी भयो; अपणो भान भुलायो। कपट० ॥१॥*
निज को भूल देह बन बैठो; अवर अवर नित *गायो।* कपट० ॥२॥
अपणी खबर पड़ी है अबके; चूर नशे बिच छायो। कपट० ॥३॥
कृष्ण कलाल ले ज्ञान भटी सू; अजब अरक निकसायो। कपट० ॥४॥
सोई अरक अर्जुन निज पीयो; फिर धनु हाथ उठायो। कपट० ॥५॥
सो यदुनाथ नाथ रुप होय; मान को निकट बुलायो। कपट० ॥६॥
बरजत बरजत पायो ब्रह्म मद; देह को भाव छुडायो। कपट० ॥७॥
मानसिंह *भयो ब्रह्म दिवानो;* कोई आवे ताही फेर बनायो। कपट० ॥८॥

राग सारग-लूवर । ताल धैरवा ॥

हेली इण ने अमर बीन्द परणायो रे। सुरता ने ॥टेर॥
सत बचनों सूं करलो सगाई। सम सन्तोष सदा मन मांही।

हेजी अब निश्चय नारेल झलाओ रे । सुरता ने ॥१॥
पांच विषय रो टीको दे दो । पंच कोश के गांव भी दे दो ।
हेजी अपणे चित मांय चँवरी मंडाओ रे । सुरता ने ॥२॥
विवेक बरी ज्याने घणी सुहावे । बाणो विचार बींद मन भावे ।
हेजी ज्यारे आनन्द मुकुट सजावो रे । सुरता ने ॥३॥
बेफिकरी रा फूल बणावो । सुगन्ध सेवरा खुब सजावो ।
हेजी इयों दोनों रे गल पहनावो रे । सुरता ने ॥४॥
मन हस्ती ज्यारे आगम अम्बारी । ब्रह्म बींद ज्यारी निकसी सवारी ।
हेजी उठे अनहद बाजा बजावो रे । सुरता ने ॥५॥
पांच तत्वों पर तोरण बन्धायो । उतर्यो बींद चौक में आयो ।
हजी उणने निरती निरख सरावो रे । सुरता ने ॥६॥
गुरु ब्राह्मण चवरी में आया । माया ब्रह्म रा हाथ जुड़ाया ।
हेजी उठे श्रुति मंगल गावो रे । सुरता ने ॥७॥
तत्त्वमसि का मन्त्र सुणाया । तूही है तूही है यह सुण पाया ।
हेजी जद अन्तर आनन्द आवो रे । सुरता ने ॥८॥
बीन्द वियाह आया जनवासा । तुरिया महल में किया निवास ।
हेजी जद हँस घूंघट उघड़ावो रे । सुरता ने ॥९॥
उघड़्या घूँघट पट हो गया एका । आप ही आप और नहीं ...
हेजी फिर प्रीतम बीच समावो रे । सुरता ने ॥...
सुरता प्रीतम हो गया मेला । बिखर गया ...
हेजी अब सब अपने घर आवो रे । सुरता ने ...
मानसिंह अब फास सब तोड़ी । ना कोई ...
हेजी अब जगत ब्रह्म दरसावो रे । ...

हेजी ज्यांने जम रो डर नहीं आयो रे। मद छकिया ॥१॥
चूर नशे में कुछ नहीं सूझे। अपणो आप आपने बूझे।
हेजी ज्यांने दूजो नहीं दरसायो रे। मद छकिया ॥२॥
अपणे आप में लागी डोरी। सामी मिल गई सुरता गोरी।
हेजी तब झट एक रंग बनायो रे। मद छकिया ॥३॥
गली तो सांकड़ी में मावे नहीं दोई। पीछी घिरे तो अति दुख होई।
हेजी अब चौड़े लाज उड़ायो रे। मद छकिया ॥४॥
एक बरोबर मिल गई जोड़ी। माया ब्रह्म री दुविधा तोड़ी।
हेजी अब माया ब्रह्म मिलायो रे। मद छकिया ॥५॥
हो गया एक छेक दी दुविधा। जीव भाव री मिट गई क्षुधा।
हेजी अब अपणों ही मंगल गायो रे। मद छकिया ॥६॥
मद छक भया अब कुछ नहीं बोले। अखिल विश्व ने कांटे तोले।
हेजी अब विश्व विजय पद पायो रे। मद छकिया ॥७॥
मान कहे मैं सदा अलबेला। ना कोई गुरु और ना कोई चेला।
हेजी अब जल बिच तरंग समायो रे। मद छकिया ॥८॥

राग सारंग-लूवर। ताल कैरवा॥

हेजी म्हांने निजपुर फाग खेलाजो रसिया; ले चालो ॥टेर॥
काम क्रोध म्हे तो सब ही त्याग्या। कुलवट म्हारा सुणतांई भाग्या।
हेजी म्हांने प्रेम पियाला भर पावो रसिया। ले चालो ॥ १॥
आदि सनातन सुणियो तुमारो। जिण सूं जीव ललचाय हमारो।
हेजी म्हांने जीव सूं ब्रह्म बनाजो रसिया। ले चालो ॥ २॥
तुम सो पीव न मुझ सी नारी। औरन के संग जिमे न यारी।
हेजी म्हासूं अब के भेद मिटावो रसिया ले चालो ॥ ३॥
थांसू लूवर घणी सुहावे। और भेद सगला मिट जावे।
हेजी म्हांने अपणे बीच रलावो रसिया। ले चालो ॥ ४॥
मैं हूँ कुंमारी थे ब्रह्मचारी। आदि अनादि प्रीत हमारी।

हेजी म्हांने अबके मत छिटकावो रसिया । ले चालो ॥ ५ ॥
म्हे थांरे संग घूमर लेसां । थांरे कुंड में म्हे मिल रहसां ।
हेजी अब माया ब्रह्म भेद मिटावो रसिया । ले चालो ॥ ६ ॥
आपां दोई उण नगरी रा वासी । जहाँ पर रहत मुक्ति नित दासी ।
हेजी अब भूलां ने फेर बतावो रसिया । ले चालो ॥ ७ ॥
माने कहे रहूँ नित अलबेली । नाथ साथ बिन रहूँ न अकेली ।
हेजी म्हांने अब मत दूर हटावो रसिया । ले चालो ॥ ८ ॥

राग सारंग-लूवर । ताल कैरवा ॥

हेजी थांने कौन करी म्हांसू न्यारी, दुख पायो ॥ टेर ॥
न्यारो भेद दोय में आयो । जद थे संगलो जगत रचायो ।
तू ही बणी पुरुष नारी । दुख पायो ॥ १ ॥
तव मम घूमर होत सदाई । अखिल विश्व घूमे इण मांई ।
तू भूल गई सही दुख भारी । दुख पायो ॥ २ ॥
नित लूवर तुम हम संग लेवो । जगत खेल मैं क्यों मिल देवो ।
तेरी मेरी अमर यारी । दुख पायो ॥ ३ ॥
आदि सनातन कदे न टूटे । ऐसी मौज कोई ज्ञानी लूटे ।
क्या जाणे नर व्यभिचारी । दुख पायो ॥ ४ ॥
निजपुर निश्चय कर मन मांई । है सर्वत्र आपे तू सांई ।
अपणे आप बणी तू न्यारी । दुख पायो ॥ ५ ॥
तू ही है नाथ नाथ है तो में । मैं हूँ तुझ में तू है मो में ।
जैसे महँदी में लाली इकसारी । दुख पायो ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु रात मिटाई । मान महल मांय दिरसाई ।
दूर कियो विष रस खारी । दुख पायो ॥ ७ ॥

राग सारंग-लूवर । ताल कैरवा ॥

हेजी थेतो समझ सैन घर आवो सजनी । घर आवो ॥ टेर ॥
चोर नगरिया काहे को जावो । पोल पन्थ में क्यों शान गमावो ।

राग सारंग तर्ज होली के रसिये की। ताल कैरवा ॥

हां रे खेलण आई रे, दुनिया री शंका दूर हटाई रे। खेलण आई रे ॥टेर॥
लोक लाज कुल री मरयादा सबने दिवी मिटाई रे।
प्रेम पीताम्बर पहर सखी मन में उमगाई रे। खेलण० ॥१॥
सतगुरु मिलिया सामने स जद आगे होय बतलाई रे।
आज फागण रे चौक में म इण हिमत बंधाई रे। खेलण० ॥२॥
सतगुरु शब्द सुण्या जद सुरता मंद मंद मुस्काई रे।
भर पिचकारी मार शब्द री तर होय जाई रे। खेलण० ॥३॥
लाय पिचकारी भीजी रँग में ज्ञान गुलाल उड़ाई रे।
लाल ही लाल दूजा रँग मिट गया एक रँग मांई रे। खेलण० ॥४॥
वाद-विवाद छूटे पिचकारयां तन-मन सुध बिसराई रे।
थर थर थर थर कप रही तनकी सुधि नांई रे। खेलण० ॥५॥
वचन विलास थाक गया सगला मुख से बोले नांई रे।
बेगम होय गुरु चरणों में जा लिपटाई रे। खेलण० ॥६॥
शरण जाण सतगुरु यूँ उणने अपनी गोद बिठाई रे।
गोद बैठाय भेल अन्तर में मेट जुदाई रे। खेलण० ॥७॥
मान कहे मेटी सब ममता दूना भेद भगा रे।
आप आप में आप भई अब आय न जाई रे। खेलण० ॥८॥

राग सारंग तर्ज होली के रसिये की। ताल कैरवा ॥

हां रे सुरता गैली रे, हो गई रे आ मनडेरी चेली रे। सुरता गैली रे ॥टेर॥
भरम फाग बिच रात दिवस-आ होय रही अलबेली रे।
अकलहीण री आकूती: मुट्ठी भर ले ली रे। सुरता० ॥१॥
वर्ण आश्रम री भूल भंग इण भर भर प्याली पी ली रे।
अपणे आपने भूल संग जीव रो कर चाली रे। सुरता० ॥२॥
झूठ झगड़े री झोली लेने होय गई अलबेली रे।
अन्धा धुन्ध री गुलाल उण झोली में ठेली रे सुरता० ॥३॥

देवनाथ गुरु बड़े परिश्रम सूँ सुरता ने मेली रे।
दौड़ दौड़ कर बाहर जाती ने घर में लेली रे। सुरता० ॥४॥
मानसिंह कहे अवे रेवे ज्यूँ जो आ रहती पहली रे।
तो जन्म मरण रा बन्ध तोड़ हो जात अकेली रे। सुरता० ॥५॥

राग सारंग तर्ज होली के रसिये की। ताल कैरवा॥

हारे रूप निज अपणो रे, ममता रो अबके नाश करणो रे। रूप निज० ॥टेर॥
घणा जनम तो मुफत गमाया, अबके नहीं गमाणो रे।
ब्रह्मपुरी रो पटो लिखा कर राज जमाणो रे। रूप निज० ॥१॥
घणा दिवस तक मर्‌या ने जनम्या अब नहीं आणो जाणो रे।
निज आनन्द मिल्यां पीछे नहीं और दिखाणो रे। रूप निज० ॥२॥
जीव जीव को झगड़ो पड़ियो ओ अबके निमटाणो रे।
ब्रह्म स्वरूप निजानन्द मांहि चट मिल जाणो रे। रूप निज० ॥३॥
दूध में घृत और मीठो खांड में जल में तरंग समाणो रे।
बरफ डली ज्यूं पाणी हो पाणी बहजाणो रे। रूप निज० ॥४॥
ममता नार नखराली इण तो जीव रो भाव जमाणो रे।
देह भाव मिट निज में करणो ठौड़ ठिकाणो रे। रूप निज० ॥५॥
मन मन उलझ रयो जग सारो मनरो खोज उठाणो रे।
बे फिकरी में होय, हमेशा फागण गाणो रे। रूप निज० ॥६॥
देवनाथ गुरु हाथ गह्यो जद पल में कियो पयाणो रे।
मनसिंह चढ सोहन शिखर पर ढोल घुराणो रे। रूप निज० ॥७॥

तर्ज रंजे के गीत की। ताल कैरवा॥

घूमे मतवालो आप निरालो दुनियां मांय ने। आप निरालो दुनिया मांयने,
ए हां हां हां हां। घूमे मतवालो० ॥टेर॥
बिना देह बिन देव है सरे, ना काई श्वास शरीर। हां हां बिना० ।
खेल अ अन्डित खेल रयो स, इण भव सागर रे तीर। हां हां खेल० ।
सब कुछ खेल रहे नित न्यारो [illegible] । घूमे मतवालो० ॥१॥

तरह तरह के साज बजावे आप रयो नित गाय। हां हां तरह तरह० ।
नाचे निरत करे ओ अंग बिन, देखे कोई कोई पाय। हां हां नाचे० ।
जो देखे सो देखे उणने, जीवतड़ो मर जाय रे। घूमे मतवालो० ॥२॥
जीव ही ब्रह्म ब्रह्म सो जीव है, यों करके कोई जाणे। हां हां जीव ही० ।
मान गुमान मेट कर सगला, मन चिन्ता नहीं आणे। हां हां मान गुमान० ।
जद वसुधैव कुटम्बकं जाणे, निर्भय मौजां मांणे रे। घूमे मतवालो० ॥३॥
अपणो आंसक आप है स ओ, रींझे आप के मांय। हां हां अपणो० ।
आप आपने भूल गयो स ओ, जीव होय दुख पाय। हां हां आप आपने० ।
आप आपरी खबर करी जद, दूजो दरसे नांय रे। घूमे मतवालो० ॥४॥
नहीं नारी नहीं पुरुष है स ओ, नहीं गृहस्थ सन्यास। हां हां नहीं नारी० ।
सब घट उण में रहत है स कोई, सब घट उणरो बास। हां हां सब घट० ।
जैसे कुंभ जड़ो जल बैठो, जल ही जल में बास रे। घूमे मतवालो० ॥५॥
देवनाथ सतगुरु मिल्या स म्हांने, दीनो परम विवेक। हां हां देवनाथ० ।
मान ओलख्यो आपने स अब, मार रेख पर मेख। हां हां मान० ।
घर बैठां ही मिल गयो स म्हांने, कौण धरे अब भेष रे। घूमे मतवालो० ॥६॥

तर्ज गरबा गुजराती । ताल कैरवा ॥

ओ तो अमर बनड़े ने सुरता पाविर्यो रे। घर मांही अपणे
पीव ने रीझावियो रे। टेर॥

ऐ तो कइयक मरिया ने कइयक जन्मिया रे।
ऐ तो रोणे हंसणे में दुख पावियो रे॥१॥
आ तो सरब सुहागण सुरता हो रही रे।
ओ तो सुपने, दुहाग नहीं आवियो रे॥२॥
इण तो दूणो कियो है सुरता ज्ञान रो रे।
दण तो पीया ने हंस स गले लगावियो रे॥३॥
अब जाय ने वसिया है उण लोक में रे।
उठे काल नेड़ो नहीं आवियो रे॥४॥

ओ तो प्यालो पीयो है पीया प्रेम रो रे।
अब दुनिया रो भरम उडावियो रे ॥५॥
एतो मल विक्षेप आवरण तोड़िया रे।
जद घूंगट रे पट ने उघड़ावियो रे ॥६॥
पिव प्यारी ने प्यारी पिव एक है रे।
जद चारों दिश आनन्द छावियो रे ॥७॥
ओ तो मान बलिहारी जावे नाथ री रे।
म्हांने नाथ स्वरूप मिलावियो रे ॥८॥

तर्ज गरवा गुजराती। ताल कैरवा ॥

कोई हिम्मत होवे तो म्हारे सामो देखीजो, ओ तो मरजीवों रो ज्ञान कोई आयने ले लीजो ॥टेर॥

म्हे तो पहला मारों ने फेर जीवाय दों जी।
कोई मरनो हुवे तो इण में पांव दे दीजो ॥१॥
आठे जीवा मरणे रो कोई काम नहीं है जी।
कोई जीवंहोवो तो म्हासूं अलगा रहीजो ॥२॥
ओ तो प्यालो पावों म्हे पूरण ज्ञान रो जी।
उठे देह तणे रो सगलो भाव तज दीजो ॥३॥
कोई म्हारे तो सामो देखे कोई म्हां जिसा रे जी।
कोई पछे तो म्हारे मांय रलने रहलीजो ॥४॥
कोई मरजीवा मिलिया म्हांने नाथजी रे जी।
थांने मरजीवा होणो तो पहला शीश दे दीजो ॥५॥
ओ तो मरने जीयो है वीर मानसी रे जी।
पण मारण करड़ो है बात साची सुण लीजो ॥६॥

तर्ज गरवा गुजराती। ताल कैरवा ॥

कोई मत आवो मन सुड़दो रे निज गांव में रे। के लेवूं ला शीश उतार ॥टेर॥

कोई जीवतां रो जरा अठे नहीं काम है रे।
ये तो जावोला प्राणां ने हार ॥१॥
कोई पथ मुड़दां रो सब सूं न्यारो है रे।
ऐ तो न्यारा है मुड़दां तणा विचार ॥२॥
ऐ तो मुड़दा जिकां ने मन परवा नहीं रे।
ऐ तो जाणे जग सगली ने उजाड़ ॥३॥
ऐ तो इन्द्रादिक ने ही जाणे रक सा रे।
ऐ तो बणिया रेवे सारां रा सिरदार ॥४॥
ए तो मिलिया मन मुड़दा सतगुरु नाथजी रे।
ज्यांरो मान लियो है शरणो धार ॥५॥

तर्ज गरबा गुजराती। ताल कैरवा ॥

सतगुरु सुरमे री डब्बी तो म्हारे हाथ दे दीजो।
सुरमो सार्‌यों पाछे तो थोंरी पाछी ले लीजो ॥टेर॥
श्रो तो मोह अन्धियारो म्हारे छायं रयो रे।
जिण सू सतरो सुरमो थे डब्बी मांय भरदीजो ॥१॥
सुरमो सार्‌यों ने सब को मन मोवियो रे।
जैसे सजय ने कीयो ऐसे म्हांने कर दीजो ॥२॥
ओतो न्यारा न्यारा सू म्हांने दूर कर दीजो।
भासे अपणोई रूप एसी दृष्टि दे दीजो ॥३॥
ओतो गीता उपनिषद डब्बी सोवणी रे।
म्हारे हृदय में आप सतगुरु सही धर दीजो ॥४॥
ओतो मान सुरमे ने ऐसो सारियो रे।
म्हारा जन्म मरण रा दुःख दूर हर लीजो ॥५॥

तर्ज ब्रज के रसिये की। ताल कैरवा ॥

ऐसो अजर अमर रस पाऊ, पीकर फिर नहीं आते हैं ॥टेर॥
यह रस जो नहीं पीते वा से फिर जाते हैं।

जग से मिटकर जगमें रहते बाहर न जाते हैं ॥१॥
जैसे तरंग मिले जल भीतर, यों मिल जाते हैं।
करम करे नहीं डरे करम से मौज उड़ाते हैं ॥२॥
मेरा रस तो वे पीते जिन्दे मर जाते हैं।
हर्ष शोक और राग द्वेष का मूल मिटाते हैं ॥३॥
मेरा रस जिसने पीया, नहीं स्वांग जमाते हैं।
गुप्त बात वे कुछ नहीं रखते ढोल बजाते हैं ॥४॥
खुली दुकान चौड़े बजार में नहीं छिपाते हैं।
जिनको पीना शिर धर पीते यांही समाते हैं ॥५॥
जोर जबर नहीं करें किसी से सही बताते हैं।
जिनको मजा इसमें आया फकमार पी जाते हैं ॥६॥
खरी सुनाऊं कपट न राखूं वे सुन जाते हैं।
मरने से डरते नहीं मनसे वे दौड़ के आते हैं ॥७॥
मान कहे हमने तो पीया और सब को पिलाते हैं।
सब कुछ करें करें नहीं कुछ भी नीन्द धुराते हैं ॥८॥

तर्ज कोरे कागलिये की। ताल कैरवा ॥

ओ आलम बड़ो जलाल, कृष्ण मुरारी रे ॥टेर॥
लीला करे न्यारी न्यारी। आप सभी लीलाधारी।
ओ खेल रचो गोपाल, कृष्ण मुरारी रे ॥१॥
आपही जगत रचाय रयो। सबने भरम भुलाय रयो।
ओ खेले अजब धमाल, कृष्ण मुरारी रे ॥ २ ॥
सन्त मुनीजन हार गया। नेति नेति वेद कया।
यांही लीला अजब विशाल, कृष्ण मुरारी रे ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु जान लियो। सोही माल पहिचान लियो।
ओ है लालन को लाल, कृष्ण मुरारी रे ॥ ४ ॥

। तर्ज केरे काजलिये की । ताल कैरवा ॥

सन्तो हो जावो तैयार रंग भर खेलण ने ।।टेर।।
भरम भूत ने त्याग देवो, मनमें त्याग वैराग लेवो।
निकलो नी घर सूं बार । रंग भर खेलण ने ॥१॥
पाच पचीसू जो आवे; देखत ही मन डर जावे।
वारे मारो शब्द री मार । रंग भर खेलण ने ॥ २॥
चौड़े चौक में खेल बन्यो; हिल मिल जोत जगाय रयो।
वह हद बेहद सूं पार । रंग भर खेलण ने ॥ ३ ॥
आ जबरी है ममता नारी; इण सूं मनवे रीं यारी।
आ ठेठ चढी ले पछाड़ । रंग भर खेलण ने ॥ ४ ॥
पाच विषय तो है खोटा; मद में भर्योड़ा है मोटी।
इयो कईयाँ री शान बिगाड़ । रंग भर खेलण ने ॥ ५ ॥
मान कहे मत चूकीजो; अपणे रूप ने लख लीजो।
हरदम रहीजो हुशियार । रंग भर खेलण ने ॥ ६ ॥

तर्ज रुणझुणिये की । ताल कैरवा ॥

प्यारी क्यों भटके तू बार, घर में आय परी ।।टेर।।
प्यारी इत उत किण ने जोय रही तू खड़ी खड़ी।
थारे घर मांही सरदार । घर मे आय परी।।१।।
ओ खेल खिलाड़ी खेल रयो खुद ईक रसरी।
ओ मधुर बजावे सार । घर मे आय परी ।।२।।
प्यारी निज घर अपणो खोज्यो नहीं तू बाहर फिरी।
अब घरमें वस्तु संभार । घर में आय परी ।।३।।
प्यारी देव अनेको पूजिया जद मार पड़ी।
अब पाय ले निज भरतार । घर में आय परी ।।४।।
प्यारी मान कहे री बावरी कहूं खरी खरी।
नहीं तो फेर पड़ेला मार । घर में आय परी ।।५।।

भजन। ताल कैरवा ॥

म्हांने मत पूछो रे म्हे आया रे कठे सूं, चालणो होवे तो कोई चालो रे।
ओतो मन मरजीवों रे देश॥टेर॥
आवण जावण म्हारे है नहीं कोई, आवो तो नहीं है रोकण वालो रे। ओतो० ॥१॥
आदि अंत नहीं है उण घर रो, जाणे कोई जाणन हारो रे। ओतो० ॥२॥
म्हारे देश में पुरुष विदेही, नहीं गोरो नहीं कालो रे। ओतो० ॥३॥
घड़ी रे एक नहीं वो रेवे अकेलो, पुरुष बड़ो है नखरालो रे। ओतो० ॥४॥
संतदे रूप्यो फिर रेवे जग में, देखतो थको है निरालो रे। ओतो० ॥५॥
मानसिंह उण देश में पहुँच्यो, हुकुम रेवे मतवालो रे। ओतो० ॥६॥

भजन। ताल कैरवा ॥

बिना रे पते है देश जो थारो, चालतां जीव घबरावे रे।
ओतो नहीं भावे एड़ो देश॥टेर॥
आवण जावण जद है नहीं उण में, तो भीड़ घणी हुय जावे रे। ओतो० ॥१॥
इसड़ी भीड़ मांय जाय कई करसों, कुण इसड़ो दुख पावे रे। ओतो० ॥२॥
देह बिना जद पुरुष विराजे, वो कई म्हांने वचन सुणावे रे। ओतो० ॥३॥
कठे रे जाय कई करे म्हारी सुरता, जठे कछु समझ नहीं आवे रे। ओतो० ॥४॥
सब कुछ खेले और खेले ना कुछ भी, जिण सूं कुण प्रीत लगावे रे।

इसड़े देश में तो आप ही विराजो, म्हारो तो चित्त नहीं चावे रे। ओतो० ॥६॥
कहे बंक भूपति है विकट मग, म्हांसूं तो चाल्यो नहीं जावे रे। ओतो० ॥७॥
आप ही चाल सको इसड़े मग, समरथ चाहे सो दिखावे रे। ओतो० ॥८॥

तर्ज "नागजी" की। ताल कवाली ॥

कवि कर आलस मत सोय रे, तने लेमूं संग छोडूं नहीं, हो हो लालाजी ॥टेर॥
दूर न जाणो कोय रे कवि, देश दिखाऊँ तने, मायने; हो हो लालजी ॥१॥
तूं ही है विदेही आप रे कवि, सुपने जन्मे नांय रे; हो हो लालजी ॥२॥
आतो माया है थारी छाय रे कवि, आ तुझ सूं न्यारी नहीं; हो हो लालजी ॥३॥
आवण जावण उठे नांय रे कवि, उठे कोई भेलो हुवे नहीं, हो हो लालजी ॥४॥
आदि अनादि खेल रे कवि, खेल बण्यो नहीं आज सूं; हो हो लालजी ॥५॥
खेलण वालो है एक रे कवि, ओतो नहीं धापे इण खेल सूं; हो हो लालजी ॥६॥
कवि पीय पीय अब पीय रे ओतो, प्यालो है पूरण प्रेम रो; हो हो लालजी ॥७॥
कवि पीतांई चढ़ जाय रे ओतो, देखे आनन्द वण देश रो; हो हो लालजी ॥८॥
कवि पा खुद मन सोय जाय रे, कोई बरजे जिकां ने ई पावणो; हो हो लालजी ॥९॥
कहे मान यह बात प्रचार रे कवि, ब्रह्म धन नांय छिपावणो, हो हो लालजी ॥१०॥

तर्ज बाणी की। ताल कैरवा ॥

साधो भाई मुझमें जगत विलाया होजी। नहीं जग होयो नहीं जग होवे,
सब यह मेरी माया ॥टेर॥
मैं ही जीव ईश सो मैं हूं, आदि अनादि थाया होजी।
मैं ही मुझको जान गया जब, नाम और रूप मिटाया ॥१॥
मैं ही नाना मैं फिर कुछ ना, ऐसा खेल रचाया होजी।
मैं ही खेल्या और मैं ही देख्या, मैं ही रोय हसाया ॥२॥
होन मिटन मिथ्या ये दोनो, भूल भरम दुख पाया होजी।

आप को भूल अपर को जोया, फिर फिर गोता खाया ॥३॥
जैसे घट जल भरिया होवे, सूरज अनन्त दिखाया होजी।
दरपण हिले मूरत हिल जावे, ना कोई हिल्या हिलाया ॥४॥
छाया भूत डरे ज्यों बालक, मिथ्या ही दरसाया होजी।
सर्प में चान्दी रज्जु में सर्प, कल्पित भाव डराया ॥५॥
सुपने भर्‌या काष्ठ में जल गया, जाग्याथा ज्यूं थाया होजी।
ऐसे ही जान ब्रह्म में सृष्टि, नहीं घड़िया न समाया ॥६॥
काशी मगहर दोनो मिथ्या, आप ही बन्ध्या छुडाया होजी।
वहां है न मुक्ति वहां नहीं बन्धन, मान जान विसराया ॥७॥

राग भैरव। ताल दीपचन्दी॥

क्या कर सकी है मुक्ति हमारा, मुक्ति को मुक्ति हूं देने हारा ॥टेर॥
हरिद्वार जाऊं नहीं काशी, भेष न धरूं न बनूं सन्यासी;
रहूं शामिल और सबसे न्यारा ॥१॥
मुक्ति करे नित मेरी चाहा, मैं हूं अजन्मा और अचाही;
मेरे अन्दर है जग सारा ॥२॥
मेरी राह सकल से न्यारी, जो जाने कोई असल व्यापारी;
जिसने मन निज मन कर डारा ॥३॥
मानसिंह कहे सुनो गुनि ज्ञानी, मिला रहूं जैसे बरफ में पानी;
धूप पड़ी जल हो गया सारा ॥४॥

राग सोरठ, तर्ज कमी की। ताल रूपकै॥

पायो मैं तो निज सर्वंगी रूप, ऐसा महा भूवन को भूप;
सर्वंगी ओलखयो रे लाल ॥टेर॥
है सर्वंगी खेले सब में, जिसने जाणे नहीं संसार।
इण सर्वंगी ने जाण ले तो, उतर जावे पार। सर्वंगी ओलख्यो० ॥१॥
सभी अंग ने खोजे पहिला, पिन्ड ब्रह्मण्ड ओलखाय।
पिण्ड में ब्रह्मण्ड दरसे, सर्वंगी पद पाय। सर्वंगी ओलख्यो० ॥२॥

गया जोवण फिर न आया, मिल्या सर्वंगी रे मांय।
दोय नहीं जब कैसे आवे, अपणो आप केवाय। सर्वंगी ओलख्यो० ॥३॥
जीव ब्रह्म ने एक कीया, ज्यांरे माया निजर नहीं आय।
माया ब्रह्म और ब्रह्म माया, दूजो कौन दरसाय। सर्वंगी ओलख्यो० ॥४॥
नाथ जी सर्वंगी मिलिया, दियो अंग प्रत्यंग बताय।
एक पिन्ड अनन्त ब्रह्मण्ड है, सब मेरी इच्छा मांय। सर्वंगी ओलख्यो० ॥५॥
यों सर्वंग पद ढूंढ लेवे, सो हो जावे निहाल।
अष्ट सिद्ध नव निधि हाजिर, हाजिर मन बैताल। सर्वंगी ओलख्यो० ॥६॥
मान कहे निज रूप अपणो, आपही लियो विचार।
थू सर्वं ।। होय आवे तो, पूजे सब संसार। सर्वंगी ओलख्यो० ॥७॥

राग सोरठ, तर्ज फकीरी की। ताल दीपचन्दी ॥

सो जाणे वैराग्य, अघोरी रो, सो जाणे वैराग्य
पंथ अघोर में यो नर आवे, घोर नींद देवे त्याग। ॥ टेर ॥
हां जन्म अनन्त नींद में सूता, सो भड़क उठ्या अब जाग।
ज्ञान गुफा में आसण धरियो, स्वपने न ऊपजे राग। अघोरी रो० ॥ १ ॥
हाँ आशा तृष्णा मन सूं त्यागी, खेले ब्रह्म सू फाग।
सब रंग में बेखटके खेले, पण लगण देवे नहीं दाग। अघोरी रो० ॥ २ ॥
हाँ वह सर्वंगी सब का संगी, ज्यांरे जात पांत नहीं साख।
पथा पंथ भेद सब छेद्या, वाल जाल कर दिया राख। अघोरी रो० ॥ ३ ॥
हां ममता नित ही बाट रवे जोती, वा देवे उड़ावती काग।
आशा तृष्णा पांच विषय पर, धर दीवी धवड़े आग। अघोरी रो० ॥ ४ ॥
हाँ देवनाथ गुरु मिलया अघोरी, जिण लगाई एड़ी लाग।
मान कहे नहीं पड़ूँ पोल मे, म्हारी बाट जोवो इकनाक। अघोरी रो० ॥ ५ ॥

राग बिहाग, तर्ज बागी की। ताल कैरवा ॥

एक दिन राम भयो रे वैरागी रे। धार वैराग्य भाग सुप छोड्या, अरथ जहर ज्यूँ लागी रे ॥ टेर ॥

दशरथ घर में इन्द्र भोग सुख, सो सब दिया छिटकाई रे ।
होय निराश सकल तन सूक्यो, जीवन वृथा लखाई रे ॥१॥
मुनि वशिष्ठ और विश्वामित्र थे, दशरथ घर चल आया रे ।
सुन्यो वैराग्य त्याग रघुवर को, अपने पास बुलाया रे ॥२॥
उत्तर प्रश्न अनेकों कीना, कह्यो रह्यो नहीं छाड्यो रे ।
मुनि वशिष्ठ ऐसो उनको रगड्यो, भाडो भरम रो फाड्यो रे ॥३॥
छः प्रकरण विधि विधि कहके, कियो राम सिनाणो रे ।
त्याग को त्याग राम को दीयो, भयो वैराग्य धूलधाणी रे ॥४॥
नकली वैराग्य राम को उड गयो, असली वैराग्य उण लीनो रे ।
है सो ब्रह्म जगत कुछ नहीं है, ऐसो अमृत पीनो रे ॥५॥
सत कहूं वंक झूठ मत जाणो, योगवशिष्ठ पढ़ लीजे रे ।
पढ़ले सुणले समझ विचारजे, फेर प्रश्न मोसूं कीजे रे ॥६॥
त्याग ग्रहण को खटको मेट्यो, रामचन्द्र अलबेला रे ।
खरदूषण रावण आदि मारे, जाण्यो जगत सब खेला रे ॥७॥
ऐसो वैराग्य वंक तूं ले ले, तो भव सूं तिर जावो रे ।
मानसिंह अनमोल रतन ने, ठगों सूं मती रे ठगावो रे ॥८॥

॥ दोहा ॥

त्याग वैराग्य को खन्डते, सो नृप नांय सुहाय ।
गोरख भरत से वीर नर, त्याग से अमर कहाय ॥

॥ चौपाई ॥

रे जग कैसी भूल भूलाई । असल त्याग को जाने नांई ॥
भूप भरत त्यागी नारी । विक्रम भूप रह्यो घरबारी ॥
घर में रह्यो बांहर नहीं धायो । लोक सेवा कर राज कमायो ॥
पर दुख हरण विक्रम सो राजा । निज स्वारथ नहीं कीनो काजा ॥
भूप भरत को तो कोई कोई गावे । विक्रम सम्वत लिखो नित आवे ॥
सो कविवर अब मोय बतावो । भरत बड़ो कि विक्रम कहावो ॥

धूप दीप पूजा करी हो सत्गुरु चरणामृत कियो पान।
तो कर गुनाह मैं कर दियो हो सतगुरु सेवक कयो रे जबान ॥ ३ ॥
शिष्टाचार तो होत है हो गुरुवर भाषे वेद पुराण।
इण कारण मैं आपरो हो सतगुरु सेवक कहे नृप मान ॥ ४ ॥

राग माड़-मलार तर्ज "सोदेसूमरे" की । ताल कैरवा ॥

भो मन में एक उपजी शंक महान नरपति म्हारा हो।
कोई शंका तो मिटाबो अपणे शिष्य री हो; म्हारा राज ॥ १ ॥
भूप भरत समभयो ज्ञान विज्ञान नरपति म्हारा हो।
इण फिर क्यों घर छोड़ लियो सन्यास ने हो; म्हारा राज ॥ २ ॥
राज थकां तो विपयन मांय उभाय नरपति म्हारा हो।
वो होयो रे सन्यासी जद सुख पावियो हो; म्हारा राज ॥ ३ ॥
उण ग्रहस्थ थकां तो देखी पिंगला नार नरपति म्हारा हो।
कोई उण रे जालों ने वो नहीं जाणियो हो, म्हारा राज ॥ ४ ॥
जिको भूप किम समभयो ब्रह्म वेदान्त नरपति म्हारा हो
कोई नारी रे दुखड़े सू घर ने छोड़ियो हो, म्हारा राज ॥ ५ ।
आ शंका म्हारो लारो छोड़े नाँय नरपति म्हारा हो।
कोई आप ना मिटाओ तो कौण मिटावसी हो; म्हारा राज ॥ ६ ॥
सुनी बात जब हँसिया मन ही नरेश नरपति म्हारा हो।
कोई शंका तो कर दीवी आगे नाथ ने हो; म्हारा राज ॥ ७ ॥
नाथ कहे थासू छिपी नहीं कुछ मान नरपति म्हारा हो।
कोई थारो तो कयोड़ो झट पट मानसी हो, म्हारा राज ॥ ८ ॥
तुम तो नरपति चवदे विद्या निधान नरपति म्हारा हो।
कोई म्हारे तो विद्या एक आतम ज्ञान री हो, म्हारा राज ॥ ९ ॥
आतम विद्या सारों री सिरताज सतगुरु म्हारा हो।
कोई जिण सूँ लख पायो है सुत मानसो हो, म्हारा राज ॥ १० ॥

तर्ज मारवाड़ी "बींजे" की। ताल धमाल ॥

चतुर कवि बंक है रे थारी और कोई गम जाणे नांय ॥ टेर ॥

तू तो जाणे सगली वारता रे कविवर फिर मोहे पूछण चाय।
लोकोपकार रे कारणे रे कविवर मो सूं लग्यो रे कहाय ॥ १ ॥
चवदे विद्या तो भरत जाणतो रे कविवर एक कमी थी उण मांय।
ब्रह्म विद्या सूँ अलगो रयो रे कविवर जिण सूँ रयो दुख पाय ॥ २ ॥
ब्रह्म विद्या गोरख दिवी रे कविवर जद आयो साचो ज्ञान।
असली रूप पहचानियो रे कविवर जद भयो उण ने भान ॥ ३ ॥
जद जांण्यो वेदान्त ने रे कविवर जद होयो उण ने हास।
पछे तो घणोई पछतावियो रे कविवर वृथा ही लियो सन्यास ॥ ४ ॥
स्वांग धरयो नहीं पलट सक्यो रे कविवर लाजे बडां री रीत।
इण कारण पलट्यो नहीं रे कविवर मन मांय भयो रे निचीत ॥ ५ ॥
शिष्य भरत नहीं मूँडिया रे कविवर नहीं रे बधायो भेष।
आप पायो निज रूप ने रे कविवर राखी भेष री टेक ॥ ६ ॥
गीता भाष्य पीछे कियो रे कविवर जब ले लियो सन्यास।
आंधो भेलो आंधो नां भयो रे कविवर सही सही करदी प्रकास ॥ ७ ॥
फेर शंका हो तो कैय दे रे कविवर सो मैं देऊँ रे मिटाय।
अब की शंका मता राख जे रे कविवर बसणो ब्रह्म रे मांय ॥ ८ ॥
मान कही सो मान ली रे कविवर नहीं तो गुरां री ले ले साख।
अमृत पीणो कठिन है रे कविवर भर भर प्याला चाख ॥ ९ ॥

॥ सवैया ॥

शब्द के शेल सहे नहीं शीश पे, बैठे यूंही बातें बनाई।
एक ही शेल जो लाग गयो तब, पार कलेजे के पहुँच्यो जाई।
बातन काम बने कछु नाहीं, बातन में सब लोग ठगाई।
मान कहे कुछ करके चले, जग बीच में यो नर नाम कमाई ॥

॥ सवैया ॥

ब्रह्म वैराग्य धरयो उर में जब, छाय रही दिल में एकताई।
चित्त को अपने किया चेला, मिथ्या अहंकार को दीन बहाई।

भूप दीप पूजा करी हो सद्गुरु चरणामृत कियो पान।
तो फरमाया मैं कर दियो हो सतगुरु सेवक कयो रे जवान ॥ ३ ॥
शिष्टाचार तो होत है हो गुरुवर भावे वेद पुराण।
इण कारण मैं आचरो हो सतगुरु सेवक कहे नृप मान ॥ ४ ॥

राग माढ-मलार तर्ज "सोहेयुमरे" की । ताल कैरवा ॥

मो मन में एक उपजी शंक महान नरपति म्हारा हो।
कोई शंका तो मिटावो अपणे शिष्य री हो; म्हारा राज ॥ १ ॥
भूप भरत समझयो ज्ञान विज्ञान नरपति म्हारा हो।
उण फिर क्यों घर छोड़ लियो सन्यास ने हो; म्हारा राज ॥ २ ॥
राज थकां तो विषयन मांय लुभाय नरपति म्हारा हो।
वो होयो रे सन्यासी जद सुख पावियो हो; म्हारा राज ॥ ३ ॥
उण गृहस्थ थकां नो देखी पिंगला नार नरपति म्हारा हो।
कोई इण रे जालों ने वो नहीं जाणियो हो; म्हारा राज ॥ ४ ॥
जिको भूप किम समझयो ब्रह्म वेदान्त नरपति म्हारा हो
कोई नारी रे दुखड़े सूं घर ने छोड़ियो हो, म्हारा राज ॥ ५ ॥
आ शंका म्हारो लारो छोडे नांय नरपति म्हारा हो।
कोई आप ना मिटाओ तो कौण मिटावसी हो; म्हारा राज ॥ ६ ॥
सुनी बात जब हँसिया मन ही नरेश नरपति म्हारा हो।
कोई शंका तो कर दीवी आगे नाथ ने हो, म्हारा राज ॥ ७ ॥
नाथ कहे थांसू छिपी नहीं कुछ मान नरपति म्हारा हो।
कोई थारो तो कयोड़ो झट पट मानसी हो; म्हारा राज ॥ ८ ॥
तुम तो नरपति चवदे विद्या निधान नरपति म्हारा हो।
कोई म्हारे वो विद्या एक आतम ज्ञान री हो; म्हारा राज ॥ ९ ॥
आतम विद्या सारो री सिरताज सतगुरु म्हारा हो।
कोई जिण सूँ लाभ पायो है सुत मानसी हो; म्हारा राज ॥ १० ॥

तर्ज मारवाड़ी "बींजे" की। ताल धमाल ॥

चतुर कवि बंक है रे थारी और कोई गम जाणे नांय ॥ टेर ॥

तू तो जाणे सगली वारता रे कविवर फिर मोहे पूछण चाय।
लोकोपकार रे कारणे रे कविवर मो सूं लग्यो रे कहाय ॥ १ ॥
पत्रदे विद्या तो भरत जाणती रे कविवर एक कमी थी उण मांय।
ब्रह्म विद्या सूँ अलगो रयो रे कविवर जिण सूँ रयो दुख पाय ॥ २ ॥
ब्रह्म विद्या गोरख दिवी रे कविवर जद आयो साचो ज्ञान।
असली रूप पहचानियो रे कविवर जद भयो उण ने भान ॥ ३ ॥
जद जांण्यो वेदान्त ने रे कविवर जद होयो उण ने हास।
पछे तो घणोई पछतावियो रे कविवर वृथा ही लियो सन्यास ॥ ४ ॥
स्वांग धरयो नहीं पलट सक्यो रे कविवर लाजे बडां री रीत।
इण कारण पलट्यो नहीं रे कविवर मन मांय भयो रे निचीत ॥ ५ ॥
शिष्य भरत नहीं मूँडिया रे कविवर नहीं रे बधायो भेष।
आप पायो निज रूप ने रे कविवर राखी भेष री टेक ॥ ६ ॥
गीता भाष्य पीछे कियो रे कविवर जब ले लियो सन्यास।
आंधो भेलो आंधो ना भयो रे कविवर सही सही करदी प्रकास ॥ ७ ॥
फेर शंका हो तो कैय दे रे कविवर सो मैं देऊँ रे मिटाय।
अब की शंका मत राख जे रे कविवर बसणो ब्रह्म रे मांय ॥ ८ ॥
मान कही सो मान ली रे कविवर नहीं तो गुरां री ले ले साख।
अमृत पीणो कठिन है रे कविवर भर भर प्याला चाख ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

शब्द के शैल सहे नहीं शीश पै, बैठे यूँही बातें बनाई।
एक ही शैल जो लाग गयो तब, पार कलेजे के पहुँच्यो जाई।
बातन काम बने कछू नाहीं, बातन में सब लोग ठगाई।
मान कहे कुछ करके चले, जग बीच में वो नर नाम कमाई ॥

॥ सवैया ॥

ब्रह्म वैराग्य धरयो उर में जब, छाय रही दिल में एकताई।
चित्त को अपने किया चेला, मिथ्या अहंकार को दीन बहाई।

वृत्ति नार को मूंड करी चेली, निर्भय रहे इस नगर के मांई।
भांव अखण्ड दियी गुरु देव ने, सो कबहू नहीं खूटे खाई।
नाथने करन कृपा हम पै तब, असल सन्यास की युक्ति बताई।
मान सन्यास सज्यो अस सुन्दर, वा इत उत अब भटकूँ नाई ॥

राग धनाश्री। ताल बैरवा ॥

वा पुरुषां रो संग; करोरे कोई वां पुरुषां रो संग ॥टेर॥
भली बुरी सबकी सुन लेवे। पिशुन पु वां उत्तर नहीं देवे।
क्रोध न व्यापे अंग। करोरे कोई वा पुरुषां रो संग ॥१॥
सन्त स्वभाव ज्ञान भंडारी। ऊँच न नीच सभी एक सारी।
न्हावे ज्ञान केरी गंग। करोरे कोई वां पुरुषां रो संग ॥२॥
मन के वचन के पाप कर्म के। सचित प्रारब्ध सकल भरम के।
जल जाय जैसे पतंग। करोरे कोई वां पुरुषां रो संग ॥३॥
देवनाथ देवे परगट हेला। अगम पंथ में सूरा खेला।
रह नित मान निसंग। करोरे कोई वां पुरुषां रो संग ॥४॥

राग मंगल। ताल दीपचन्दी ॥

हेली ए अखे रे मण्डल रे माँय, सूरज उगायो हे।
हेली ए जागी ए सुहागण नार उठ मंगल गायो हे ॥टेर॥
हेली ए जीव ब्रह्म दीया खोय, एक है अनामी हे।
हेली ए नहीं ज्यांरे नाम और गाम, है अन्तर्यामी हे ॥
हेली ए बिना ही रूप स्वरूप, सभी में समायो हे। जागी ए० ॥१॥
हेली ए बिन घर अवर स्थान, रेवे अलवेलो हे।
हेली ए न्याती गोती ज्यांरे नांय, रेवे आप अकेलो हे।
हेली ए आज काल सू नांय, अनादि कहायो हे। जागी ए० ॥ ॥
हेली ए हो कोई मरजीवा सन्त, जिकां ने मिल जावे हे।
हेली ए मरने सूँ डरता होय, निजर ज्यांरे नहीं आवे हे।
हेली ए वाँ मुड़दों रो मित्र, वेद यूँ गावे हे। जागी ए० ॥३॥

हेली ए सो मैं अपणो ही आप, अब किणने बताऊँ हे ।
हेली ए भरम नींद देवे छोड़, तो मुझ में मिलाऊँ हे ।
हेली ए हम ही जीव हम पीव, हम आप समायो हे । जागीए० ॥४॥
हेली ए कियो है नाथजी रो साथ, भरम सब मेल्या हे ।
हेली ए मान अगम घर माँय, निर्भय होय खेल्या हे ।
हेली ए सब जग अपणे माँय, न्यारो न दरसायो हे । जागीए०॥५॥

राग मङ्गल । ताल दीपचन्दी ॥

हेली ए मारया रे शब्द रा तीर, पार होय आया हे ।
हेली ए पहिले ले लिया प्राण, पीछे पद पाया हे ॥ टेर ॥
हेली ए उठी है विरह री आग, मानो कोई होरी हे ।
हेली ए जिणमें जल निकल जांय, जिकोंरी मिले जोरी हे ।
हेली ए आठ पहर दिन रात, सोलवां गाया हे । हेली ए ॥१॥
हेली ए 'मनवो भयो है इक रंग, दूजो नहीं आवे हे ।
हेली ए धोयां ही उतरे नांय, जिको किण विध जावे हे ।
हेली ए रोम रोम रग रग माँय उजाला थाया हे । हेली ए० ॥२॥
हेली ए रवि शशि बिना प्रकाश, जोत एक जागी हे ।
हेली ए दूजो नहीं आवे म्हारे दाय, सुरत जाय लागी हे ।
हेली ए अमर पियाजीने पाय, दूजो कुण अब चावे हे ।हेली ए० ॥३॥
हेली ए भया है भेड़ सूँ सिंह, अखण्ड बन जोया हे ।
हेली ए सब जग मेरे आधार, मैं सुख भर सोया हे ।
हेली ए जाग आततायी जीव, भटक दुख पाया हे । हेली ए० ॥४॥
हेली ए नाथ मिल्या है रणधीर, जिन मोय सिखायो हे ।
हेली ए अखिल ब्रह्मांड रो हूँ भूप, यह तिलक लगायो हे ।
हेली ए मान रयो मन मान, महान में समायो हे । हेली ए० ॥५॥

तर्ज एलौकी । ताल कैरवा ॥

कैसे मान ले ए प्यारी, जब रीझे नवल किशोर ॥ टेर ॥

पी प्याला होजा मतवारी, जमरो चले न ज़ोर, एली पी प्याला० ।
अगम पंथरी सेरी सांकड़ी, नेणा करोनी चित चोर ॥१॥
असली पथ जदे तू पावे, तोड़े बन्ध कठोर; एली असली० ।
आठ पौर चौसठ घडी रे, लगी रहे जैसे चकोर ॥२॥
पॉचू चोर पगों तले दे जे, मेटो मनरो सोर ; एली पॉचू चोर० ।
ज्ञान को भान उदय जद हावे, जद सुख दीसे तोर ॥३॥
दूजा बन्ध मेल सब अलगा, पकड़ आपरी डार, एली दूजा० ।
जब प्रीतम का दरसण करसी, दुःख नही व्यापे कोई और ॥४॥
देवनाथ गुरु नित समझावे, क्यों रहो तू ढोर, एली देवनाथ० ।
मान कहे री अजहूं मानले, भरम हंडिया ने फोड़ ॥५॥

राग कालिंगड़ा । ताल कैरवा ॥

सुनरे भंवर सैलानी, बात मेरी सुनरे भंवर सैलानी ॥ टेर ॥
और तो बातें बहुत सुनी तैं, इधर उधर की कहानी ।
अब मेरी बात सुनोरे मेरे भँवरा, कहूं साची सैनाणी । बात० ॥१॥
काची कली को रस क्या पीवे, पीवत जाय कुमलानी ।
जब रस खटे तब दुख पावे, मन ही मनमे गिलानी । बात० ॥२॥
एक कली तोहे ऐसी बताऊँ, हरदम रस टपकानी ।
उस रस से सब जगत रच्यो है, पी जीवे सब प्राणी । बात० ॥३॥
वह रस पीवें सकल दुख छूटे, खुद मस्ती छिकजानी ।
जगत विषय रस मिथ्या लागे, जीवित मोक्ष दिखानी । बात० ॥४॥
मानसिंह कहे कहूँ मैं कब तक, माने न जगत दीवानी ।
जन्मो जन्म जहर फल खावे, स्वाद अमी कद्य पिछानी । बात० ॥५॥

राग कालिंगड़ा । ताल कैरवा ॥

इते दिन भूल में रह गये रीता ॥ टेर ॥
स्वयं हमारे हम थे निर्भय, यों ही भये भयभीता ।
अवर मान मार नित खाई, यों ही सहे फजीता ॥ १ ॥

राधे कृष्ण गोविंद जप्यों जप, जप्यो राम और सीता।
अवर ही जाप आप लख्यो नाहिं, अपणो जाप नहीं कीता ॥२॥
साचो कृष्ण राम मिल्यो साचो, जब पढ़े वशिष्ठ और गीता।
नित्य को पाय अनित्य त्याग दिये, नहीं हारा नहीं जीता ॥३॥
नाथ को साथ कियो जब हमने, जगसे चले विपरीता।
मानसिंह सब कर्म जाल दिये, लेकर ज्ञान पलीता ॥४॥

राग भैरव। ताल दादरा॥

जगत हाट जाण बन्दे, समझ बिणज कीजे॥ टेर॥
याही बीच ठग अपार, दीजे मत पून्जी हार।
वस्तु को नहीं है पार चहिये सो लीजे॥ १॥
इण में हारे अनेक, जीत भी गये, कई एक।
जाने गही शब्द टेक, टेक ते गहीजे॥ २॥
नाना भरे हैं विकार, ऊपर दीखे श्रँगार।
समझ बूझ खोज करे, फेर मन पतीजे॥ ३॥
जाण जहर नहीं खाय, ओलख ले मन के माँय।
झूठी यँह जग की छाँय, या में मत रीझै॥ ४॥
इसमें जो काच कथीर, जामें एक असल हीर।
आतम आनद लहो, और को तजीजे॥ ५॥
देवनाथ साथ कीन, ब्रह्मानन्द पीजे।
मानसिंह आप आप, बीच नित्त भीजे॥ ६॥

राग विहाग, तर्ज वाणी की। ताल कैरवा॥

साधो भाई धर्म रीति कछु न्यारी रे।
धर्म अधर्म को ख्याल करे नहीं; बण्या धरम अवतारी रे॥ टेर॥
धर्म नीति ने अर्जुन भूल्यो, त्राहि त्राहि पुकारी रे।
असली धर्म कृष्ण समझायो; पारथ लियो विचारी रे॥ १॥
धर्म पुत्र युधिष्ठिर वजियो, सो दियो धर्म बिसारी रे।

हारी नार जुवा में देखो; खोया धर्म और नारी रे॥ २॥
भीष्म द्रोण धर्म ने भूल्या, कौरव सभा मंझारी रे।
नार नगन करती ने देखी; भूल मती गई मारी रे॥ ३॥
वे तो भूल्या श्याम नहीं भूल्यो, पल में लिवी उबारी रे।
राखी बात याद भारत में; फिर से लिवी उबारी रे॥ ४॥
उण ही दुशासन रा हाथ काटिया, ज्यों वृक्षन की डारी रे।
कह्यो कृष्ण वो ही है यह नर, नगन करी जिण नारी रे॥ ५॥
ऐसे धर्मी आज दिवस है, जरा न करत विचारी रे।
आततायी जब दुष्ट घनेरा; जिन पर दया करता री रे॥ ६॥
केशव वास्य सजें नहिं हम तो, देवें पार उतारी रे।
भूमि भार दुष्ट जन कहिये; जिन पै खड्ग हमारी रे॥ ७॥
दुष्टों ने दण्ड देणों ही धर्म है, कह गये श्याम मुरारी रे।
आत्म रूप लख करे हम सेवा; सब ही जिव सभारी रे॥ ८॥
नर नारायण फरक नहीं कोई, गीता प्रगट पुकारी रे।
होय नारायण आततायी पण, दिल सूं देवे निकारी रे॥ ६॥
देवनाथ गुरु धर्म बतायो, चाल्या खांड री धारी रे।
मानसिंह कहे कृष्ण कही सो, रती रती लीन विचारी रे॥ १०॥

तर्ज बाणी की। ताल कैरवा॥

साधो भाई यों एकादशी कीजे होजी। दश के ऊपर मन इग्यारवों, याको एक रस कीजे रे॥ टेर॥

पांचो विषय पांच प्रकृति, पकड़ कैद मांही लीजे होजी।
कर्म इन्द्रियां तो जड़ नित कहिये, यां सूं न काम सरीजे रे॥१॥
भूखा मरो भरम मांहि बैठा, यों नहीं श्याम पतीजे होजी।
ब्रह्मानन्द में रत मन करलो, जद म्हारो प्रभुजी रीझे रे॥२॥
मन ने मार चूर कर देवो, नित उठ मंगल कीजे होजी।
ये तो व्रत एक दिन राखो, ओ तीजूं ही दिन वरतीजे रे॥३॥
करो क्यों पाप पुन क्यों खोजो, ओ दुःख परे हरीजे होजी।

पाप नहीं तो पुन कौन को, क्यों दुख सुख मानीजे रे ॥४॥
बहुत नहीं खाणों भूखों नहीं मरणों, पड़दो दूर करीजे होजी।
ये इग्यारे होय वश आपणे, तो निश्चय मौज करीजे रे ॥५॥
सातों वार तीस ही तिथियां, मेरे तो एक कहीजे होजी।
मानसिंह कहे अमर रवि ऊगो, क्योंकर रैण गुणीजे रे ॥६॥

॥ दोहा ॥

चोबीसों एकादशी, जुदा जुदा फल होय।
फल भुगते कछु ना रहे, फिर तो बैठो रोय॥
ताते फल को छोड़दो, कीजे ब्रह्म विलास।
जाय समावो रूपमें, फिर नहीं आवणकी आस॥

॥ सवैया ॥

केते ही व्रत उपवास करो तुम केते ही व्रत निराहार जो कीजे।
पर एक न बरत रुचे मनमें तब तक केते ही भूख मरीजे।
निज निश्चय रो बरत रोप मन सतगुरु के गम ते चढ़ लीजे।
अखिल विश्व तुझमें दीखे ऐसो व्रत करणो तो कर लीजे।
मान कहे जो ख्याल करो तुम ये दुख सब ही परे हरीजे।
तेरो स्वरूप सदा तुझ में इसकी निश्चय कर स्थिर रहीजे॥

तर्ज बाणी की। ताल कैरवा॥

साधो भाई फल कारण जग जावे होजी। आगे गयां तो फल कैसों ही मिलसी,
पाछो जवाब न आवे रे॥ टेर॥
कहीं पै पकड़ बन्धी है एकादशी, कहीं पर व्रत बतावे होजी।
आप ही पड़ी है बन्धन में बापड़ी, वा थांने क्योंकर छुड़ावे रे॥१॥
बन्धिया जाय बन्धियों रे आगे, क्यों कर बन्धिया छुड़ावे होजी।
अन्दर प्रतख और दिव्य ज्योति कहे, कहतां शरम नहीं आवे रे॥२॥
प्रथम तो स्वर्ग मिले ही नांही, जो वो मिले तो विनसावे होजी।

मिले और बिनसे ऐसो क्यों चाहो, उलटो दुःख होय जावे रे ॥३॥
मन रो मैल जो साफ करो तो, साचो व्रत कहावे होजी।
व्रत नाम है साचो निश्चय, पकड्याँ पार हो जावे रे ॥४॥
मान कहे हम ऐसो व्रत कीनो, भूखा न अधिक कुछ खावें होजी।
एक धार पर चढिया गिरे नहीं, शुद्ध स्वरूप समावें रे ॥५॥

तर्ज वाणी की। ताल केरवा ॥

साधो भाई कर्मकान्ड जग भूला होजी। असली करम तो करणो भूलग्या
कैसे भये मति स्थूला रे ॥टेर॥

गुरु कर्मकान्डी ने शिष्य कर्म कान्डी, दोऊ मिल रोल मचाई होजी।
आगे तो पग मेल्यो नही जावे, क्योंकर रूप दरसाई रे ॥१॥
नहीं शिष्य पूछे नहीं गुरु कहवे, अधाधुन्ध मांही जावे होजी।
गुरु लालच सेवा में अलुझ्या, शिष्य पूछण नहीं पावे रे ॥२॥
नित्य कर्म करो कोई मत छोड़ो, आगे तो ध्यान कर लीजे होजी।
बैठा रहे बोला कर्म मांही अलुझ्या, निज तत्त्व किम खोल दीजे रे ॥३॥
कर्मकान्ड नहीं एक तरह रो, लाखां री जुगती लगाई होजी।
जेता ही पंथ कर्म तेता ही, जिण सूं गिलानी मन आई रे ॥४॥
कई तो जन्दोई कई ले कन्ठी, कई रुद्राक्ष पहनावे होजी।
केताक बाम जीवणा केता, गिणतां गिणत थक जावे रे ॥५॥
ब्रह्म विद्या रो कर्म है साचो, वण आवे तो कीजे होजी।
सगला पथ अनन्त छोड़ कर, अपनो पंथ पकडीजे रे ॥६॥
मान कहे मैं कर्म ही कीया, जब तक छवण बधाया होजी।
टूटा बन्ध फन्द सब मिटिया, कर्म मोहे नहीं भाया रे ॥७॥

राग भैरवी। ताल कैरवा ॥

यों कहा भोग लगावे, पुजारी यो कहा भोग लगावे ॥टेर॥
आगे जतन नीर छिड़कावे, ता पर पांव धरावे।
हाड मांस और मल है तन में, क्यों ये साथ ले जावे ॥१॥

मधुर सुधा रस भोजन तेरो, जिन आगे पधरावे।
कण हू एक उठावे नांही, झूठो ही नाम लगावे ॥२॥
कहे तू देव सुगन्धी भूखे, यह हांसी मोहे आवे।
आवे सुगन्धी करत रसोई, तू क्यों भर थाली लावे ॥३॥
ये सब फन्दे तेरे ही मनके, तू ही जगको भुलावे।
तेरो जी चाहे सो करले, चेतन बिन कुण खावे ॥४॥
जो है बेचारे मनके भोले, तुमको माल लुटावे।
मान कहे मेरी कही माने तो, तेरे निकट न आवे ॥५॥

तर्ज मारवाड़ी ढंके की। ताल कैरवा ॥

धर्म ओट में चोट करे ए जग उलझावे रे, टीकला कह्यो न माने ॥टेर॥
मन आवे ज्यों धर्म बताय। असल धर्म सो कहवे नांय।
कर दरवाजा बन्ध आप फिर चौकी लगावे रे। टीकला कह्यो० ॥१॥
लांबा लांबा तिलक बनाय। कई पड़ा है भसमी रमाय।
माथा लारे गुरव्यां ज्यूं वे धूम मचावे रे। टीकला कह्यो० ॥२॥
बने रहे धरमी महाराज। रतियन ज्यांने धरम की लाज।
भीड़ पड़े धरमी लुटीजे जद दूर भग ने रे। टीकला कह्यो० ॥३॥
विश्व धरम ने दियो बिसार। जद होयो ओ अत्याचार।
भारत भूमि खेत गधों ने क्यों जो खवावे रे। टीकला कह्यो० ॥४॥
सत्य धरम को कियो आख्यान। अर्जुन आगे श्री भगवान।
लंपट रोल मचाय इन्ही को धूड़ मिलावे रे। टीकला कह्यो० ॥५॥
देवनाथ शुद्ध धर्मी पाय। मान न वांरे हाथे आय।
अपनो धरम विचार नाथ के रूप समावे रे। टीकला कह्यो० ॥६॥

राग पीलू। ताल कैरवा ॥

आंख छते ये अन्धे है, बाबा आंख छते ये अन्धे हैं ॥टेर॥
पुन और पाप गुपत सब इनके, उलटे ही उलटे धन्धे हैं। बाबा आंख छते ॥१॥
ईश्वर अनेक और धरम अनेको, कैसे छूटे खुद बन्धे हैं। बाबा आंख छते ॥२॥

जिस ईश्वर से मुक्ति मांगे, वे भी किसी के बन्दे हैं। बाबा आंख छते ॥३॥
चोर जार को शिक्षा मांगे ईश्वर, कैसे खयाल इनके गन्दे हैं। बाबा आंख छते ॥४॥
परतक बोले उसे नहीं ले.ले भाग जिन्हों के मन्दे हैं। बाबा आंख छते ॥५॥
मानसिंह अब नाथ कृपा से, हम तो हुवे स्वछन्दे हैं। बाबा आंख छते ॥६॥

॥ दोहा ॥

बुरा जो ढूंढण मैं गया, बुरा न पाया कोय।
जो दिल खोज्या आपणा, तो मुझ सा बुरा न होय ॥

॥ सवैया ॥

बुरा ही बुरा सब कहत चले पर यार बुरा जो निजर नहीं आया।
मुझसे बुरा कोई है ही नहीं सबसे ही बुरा तो मैं ही कहाया।
आपने आप को भूल गया मैं सिंह छतां यों भेड बताया।
आपने रूप को रद्द किया फिर मुझ से बुरा निजर को आया।
मरुधर पति मान सभी से बुरा ऐसा जो बुरा फिर होन न पाया।
मैं जो भला हूं तो जगत भला है मेरे ही रूप तो जगत दिखाया ॥

तर्ज सिकरे की। ताल केरवा ॥

अरे हां ओ सिकरो डराय रयो, ओ डराय रयो रे,
देखो; नित उठ माने नांय ॥टेर॥

इण सिकरे री लाप सूं रे, देखो; डर रया तीनूं ई लोक।
ओ सिकरो जालम घणो रे, देखो, सबने है इणरो शोक।
अरे हां ओ धाक जमाय रयो, नित्य डराय रयो रे।
देखो, नित उठ माने नांय ॥१॥

इण सिकरे ने पकड़ने रे, देखो; किया है जतन हजार।
पर बिन रूप बिन उड़ रयो रे; देखो, बिन मुख करत संहार।
अरे हां ओ धूम मचाय रयो, नित उठ खाय रयो रे।
देखो; नित उठ माने नांय ॥२॥

बड़ा बड़ा रिषी हारिया रे, देखो; थकिया चौबीस अवतार।
इण सिकरे सूं तो सब डरे रे, देखो;सबने मान लिवी हार।
अरे हां ओ गुप्त पकड़ाय रयो, छिप छिप खाय रयो रे।
देखो; नित उठ माने नांय ॥३॥

ओ सिकरो वही काल है रे, देखो; तन धन रेवेला न काय।
त्यागो अभिमान इण देह रो रे, देखो; जन्म मरण मिटजाय।
अरे हां वेदान्त सुणाय रयो, ज्यांने विसराय रयो रे।
देखो; नित उठ माने नांय ॥४॥

वेद को अन्त तू आप है रे, देखो; वहां सिकरो पहुँचे नांय।
अनइ पंख ज्यूं रेवणो रे, देखो; सिकरो देख डर जाय।
अरे हां यूं भरम उडाय रयो, निज रस पाय रयो रे।
देखो; नित उठ माने नांय ॥५॥

देवनाथ गुरु दया करी रे, देखो; सिकरे सूं लियो बचाय।
मान हुतो जिते मारियो रे, देखो; महान चणरो नहीं आय।
अरे हां ओ नीन्द उडाय रयो, शुद्ध समाय रयो रे।
देखो; नित उठ माने नांय ॥६॥

राग भैरवी। ताल-केरवा॥

है तू अनादि सदाई रे; बाबा है तू अनादि सदाई रे ॥टेर॥
तू न कहीं से आया गया है; जग उपजे तेरे मांही रे ॥१॥
गहरे से गहरा मोटे से मोटा; बाहर कोई नहीं पाई रे ॥२॥
हलके से हलका भारी से भारी; तोल्या कवन विध जाई रे ॥३॥
सब कुछ बोले और कुछ नहीं बोले; वाणी जहाँ थक जाई रे ॥४॥
तेरी व्याख्या तू ही करत नित; तू में मैं मिल जाई रे ॥५॥
मानसिंह कहे मैं तू मिटकर; है ज्यों रह्यो समाई रे ॥६॥

वाणी संग्रह

॥ वाणी आसाभारथी जी महाराज की ॥

आज सतगुरु भेटिया म्हारे भलो ऊगो भाण । दीन ऊपर दया कीनी, दास अपणो जाण ॥टेर॥

गुरु अभय दान जो आपियो, जिन कापियो कर्माण ।
मोहं ब्रह्म समापियो, सो व्यापियो चहूं खाण ॥१॥
गुरु ज्ञान भान जो भयो, गयो अज्ञान तिमिर खिसाण ।
प्रगट पूरण उदय उर में, दरसयो परम दिवाण ॥२॥
दिखायो सो दयाल चिद्घन, मया कर महराण ।
जीव ईश्वर लियो जामें, तरंग बुद बुद जाण ॥३॥
थाक मन जब थिर थयो, गह्यो एक ब्रह्म अबाण ।
होय निज मन निरत निर्भय, मिल्यो पद निर्वाण ॥४॥
एक सुधा समुद्र पूरण, कह्यो गुरु परवाण ।
अनन्त कोटि ब्रह्मन्ड सब है, ताकी किलोल समान ॥५॥
उपज्यो आनन्द किलोल जामें, ताहि मांय बिलान ।
ब्रह्म उदक अगाध अविचल, ज्यूं को त्यूं पहिचान ॥६॥
गुरु पतित पावन पार कीनो, बह्यो जात अजाण ।
कहे आसाभारथी, तन मन वारूं प्राण ॥७॥

२

ऐसो एक सत गुरु भेद बतायो हो होजी । भेदत भेद आप भयो आपी, जिन माया अंक मिटायो ॥टेर॥

खोजत खोज फिरत है उदासी, वृथा बनवास करायो हो होजी ।
खोजे सो आप खोज में ही खोजी, वन होय वन में रहयो ॥१॥
जप तप नेम व्रतादिक तीरथ, इन करि मुक्ति मनायो हो होजी ।

जीवत मुक्त आप में ही आपी, वृथा दशूं दिश धायो ॥२॥
बुद्धि विचार करे चित करके, कल्पित मन ही दौड़ायो हो होजी।
बुद्धि होय बोध चित्त होय चितवत, मन होय मनन करायो ॥३॥
भेदत बंक चक्र षट छेदत, दशवों द्वार दिखायो हो होजी।
देखे दिखावे आप आप को, वहां और नहीं आयो ॥४॥
दश प्रकार अनहद धुनि सुन सुन, धारण ध्यान धरायो हो होजी।
धारण ध्यान धरे सो ही आप ही, आप ही नाद बजायो ॥५॥
दरपण में अपनो मुख दरसे, तहां नहीं आन दिखायो हो होजी।
तैसे ही जान भास चेतनको, जीव और नहीं आयो ॥६॥
दरपण दूर दूर भयो दूजो, एक ही मुख ठहरायो हो होजी।
जब भव भास कल्पना भागी, निराभास पद पायो ॥७॥
ज्यों रवि एक अनेक नयन मिल, अनन्त ही रूप दिखायो हो होजी।
रवि करि नयन नयन गहे रूपा, रवि करि रवि दरसायो ॥८॥
यों अपनो तेज आप ही चेतन, आप को आप दिखायो हो होजी।
आभासारथी भेद असंभव, कहन गहन में नहीं आयो ॥९॥

३

गुरु बिना, भागे न भरम अन्धेरा रे; हो अन्धेरा रे। भेद बिना भौंदू भव मांही, भूल्योड़ा फिरे बहुतेरा रे ॥ टेर ॥
सोलह सुन पर तकिया बतावे केवे, श्वेत कमल बिच डेरा रे; हो डेरा रे।
श्वेत न पीत न रक्त न सायबों, परिपूरण चौफेरा रे ॥ १ ॥
माया बेल अनन्त फल ईन्डा, एक एक में डेरा रे; हो डेरा रे।
ईन्डक में मींडक ज्यूँ बोले, केवे अगम घर मेरा रे ॥ २ ॥
जैन मत साध ढूंढिया, धणी न धारे चेरा रे; हो चेरा रे।
करता बिना करम को माने, मन का करे मकेरा रे ॥ ३ ॥
राम रंग राचे, और नहीं जाचे, केवे पतिव्रत धर्म मेरा रे; हो मेरा रे।
मेरा तेरा मान रया मूरख, आत्म तत्व नहीं हेरा रे ॥ ४ ॥

वाणी संग्रह

॥ वाणी आसाभारथी जी महाराज की ॥

आज सतगुरु भेटिया म्हारे भलो ऊगो भाण। दीन ऊपर दया कीनी, दास अपणो जाण ॥टेर॥

गुरु अभय दान जो आपियो, जिन कापियो कर्माण।
सोहं ब्रह्म समापियो, सो व्यापियो चहूं खाण ॥१॥
गुरु ज्ञान भान जो भयो, गयो अज्ञान तिमिर खिमाण।
प्रगट पूरण उदय उर में, दरस्यो परम दिवाण ॥२॥
दिखायो सो दयाल चिद्घन, मया कर महराण।
जीव ईश्वर लियो जामें, तरंग बुद बुद जाण ॥३॥
थाक मन जब थिर थयो, गह्यो एक ब्रह्म अबाण।
होय निज मन निरत निर्भय, मिल्यो पद निर्वाण ॥४॥
एक सुधा समुद्र पूरण, कह्यो गुरु परवाण।
अनन्त कोटि ब्रह्मन्ड सब ही, ताकी किलोल समान ॥५॥
उपज्यो आनन्द किलोल जामें, ताहि मांय बिलान।
ब्रह्म उदक अगाध अविचल, ज्यूं को त्यूं पहिचान ॥६॥
गुरु पतित पावन पार कीनो, बह्यो जात अजाण।
कहे आसाभारथी, तन मन वारूं प्राण ॥७॥

२

ऐसो एक सत गुरु भेद बतायो हो होजी। भेदत भेद आप भयो आपी, जिन माया अंक मिटायो ॥टेर॥

खोजत खोज फिरत है उदासी, वृथा बनवास करायो हो होजी।
खोजे सो आप खोज में ही खोजी, बन होय धन में रहयो ॥१॥
जप तप नेम व्रतादिक तीरथ, इन करि मुक्ति मनायो हो होजी।

जीवत मुक्त आप में ही आयी, वृथा दशूँ दिशा धायो ॥२॥
बुद्धि विचार करे चित करके, कल्पित मन ही दौड़ायो हो होजी।
बुद्धि होय बोध चित्त होय चितव्रत, मन होय मनन करायो ॥३॥
भेदत वंक चक्र षट छेदत, दशवीं द्वार दिखायो हो होजी।
देखे दिखावे आप आप को, वहाँ और नहीं आयो ॥४॥
दश प्रकार अनहद धुनि सुन सुन, धारण ध्यान धरायो हो होजी।
धारण ध्यान धरे सो ही आप ही, आप ही नाद बजायो ॥५॥
दरपण में अपनो मुख दरसे, तहाँ नही आन दिखायो हो होजी।
तैसे ही ज्ञान भास चेतनको, जोव और नहीं आयो ॥६॥
दरपण दूर दूर भयो दूजो, एक ही मुख ठहरायो हो होजी।
जब भव भास कल्पना भागी, निराभास पद पायो ॥७॥
ज्यों रवि एक अनेक नयन मिल, अनन्त ही रूप दिखायो हो होजी।
रवि करि नयन नयन गहे रूप, रवि करि रवि दरसायो ॥८॥
यों अपनो तेज आप ही चेतन, आपको आप दिखायो हो होजी।
आसाभारथी भेद असंभव, कहन गहन में नहीं आयो ॥९॥

३

गुरु विना, भागे न भरम अन्धेरा रे; हो अन्धेरा रे। भेद बिना भोंदू भव माँही, भूल्योड़ा फिरे बहुतेरा रे ॥ टेर ॥

सोलह सुन पर तकिया बतावे केवे, श्वेत कमल बिच डेरा रे; हो डेरा रे।
श्वेत न पीत न रक्त न सावबो, परिपूरण चौफेरा रे ॥ १ ॥
माया बेल अनन्त फल ईन्डा, एक एक में डेरा रे; हो डेरा रे।
ईन्डक में मींडक ज्यूँ बोले, केवे अगम घर मेरा रे ॥ २ ॥
जैन मत साध ढूंढिया, धणी न धारे चेरा रे; हो चेरा रे।
करता बिना करम को माने, मन का करे मकेरा रे ॥ ३ ॥
राम रंग राचे और नहीं जाचे, केवे पतिव्रत धर्म मेरा रे; हो मेरा रे।
मेरा तेरा मान रया मूरख, आतम तत्व नहीं हेरा रे ॥ ४ ॥

सोही पति सकल में व्यापक, अनन्त रूप उण केरा रे; हो केरा रे
अनन्त ही रूप एक अविनाशी, दे हद बेहद पर फेरा रे ॥५।
भैरू भूत देवी देव मनावे केवे, पुत्र जीवाया इण मेरा रे;हो मेरा रे।
जन्म मरण उन ही के हाथे, सो सायब सब केरा रे॥६॥
करता भरता हरता ईश्वर, तीनूं ही रूप उण केरा रे; हो केरा रे।
ईश्वर अंश ब्रह्म का कहिये, ताका सकल पसेरा रे॥७॥
मन मुख ज्ञान कथे कलजुग में, पाखन्ड मत है घणेरा रे; हो घणेरा रे।
आसाभारथी एक अखण्डित, सो ही स्वरूप है मेरा रे॥८॥

४

मन लोभी तू सारों सूं भूंडो रे; हो भूंडो रे। रात दिवस तोहे कह समझाऊं, एक न माने गुन्डो रे ॥टेर॥

हूं तो कहूं तू लाग भजन में, तू नहीं माने भूंडो रे; हो भूंडो रे।
माया कारण फिरे भटकतो, हाथ घाले जाय ऊन्डो रे ॥१॥
भोगों कारण फिरे जग माहीं, हाथ लियाँ छुरो कूंडो रे; हो कून्डो रे।
ऐसा धका लगावे ध्यान में, जभी टिके जाय ऊन्डो रे ॥२॥
अंग आकार कछु नहीं जाके, हाथ पांव बिन टून्डो रे; हो टूंडो रे।
एक पलक में खलक मुलक री; खबर ले आवे डूंडो रे ॥३॥
घेरयाँ न घिरे द्वेष मन धारे, वैर चितारे ऊन्डो रे, हो ऊन्डो रे।
घड़ी पलक में दृष्ट न आवे, संत भागा ले मूंडो रे ॥४॥
आसाभारथी नित समझावे, तू नहीं माने गुन्डो रे, हो गुन्डो रे।
भागां पीछे हाथ न आवे, एक ब्रह्म कर ढूंढो रे ॥५॥

५

रे जारे मन तुमको कौन पत आवे होजी। पल में होय पृथ्वी पति सुर पति, पल में रंक कहावे रे। जारे मन तुमको कौन पत आवे होजी ॥टेर॥

पल में मरे बहुरि जी ऊठे, पल में दशू दिश धावे होजी।
स्वर्ग पाताल देखी बिन देखी, पल में खबर ले आवे रे ॥१॥

आवत लखे न जावत जाणे, तो गति कोई न पावे होजी।
तेरो चलण वेग लखे वायु, और खगराज लजावे रे ॥२॥
लोक वेद गुरू सज्जन संगत, तिनकी संग नहीं जावे होजी।
तू शठ सीख सुने नहीं उनकी, अपणी टेक चलावे रे ॥३॥
नित्य अनित्य शुभ अशुभ न देखे, सार असार न धावे होजी।
होती अनहोती करे एक पलक में, ध्यान में धक्का लगावे रे ॥४॥
जो कुछ देखन को हम भेजें तो, वांही अटक रहजावे होजी।
जो सुगधा को जाय रसीलो, तो पीछो नहीं आवे रे ॥५॥
तृप्त न होय विषय रस करके, खावत नांय अघावे होजी।
भक्ति काज कह कह पचे हारयो, निर्लज्ज लाज न आवे रे ॥६॥
पांख बी करके परेवा उड़ावे, धूर को चावल बनावे होजी।
ले गुटका उड़जाय गगन में, पल में आम उगावे रे ॥७॥
बाजीगर से ख्याल रचावे, नाना रंग दिखावे होजी।
आसामारथी कहे मन वाको, जो इन ते बच जावे रे ॥८॥

६

मन शठ अपने ही कर भूलायो है। बन्ध्यो आसक्त जगत सों होय कर,
निज स्वरूप बिसरायो ॥टेर॥

अपनो रूप कूप में केहरी, निरख पड्यो नहीं पायो है।
यों भ्रम भूल भटक रयो मोंदू, भव जल तरंग बहायो ॥१॥
गहे शुक नलिनी ऐसो दुख मान्यो मोये, किनही बान्ध लटकायो है।
यों भय ताप आप में मूरख, जानः मान दुख पायो ॥२॥
ज्यों कपि मुष्ट मूंद गागर में, छोडत नहीं भरमायो है।
ऐसे ही बन्ध्यो अविद्या आतम, जब से जीव कहायो ॥३॥
मृगत घास पास मृगमद है, पशु बन वृथा दौड़ायो है।
यों भटकत फिरत भेद बिन मोंदू, अन्तरगत ना लखायो ॥४॥
श्वान काँच छाँह लख लोलुप, कहे रवि नयो छिपायो है।
ऐसे ही मूढ़ धोखा मानत, जानत बन्ध्यो बन्धायो ॥५॥

लख करि आन अज्ञान फटिक घर, तोड़त दन्त रिसायो है।
यों कर राड़ परस्पर मारत, होय होय दुख बढ़ायो ॥७॥
काच के सदन स्वान लख आन ही, भूंक भूंक भरमायो है।
यों खल बकत अज्ञान ज्ञान बिन, बुद्धि हीन बहकायो ॥८॥
अपनो रूप आप ही चेतन, आपको आप भूलायो है।
आसाभारथी आर आपमें, मौन गही जिन पायो ॥६॥

७

तेरे भ्रम तू ही भूलायो, तेरे को तू ही नहीं पायो ॥टेर॥
नृप जब नीन्द में सोयो, स्वपन में रंक होय रोयो।
जाग्यो जब स्वपन भरम खोयो, भूप तो हो तो सो ही होयो ॥१॥
कुकर के महल मे आयो, आन लख स्वान भूंकायो।
नलिनी गह कीर कुकायो, मुझे किन बांध लटकायो ॥२॥
मकडी जिम तार फैलायो, फन्द रच आप अलुझायो।
रची इम जालकी फांसी, बन्ध्यो वो आप अविनाशी ॥३॥
कहत इम भारथी आसा, अजब दुनिया का तमासा।
शुद्ध निज रूप नहीं जाग्यो, जगत को दुख सुख कर मान्यो ॥४॥

८

समझ तू आपको सारे, तेरो क्या रूप है प्यारे ॥टेर॥
चराचर में व्यापक है जो ही, तेरो निज रूप है वोही।
तुही को दूर कर जोई, तेरे बिन और नहीं कोई ॥१॥
त्रिरंगी रंग रंग के मांही, झलक रही नूर की झांही।
यहां वहां देखता कांई, सकल में एक है सांई ॥२॥
नाना विध दीखता जो ही, लोहे में शस्तर है ज्योंही।
चेतन का विवृत है सोई, आतम में हुवा न है होई ॥३॥
आतम परिपूरण निज है ई, यह दृढ़ वैराग कर जोई।
भारथी आसा निज सो ई, भेद का लेश नहीं कोई ॥४॥

९

हां रे भाई परिपूरण रस एक दशों दिश, किण दिश आरती कीजे।
आप प्रकाश जासु आगे किम, दीपक कर देखीजे ॥टेर॥
हां रे भाई व्यापक सकल ताहि आवाहन, कर कैसे तेड़ीजे।
आप आधार सरब को समरथ, जिन आसन किम दीजे ॥१॥
हां रे भाई शुद्ध स्वरूप आचमन कैसो, इच्छा न अरघ वयों लीजे।
निरमल निज निराकार निकेवल, कैस सिनान सजीजे ॥२॥
हां रे भाई निरालंब जिन कैसी जनेऊ, भरण आभरण न लीजे।
अनन्त ब्रह्मन्ड विश्व को ढाकण, कैस वस्त्र पहरीजे ॥३॥
हां रे भाई निज निर्लेप गन्ध किम लेपे, कैसे तिलक करीजे।
निर्वासना पुष्प किम परसे, अंजन ताम्बूल न चढ़ीजे ॥४॥
हां रे भाई है निर्गन्ध धूप जिन कैसो, निरफल काम न लीजे।
नित्य तृपत नैवेद्य न चाहे, भोक्ता भरम पतीजे ॥५॥
हां रे भाई नित्यानन्द दक्षिणा कैसी, अगम मुद्रा किम रीझे।
स्वयं प्रकाश ज्ञान निज आपो, विराजमान किम कीजे ॥६॥
हां रे भाई एक अद्वैत स्तुती कैसी, अनन्त परिक्रमा न दीजे।
अन्तर बाहर एक रस अविगत, कैस डन्डोत करीजे ॥७॥
हां रे भाई निर्विकल्प में कल्पे मूरत, पूजा कर पत्थीजे।
दोन होय बारे घणी धरियो, असल नहीं ओलखीजे ॥८॥
हां रे भाई सो अद्वैत उपमेय अनूपम, उपमा किम कर दीजे।
आसाभारथी भेद असंभव, लख चुपचाप रहीजे ॥९॥

१०

हां भाई जोयो जोयो अचल अखंड अभंगी, बहुरंगी एक सारा ए हां।
अन अंगी सिमल सर्वंगी, मिल संगी नित न्यारा ए हां ॥टेर॥
हां भाई मौज करी मेहराण महाब्रह्म, अनन्त देश विस्तारा ए हां।
एक देश में अज्ञान अव्याकृत, उपजी ताहि मंझारा ए हां ॥१॥

इस नाग गगन सचिवार न्यारा, बाजते निसाण हो ॥३॥
नहीं शिखिर सागर गगन धरणी, गांव बिन गम जाय वरणी।
जोत जागी तिमिर हरणी, इम पश्चम ऊगो भाण हो ॥४॥
अनन्त रवि शशि जोत जागी, सुरत मिलकर शबद पागी।
अगम सुरता गई है आगी, करी जिन ओलखाण हो ॥५॥
मेरु शिखिर अभग गङ्गा, अलंग धारा अमी तरङ्गा।
अधर धारा मेल अङ्गा, गुटक गुरु गम जाण हो ॥६॥
उठे नाम धुन सुन परम भेला, जाय कीना ब्रह्म मेला।
करस परस करे केला, अनन्त मौजां माण हो ॥७॥
अखे मन्डल निरख नूरा, सिमरण लागा सन्त सूरा।
बाजिया अनहद तूरा, परम पुरुष पिछाण हो ॥८॥
सूर शशि मिल सुखम लागा, बङ्क भेदी भरम भागा।
आसाभारथी भाग जागा, भेटिया महराण हो ॥९॥

१४

साधो भाई हम करमन से न्यारे। सचित और कियमाण अज्ञाना,
ज्ञान अग्नि कर जारे ॥ टेर ॥
अहं ब्रह्म ज्ञान जब आयो, सब जर बर भये छारे।
रहे करम प्रारब्ध भोग हित, भूने अन्न आहारे ॥१॥
बादल में शशि धावत दीखे, शीत ते तोय धुवांरे।
अभ्र के संग अरुण भयो अम्बर, यों प्रारब्ध हमारे ॥२॥
चालत नाव चपल द्रुम दीखे, कम्पत तोय बयारे।
शूर शशि करि बाण बेग लहे, यों नहीं करम आधारे ॥३॥
सलिल संग शशि सूर चपलता, रङ्ग सङ्ग फटिक रङ्गारे।
जलके निकट वृक्ष भये ऊंधे, यों सङ्ग देह हमारे ॥४॥
सीता कटु लगे पित्त दोष ते, तिमिर दोष भ्रमारे।
श्वेत पीत दृग दोष ते दीखे, यो सब देह विकारे ॥५॥
चोर की सङ्ग साध को चोरा, सब कोई कहत पुकारे।

भरए चलन सङ्ग नैन भ्रमत भये, यों जानो करम सारे ॥६॥
पीत मुकर मुख दरसत पीरो, कारे सङ्ग भये कारे ।
यों प्रारब्ध करम सङ्ग भोगो, भोगत देह हमारे ॥७॥
जीवन मुक्त देह सङ्ग हम ही, होय विदेह भव न्यारे ।
देह विदेह सब्द ले लीना, मिट गई बचन व्यवहारे ॥८॥
बचन भेद आकाश नील भयो, एक सम निराधारे ।
तैसे ही अखन्ड भारथी आत्मा, सोई स्वरूप हमारे ॥८॥

१५

साधो भाई सतरी सङ्गत सुख धारा । जो कोई आय न्हाय नित या में,
हो जावे भव जल पारा ॥टेर॥
सङ्गत गङ्ग प्रवाह प्रेम जल, कथा किलोल अपारा ।
बचन लहर गुरु देत दया निधि, ज्ञान रतन तत् सारा ॥१॥
अघ जल अनन्त मिले गङ्गधारा, तिन मिल होवे जल भारा ।
साधू आय चरण तन धारे, निरमल होवे जल सारा ॥२॥
लोहा कठोर ठोर सहे घन की, होवे कसी कुदाला ।
पारस सङ्ग अङ्ग नृप भूषण, कनक छत्र सिर धारा ॥३॥
पींसयो पेड फिरे भूमी पर, कीट करम का मारा ।
गहि कर भृङ्ग कीट अपने सङ्ग, भृङ्ग होय करत गुंजारा ॥४॥
रहे चहूँ फेर घेर सङ्ग चन्दन, द्रुम बन काष्ट करारा ।
शीतल सरस गंध भई सब में, मलिया करत बन सारा ॥५॥
चन्दन के सङ्ग चन्दन हो गये, महीधर धर तरु सारा ।
कपट गांठ बांस के अन्दर, भेदत नहीं लिगारा ॥६॥
हेत चौफेर सरु छाया तरु, रहे द्रुम के द्रुम सारा ।
ताहि सत्सङ्ग अंग नहीं व्यापे, वृथा कनक देह धारा ॥७॥
कामधेनु कल्पतरु चिन्तामणि, फल वांछित दे सारा ।
मिटे नहीं त्रास बिना सत सङ्गत, होवे नहीं परम उधारा ॥८॥
बिन सतसङ्ग हरीकी कथाके, होवे नहीं मुक्ति अधिकारा ।

हां भाई इनसे भई आवरण अविद्या, और विक्षेप विकारा ए हां ।
तामे मिल ईश्वर भयो नाना, शुद्ध ब्रह्म मिल न्यारा ए हां ॥२॥
हां भाई समर भर्यो शुद्ध ब्रह्म सरोवर, जाका वार न पारा ए हां ।
करी किलोल ईश्वर ता मांही, चली जो महतत्त्व धारा ए हां ॥३॥
हां भाई उन धारा में धार चली अहंकारा, गरजी माया भंकारा ए हां ।
तिरगुण तरंग उठी ता मांही, किया अनन्त बून्द विस्तारा ए हां ॥४॥
हां भाई ईश्वर एक तरंग अंग में, अनन्त तरंग अपारा ए हां ।
बुद बुद जीव रच्यो चौखानी, पिन्ड ब्रह्मान्ड पसारा ए हां ॥५॥
हां भाई तत् पद लहर लिखी ता मांही, त्वं पद बून्द अपारा ए हां ।
चिद् घन सुधा सिन्धु दोवन मे, असि पद जल इक सारा ए हां ॥६॥
हां भाई आसाभारथी आपही तारण, आपही तिरणे हारा ए हां ।
जल की लहर लीन जल मांही, ऐसा भेद हमारा ए हां ॥७॥

२१

पद तो अगमछैजी। गम करेने कैम जाएयो जाय; एवो पद तो अगम छैजी ॥टेर॥
आदि नथी वांरो रे अन्त न आवे, मध्य कह्यो नहीं जाय ।
गुप्त कहूं तो प्रगट परिपूरण, प्रगट ही गुप्त समाय ॥१॥
अधर कहू तो घटो घट धारियो, धर कहूं अधर रहाय ।
धर नहीं अधर सहज सब घरघर, समरथ रह्यो समाय ॥२॥
स्थूल वैराट उभय रच ईश्वर, यूं धर अधर कहाय ।
धर ही माया अधर ही माया, सब उनकी परछांय ॥३॥
है मन मांय मनन मे नहीं आवे, बोधत बुद्धि नहीं पाय ।
चित मे चितवनमें नहीं आवे, चित चेतन बिन नांय ॥४॥
कथ मथ ज्ञान थके सब ज्ञानी, हेरत सोही हेराय ।
है श्रुति मे श्रुति हू नहीं जाने, नेति नेति कहे वाय ॥५॥
एक अखंड अखिल परिपूरण, दूजो केम बताय ।
जो कहूँ एम जीव मैं जानूं, जीव जुदो नहीं थाय ॥६॥

है सब मांय मिले नहीं भेलो, विनस्यो विगत न थाय।
आसाभारथी भेद असंभव, अकथ कथ्यो नहीं जाय ॥७॥

१२

अद्भुत चरित अदेख दिखायो। देखत देखण हार बिलायो ॥टेर॥
अरधन उरध दशूं दिश देखा; सुरत शबद नहीं पावे विवेका।
आगे न पीछे बीच बतायो; गुप्त न प्रगट सकल घट छायो ॥१॥
बिना श्रवण सुणावे वाणी; बिन मुखके समभावे ज्ञानी।
अन्तः करण बिना ओलखायो; अन्तरगत सब मांय समायो ॥२॥
विचार करत विचार बिलायो; खोजत खोजण हार नहीं पायो।
हेरत हेरत सोही हेरायो; देखत देखत दृष्ट न आयो ॥३॥
जो कोई एक ही ब्रह्म बतावे; एक अनेकों में नहीं आवे।
जो कहे दूर निकट ही पायो; तो पावण हार और नहीं थायो ॥४॥
जब मन सुरत शबद में लागे; शबद ही अगम बतावे आगे।
कहा कहूं कहत नहीं आयो; कहतां कहवण हार नहीं पायो ॥५॥
एक सत्ता में सत्ता सब भासे; एकण सत्ता में सकल प्रकासे।
सत्ता स्वरूप लखण में नहीं आयो; लख लख मांही अलख लखायो ॥६॥
आसाभारथी अकथ कहाणी; बकत थके कथत बहु वाणी।
कहा कहूं बने न बतायो; ज्यूं चुप चाप गूंगे गुड़ खायो ॥७॥

१३

परियाण पूरा जिकां पायो है। आपमें आपे दिखायो, नेति नेति निगम गायो,
ध्यायो सदर दिवाण हो। परियाण पूरा जिकां पायो है ॥टेर॥
घाट औघट बाट वेगम, काट करम कपाट खोले।
ज्यांरी सुघड़ सुरता नहीं डोले, जिके सन्त सुजाण हो ॥१॥
चलाण मग बिन पंथ पग बिन, वचन लग बिन जीभ बोले।
ज्यांरी मनो ममता पड़ी खोले, कुटुम्ब बाधा ताण हो ॥२॥
जेम मख जल उलट धारा, गहे मकड़ी भीण तारा।

इम जाग गगत सचियार न्यारा, बाजते निसाण हो ॥३॥
नहीं शिखिर सागर गगन धरणी, गांव बिन गम जाय वरणी।
जोत जागी तिमिर हरणी, इम पश्चम ऊगो भाण हो ॥४॥
अनन्त रवि शशि जोत जागी, सुरत मिलकर शबद पागी।
अगम सुरता गई है आगी, करी जिन ओल्खाण हो ॥५॥
मेरु शिखिर अभग गङ्गा, अलंग धारा अमी तरङ्गा।
अधर धारा मेल अङ्गा, गुटक गुरु गम जाण हो ॥६॥
उठे नाम धुन सुन परम भेला, जाय कीना ब्रह्म मेला।
करस परस करे केलां, अनन्त मौजां माण हो ॥७॥
अखे मन्डल निरख नूरा, सिमरण लागा सन्त सूरा।
बाजिया अनहद तूरा, परम पुरुष पिछाण हो ॥८॥
सूर शशि मिल सुखम लागा, बङ्क भेदी भरम भागा।
आसाभारथी भाग जागा, भेटिया महराण हो ॥९॥

१४

साधो भाई हम करमन से न्यारे। सचित और क्रियमाण अज्ञाना, ज्ञान अग्नि कर जारे॥ टेर॥

अहं ब्रह्म ज्ञान जब आयो, सब जर बर भये छारे।
रहे करम प्रारब्ध भोग हित, भूने अन्न आहारे ॥१॥
बादल में शशि धावत दीखे, शीत ते तोय घुवारे।
अभ्र के संग अरुण भयो अम्बर, यों प्रारब्ध हमारे ॥२॥
चालत नाव चपल द्रुम दीखे, कम्पत तोय बयारे।
शूर शशि करि बाण वेग लहे, यों नहीं करम आधारे ॥३॥
सलिल संग शशि सूर चालता, रङ्ग सङ्ग फटिक रङ्गारे।
जलके निकट वृक्ष भये ऊँधे, यों सङ्ग देह हमारे ॥४॥
सीता कडु लगे पित्त दोष ते, तिमिर दोष भ्रमारे।
श्वेत पीत दृग दोष ते दीखे, यो सब देह विकारे ॥५॥
चोर की सङ्ग साध को चोरा, सब कोई कहत पुकारे।

चरण-कमल सङ्ग नैन भ्रमत भये, यों लागो करम सारे ॥६॥
पीत मुकर मुख दरसत पीरो, कारे सङ्ग भये कारे।
यों प्रारब्ध करम सङ्ग भोगो, भोगत देह हमारे ॥७॥
जीवन-मुक्त देह सङ्ग हम ही, होय विदेह भव न्यारे।
देह विदेह सब्द ले कीना, मिट गई बचन व्यवहारे ॥८॥
बचन भेद आकाश नील भयो, एक नभ निराधारे।
तैसे ही अखण्ड भारथी आत्मा, सोई स्वरूप हमारे ॥९॥

१५

साधो भाई सतरी सङ्गत सुख धारा। जो कोई आय न्हाय नित या में,
हो जावे भव जल पारा ॥टेर॥
सङ्गत गङ्ग प्रवाह प्रेम जल, कथा किल्लोल अपारा।
वचन लहर गुरु देव दया निधि, ज्ञान रतन तत सारा ॥१॥
अघ जल असन्त सि गङ्गधारा, तिन मिल होवे जल भारा।
साधु आय चरण तट धारे, निरमल होवे जल सारा ॥२॥
लोहा कठोर ठोर सहे घन को, होवे फसी कुदाला।
पारस सन्त अङ्ग रूप भूषण, कनक छत्र सिर धारा ॥३॥
गींडयो पेट फिरे भूमी पर, कीट करम का भारा।
गहि कर भृङ्ग कीट अपने सङ्ग, भृङ्ग होय करत गुंजारा ॥४॥
रहे चहूँ फेर घेर सङ्ग चन्दन, द्रुम बन काष्ठ करारा।
शीतल सरस गंध भई सब में, मलिया करत बन सारा ॥५॥
चन्दन के सङ्ग चन्दन हो गये, महीधर धर तरु सारा।
कपट गांठ बांस के अन्दर, भेदत नहीं लिगारा ॥६॥
हेय चौफेर भरु छाया तरु, रहे द्रुम के द्रुम सारा।
ताहि सत्सङ्ग अंग नहीं व्यापे, वृथा कनक देह धारा ॥७॥
कामधेनु कल्पतरु चिन्तामणि, फल वांछित दे सारा।
मिटे नहीं त्रास बिना सत सङ्गत, होवे नहीं परम उधारा ॥८॥
बिन सतसङ्ग हरीकी कथाके, होवे नहीं मुक्ति अधिकारा।

बिन प्रभु हेत खेत है सूको, जीवत प्रेत पसारा ॥९॥
निर्मल बून्द पड़े आसू की, बरसे अमृत धारा।
मुक्ता सीप सरप मुख विष भयो, बरतन का व्यवहारा॥ १०॥
कर सतसङ्ग (?) हरी लागा, भागा भरम अन्धारा।
आसाभारथी सङ्गत निज गंगा, ऊँच नीच को तारा ॥११॥

१६

साधो भाई जग मिथ्या दरसाई। जगत रूप सोई है परमातम,
सत बिना जड़ कुछ नांई ॥टेर॥
दृष्टिगोचर स्थूल पदारथ, ये सब धरण मिलाई।
अवनी मिले तोय के सङ्गा, आपा अगन समाई ॥१॥
पावक मिले पवन मे परतक, नभ में वात विलाई।
व्योम अव्योम और चारू तत्व, चेतन मांय लखाई ॥२॥
सीपी रजत स्थाणु पुरुष है, रज्जु सरप दिखाई।
गगन नीलता मृग जल छल जिम, यों ब्रह्ममें विश्व दिखाई ॥३॥
जोगी जङ्गम जती सन्यासी, नेति नेति कहे सोई।
आदि अन्त और मध्य न वा मे, नहीं एक नहीं दोई ॥४॥
सूत्र पुराण वेद और गीता, ये सब कहे थक जाई।
जप तप होम कीरतन पूजा, है त्रिपुटी के माही ॥५॥
अन्तःकरण के धरम ये कहिये, काम और लोभ सदाई।
जो कोई अज्ञ आप में कलपे, मिथ्या भरम भुलाई ॥६॥
शम दम और विवेक वैरागा, ये साधन दरसाई।
सतगुरु महिमा अधिक सभी से, आदि अनादि से गाई ॥७॥
अजर अमर अविनाशी आनन्दा, नित चेतन निरमोई।
अखे अद्वैत अखण्ड अजन्मा, आसाभारथी है सोई ॥८॥

१७

फकीरी उन गुन रहत उदास। होय मन मगन फिरे मरजीवा,
जीवत मसाणों में वास ॥टेर॥

हां जरना जारे कुबध विडारे, ममता मारे त्रास।
आशा तृष्णा चिन्ता मिथ्या, कियो सबन को नाश ॥१॥
हां सैंया शीत उषण जिन ओढण, पौढण भूमि निवास।
धूणी ध्यान धीरज गल कंथा, निर्भय नगरी में बास ॥२॥
हां ज्ञान सुधा गङ्ग नित नावत, ब्रह्म गुफा में वास।
आसन अडिग अजपा सिमरण- सोहं श्वासो श्वास ॥३॥
हां बैठ विवेक वृक्ष की छाया, चित चेतन के पास।
परमानन्द तीरथ पर तापे, एको एक निराश ॥४॥
हां झोली उदर पास कर पातर, भिक्षा लेत निराश।
आशाभारथी अदल फकीरी, ऊँच नीच सम जास ॥५॥

—

॥ वाणी श्री रामदेव जी महाराज की ॥

अमर बधाओ म्हारे बंट रह्यो हेजी होजी; होय रया मंगलाचार ॥टेर॥
आया ए जोगेश्वर म्हारे पावणा हेजी होजी, धर सायब अवतार।
चालो ए बधावों आपां जुगत सूं हेजी होजी; नहीं तर रह जांसों लार ॥ १ ॥
मारग वैखरी धारियो हेजी होजी; मेल्यो ..प अलुजाड़।
पोल पश्यन्ती खोल दी हेजी होजी; मध्यमा कियो है निहार ॥ २ ॥
परा नगर में गुरू ने लावणा हेजी होजी; महानन्द दरबार।
तुरियातीत तखत बिछाय दो हेजी होजी; जड़िया रतन अपार ॥ ३ ॥
पांच बीस दस भेला हुया हेजी होजी; होय रही भीड़ अपार।
चमरो सुरत सहेलड़ी हेजी होजी; भर गज मोतियों रो थाल ॥ ४ ॥
ढोल धज्यो ए सैंया ध्यान रो हेजी होजी; घुल रया रंग अपार।
सन्त बधाय घर लाविया हेजी होजी; मिट गयो भेद विकार ॥ ५ ॥
राम रीझ राजी हुया हेजी होजी; एको दृष्टि निहार।
सगलां ने आप में भेलिया हेजी होजी; कोई नहीं राख्या है लार ॥ ६ ॥
[illegible] ट गयो हेजी होजी; सुरता कियो रे विचार।

हम और सतगुरु दोय जणा हेजी होजी; करसों बचन बिहार ॥७॥
तब हँस बोल्या म्हारा नाथजी हेजी होजी; तू है मूरख गंवार।
मैं सो तूं तूं सो मैं ही हूँ हेजी होजी; रहे नहीं भेद लिगार ॥८॥
मैं और तूं दोनूं मिट गया हेजी होजी; अपणा ही आप आधार।
इण विध सन्त बधावजो हेजी होजी; कदेई न पड़े जम री मार ॥९॥
सत रो बधावो साधो गावियो हेजी होजी; कर कर मन में प्यार।
कहे रामदेव पहुँचियो हेजी होजी; हद बेहद सूं पार ॥१०॥

॥ दोहा ॥

रामा सामा आव जो, कलजुग बहुत करूर।
अरज करूँ अजमाल रा, म्हारे सामो जोय जरूर ॥
हरजी कहे हालो देवरे, परसों रामा पीर।
दुखियों तणा जो दुख हरे, रहे सकट में सीर ॥

३

म्हारे तो इष्ट तुम्हारो अजमाल सुत, म्हारे तो इष्ट तुमारो।
आप कहो के हूं मैं सकल में, माने नहीं मन म्हारो। अजमाल सुत० ॥टेर॥
सामा उभा ने अन्तर किण बिध, ओ कांई मतो है तुमारो।
सिंवरे जिकां री सहाय करो थे, डूबतड़ां ने तारो ॥१॥
केवो किण विध भूलां आपने, ओ होसी अनरथ भारो।
सिंवरयां काज सार दो पल में, सुण दुर्बल री पुकारो ॥२॥
हर शरणे भाटी हरजी बोले, थे म्हारे प्राण आधारो।
ऐसो ज्ञान मोय नहीं भावे, सेवक हूं चरणां रो ॥३॥

४

म्हांने दोय मत जाणो भाटी हरजी, म्हांने दोय मत जाणो।
हम तुम दोनो एक कहीजे, आतम भाव पिछाणो। भाटी हरजी ॥ टेर ॥
नहीं मैं धणी ने ना तूं सेवक, इण भूलने दूर हटाणो।

आ निश्चय कर आप पीर होय, भेद ने भाव मिटाणो ॥ १ ॥
नहीं अजमाल- घर जन्म लियो मैं, नहीं कोई देह धराणो ।
भूले भाव लियो थे हरजी, उल्टे सूं उलझाणो ॥ २ ॥
वेद ने ग्रंथ साख देवे सगला, आदि ब्रह्म कहाणो ।
न्यारो समझियां पार न होसी, मिलसी नहीं ठिकाणो ॥ ३ ॥
आपणो ही रूप जाण तूं म्हांने, और भाव मत आणो ।
केवे रामदेव सुणो भाटी हरजी, भरम सूं दूर छुडाणो ॥ ४ ॥

५

मैं हूं नेड़ा सूं नेड़ो हरजी, मैं हूं नेड़ा सूं नेड़ो । दूर जाणे ज्यांने
दुरमत कहिये, पावे कष्ट घणेरो; हरजी ॥टेर॥
पांच तीन जो कहे सभी में, भेद न जाणे मेरो ।
इण सूं नजीक रहूं मैं हरदम, इण सब ही ने प्रेरो ॥१॥
मन बुद्धि चित्त अहंकार चार ये, मेरो रूप नहीं हेरो ।
पास रहूं यांने नहीं सूझे, हुय रयो तिमिर. घणे रो ॥२॥
सबसूं पहिले हमी एक कहिये, पीछे भयो है बखेड़ो ।
सभी समेट एक में करले, जग है रूप यह मेरो ॥३॥
म्हारो कयो मान ले हरजी, परचो करदूं तेरो ।
जग तो सकल आंख बिन अन्धो, तू क्यों मिलियो भेलो ॥४॥
म्हारो साथ हाथ तेरो पकडूं, मत फिर अलगो फेरो ।
केवे रामदेव सुणले हरजी, मत होय. ममता रो चेरो ॥५॥

६

आ मत किण विध आवे, हो महाराजा; म्हारे मन नहीं भावेजी ॥टेर॥
प्रगट्या प्रगट आप अजमल घर, सूठ बक्यो किम जावे ।
क्योंकर झूठ कहूं म्हारे मुखसूं, जगमें जाहिर कहावे ॥१॥
थे तो केवो के अनेकों में रहेऊं, म्हांने अनेक दरसावे ।
एक हुवे तो दूजी क्यों रोवे, रोवत अठे क्यों आवे ॥२॥

म्हांने भूलावण काम रच्यो थे, हरियो छोड़ण नहीं पावे ।
हर शरणे भाटी हरजी बोले, म्हारे तुम इष्ट कहावे ॥३॥

७

ना कोई गया न आया भाटी हरजी; ना कोई गया न आयां ।
खाली ठौड़ कठेई नहीं दीसे, न्यारा जिणसूं रवाया । भाटी हरजी ॥टेर॥
मिसरी भरोसे लूण मत खावो, मुख कड़वो हो जाया ।
परचा मांय भूल मत हरजी, अपना आप दिखाया ॥१॥
ज्योंकर निश्चय करे रे अचरने, दौड़ दौड़ यहां आया ।
अपनो स्वरूप समझले इनको, परचा आप ही पाया ॥२॥
चेतन देव भूल गया अपणा, पथरों सिर परचाया ।
पूजत पथर उमर सब खोई, सुपने अकल नहीं आया ॥३॥
साचो उपदेश कहूं मैं थांने, बालीनाथ समझाया ।
केवे रामदेव सुण भाटी हरजी, अपणो ही आप गमाया ॥४॥

८

भूलां ने मारग बताग्रो हो बापजी, भूलां ने मारग बतावोजी ।
मोपर मह्र करो महाराजा, निज कर मोय समझावो; हो बापजी ॥टेर॥
मैं तो देव आपने जाण्या, और देव नहीं ध्यावोजी ।
आप ही केवो के देव कोई दूजो, ओ भ्रम दूर भगावो ॥१॥
म्हारे तो इष्ट आप एक कहिये, दूजो नोय मनावोजी ।
आ कांई बात कही अजमाल रा, मोय अचम्भो आवे ॥२॥
दिन और रात आपने सिवरू, और किणरा गुण गाऊँजी ।
आपने छोड़ कठे अब जाऊँ, किण बिध देव रसाऊँ ॥३॥
हर शरणे भाटी हरजी बोले, सूतां ने लाल जगावोजी ।
मह्र करो अजमाल सुत रामा, जन्म ने मरण मिटावो ॥४॥

९

केणो मानले म्हारो भाटी हरजी, केणो मानले म्हारो । केणो मान्य
कलङ्क सब मिटसी, परचो होसी थारो; भाटी हरजी ॥टेर॥
आपही देव ने आपही पुजारी, आप दुखी ने सुखियारो ।
आपणो ही परचो आप लेत है, खेल रूप जग सारो ॥१॥
नौकर चाकर एक नहीं म्हारे, ब्रह्म रूप आधारो ।
आपणी इच्छा से आप होत सब, नहीं कोई करणे हारो ॥२॥
ना मैं किणी ने परचो देऊँ, नहीं तिराऊ नहीं तारो ।
अपणो भाव आप होय परगट, नहीं आसाण हमारो ॥३॥
ममता छोड़ एक होय मिल लें, मौड़ छोड़ दे सारो ।
कहे रामदेव सुणलो हरजी, कहूँ मैं बार ही बारो ॥४॥

१०

कहो किमकर पत आवे ही बापजी, कहो किमकर पत आवेजी ।
मैं तो इष्ट आपने पकड़्या, दूर किया नहीं जा वे ॥टेर॥
सिंवरया वेल आवो थे सवेला, पलक ढील नहीं लावेजी ।
कहो क्योंकर थंव भेज समझूँ, बात समझ नहीं आवे ॥१॥
साधू सन्त आपने सिंवरे, सब जग थांने ध्यावेजी ।
दुखियों रा दुख दूर कर देवो, मंछा पूरण पावे ॥२॥
आप कहो कै सब मांय व्यापक, कहो किम देख्यो जावेजी ।
परतक देव सामने ऊभा, अलेगा क्यों समेभावे ॥३॥
म्हारे तो ब्रह्मदेव नहीं चहिये, क्रष्ण देव नहीं चावेजी ।
हर शरणे भाटी हरजी बोले, भूलांने मारग बतावे ॥४॥

११

आई है भूल थारे मांई भाटी हरजी, आई है भूल थारे मांई ।
जब तक मोय मानुस कर पूजो, तब तक मुक्ति नांई; भाटी हरजी ॥टेर॥
नहीं अजमाल बाप मेरो कहिये, मात नेणादे नांई ।

तन अभिमान छोड़ दे हरजी, पूज पूज निज सांई ॥ १ ॥
तन तो मंड्यो ने फेर बिखरसी, ओ इष्ट निभेला नांई ।
बोले राम नहीं है कोई छानो, दूर करो जल सूं काई ॥ २ ॥
जब तक कंवर जाग्यो अजमाल रो, तब तक सुख नहीं पाई ।
अजमाल कंवर मरे और जनमे, इण भ्रम मे भटकाई ॥ ३ ॥
नहीं तू मिन नहीं मैं इष्ट थारो, छोड़ परी दुतियाई ।
रमता राम अतीत एक है, केवल रूप गुसांई ॥ ४ ॥
बालीनाथ री कृपा भई जद, धूवर ने दिवी है उडाई ।
केवे रामदेव सुनो भाटी हरजी, आ साचोड़ी राह बताई ॥५॥

१२

बात दाय नही आवे अन्नदाता, बात दाय नहीं आवे । थे हो देव दास मैं थांरो, किण विध बिछड्यो जावे । अन्नदाता ॥टेर॥

सिवरे जिकोंरी सहाय करो थे, पलमें पार लगावे ।
परतक परचो क्योंकर छोड़ूं, उलटो भरम दरसावे ॥१॥
खेवौं धूप धणी रे आगे, जद ही परचो पावे ।
होय लीले असवार अन्नदाता, हाजर आण सिधावे ॥२॥
थे केवो के ब्रह्म सकल में, म्हांने नहीं दरसावे ।
अगम अरूप नहीं गम जिणरी, म्हारे काम कांई आवे ॥३॥
थांरो ब्रह्म तो थेईज रहण दो, म्हारे मन नहीं भावे ।
हरियो चाकर राज रो रैसी, चरण कमल गुण गावे ॥४॥

१३

क्यों तूं जग भुलावे भाटी हरजी, क्यों तूं जग भुलावे । म्हारी कही मानले अब तूं, स्वतः पीर होय जावे । भाटी हरजी० ॥टेर॥

किण रो काज करे तू हरजी, किणने परचा दिखावे ।
घर रो परचो आप नहीं ओलखे, फिर फिर गोता खावे ॥१॥

किणने बैठो पूत तूं देवे, किणरा कलंक झड़ावे।
खुद रो कलंक भाड़ियो नांही, यह मोहे हांसी आवे ॥२॥
करम कोढ सूं तूं है जड़ियो, जिण ने नहीं मिटावे।
ब्रह्मानन्द औषध नहीं लेवे, किण विध रोग हटावे ॥३॥
किणी ने पांव दे किणी ने आंख दे तूं, फिर फिर जगत ठगावे।
मोह मद मांय हुवो तूं आंधो, घर री न आंख खुलावे ॥४॥
ना मैं देव ने ना तूं पुजारी, झूठो भौड़ मचावे।
मेरो ही रूप और नहीं दूजो, समझे तो मो में समावे ॥५॥
बिन समझ्यां थांने और दुख होवे, समझ लेवे तो सुख पावे।
तँवर रामदेव साची भाषे, समझ्यां मौज उडावे ॥६॥

१४

हांरे हरजी तज दो नी भरम, समझो मन मांही रे जी। यूं जीवों ने जाय जगावो रे हां। हांरे हरजी तज दोनी भरम समझो मन मांही रे जी ॥टेर॥
हांरे हरजी नहीं कोई देव दास दोनूं त्यागो रे जी।
ओ तो है जिणने लख जावो रे हां।
हांरे हरजी हारयोड़ो जीवों ने फेर ना हरावो रेजी।
थांने सैनी दे समझावो रे हां ॥१॥
हांरे हरजी कुण तो आवे ने कूण बुलावे रेजी।
इठे देव दूजो नहीं पावो रे हां।
हांरे हरजी तेरो देव तू ही तो कहीजे रे जी।
भाई रे थ्यावो जठेई प्रगटावो रे हां ॥२॥
हांरे हरजी साची कहूँ मैं माने तो थारी मरजी रे जी।
मान्यां भव तिर जावो रे हां।
हांरे हरजी नहीं तर पड़ेला चौरासी रे मांही रे जी।
थे तो निकमा ही पत्थर पुजावो रे हां ॥३॥
हांरे हरजी जोत्यां जगाय क्यों थे जगत बहकावो रे जी।
आप डूबो ने डूबावो रे हां।

हांरे हरजी उलटी सुरत मांयने फेरो रे जी।
तो अमर जोत मिल जावो रे हां ॥४॥
हांरे हरजी पूजे पत्थर पापी वे कहिये रे जी।
थे तो आतम पूजो ने पूजावो रे हां।
हांरे हरजी थवसी अकरम अनरथ यूं होसी रे जी।
थो मत अन्याय चलावो रे हां ॥५॥
हांरे हरजी केवे यूं रामदेव सुणो भाई म्हारा रे जी।
इण पड़दे ने दूर हटावो रे हां।
हांरे हरजी परसो आतम हुवे थांरा परचा रे जी।
थेई मुझ सा पीर कहावो रे हां॥६॥

१५

निज परचो पायो नहीं, तो परचा लेवो अनेक।
तँवर रामदेव देखियो, जग में परचो एक॥
किनको ध्यावे को मिले, कौन देव को पीर।
सब घट आतम बोलतो, मैं देख्यो सुखे री सीर॥

१६

हांरे वीरा आवणो हुवे तो सीधोड़े पंथ आवो रे जी, ऊजड़ पंथ कांयने जावो म्हारा लाल। आवणो हुवे तो सीधोड़े पंथ आवो रे जी ॥टेर॥
जीहो लालजी ऊँच ने नीच वरण कुल नाहीं रे जी;
मन मांयले ने समझावो रे लाल।
जरणा ने जारं अमीरस पीवो रे जी; आपही सिध बण जावो रे लाल ॥१॥
जीहो लालजी नारी पुरुष रो नहीं है अठे दावो रे जी,
चेतन होय ने चेतावो रे लाल।
वेश्या जिके तो चौक मांही खेले रे जी; वांरे मांय जाय मिल जावो रे लाल ॥२॥
जीहो लालजी गुरु वचनों रा बेला बंधिया रे जी;
जन्म ने मरण मिटावो रे लाल।

जन्म ने मरण जिणी दिन मिटसी रे जी; अखे तो मन्डल घर आवो रे लाल ॥३॥
जीहो लालजी अपणो पीर आप मांही देखो रे जी;
मनड़े री मैल धुपावो रे लाल।
केवे रामदेव अमर हुय जावो रे जी; आय सुख मांय समावो रे लाल ॥४॥

१७

हांरे बीरा ओ संसार अथग जल भरियो रे जी; तीर नजर नहीं आवे म्हारा लाल।
ओ संसार अथग जल भरियो रे जी ॥टेर॥
हांरे बीरा सतरी नाव गुरु खेवटिया रे जी; बैठे पार हो जावे म्हारा लाल।
डूबे जिके नर केरणी रा हीणा रे जी; बिन विश्वास दुख पावे म्हारा लाल ॥१॥
हांरे बीरा तीन पांच एकण घर लावे रे जी; धीरज ध्वजा लगावे म्हारा लाल।
नेम धरम मल्लाह दोय आछा रे जी; समझने नीर हिलावे म्हारा लाल ॥२॥
हांरे बीरा हाले नाव समंद रे कांठे रे जी; सत रे पंथ चलावे म्हारा लाल।
चूका जिके बीच जल डूबा रे जी; फिर ऊंचा नहीं आवे म्हारा लाल ॥३॥
हांरे बीरा जग सूं तारे पैले पार उतारे रे जी; वे नर संत कहावे म्हारा लाल।
केवे रामदेव साचा सतवादी रे जी; वे जम सूं नहीं घबरावे म्हारा लाल ॥४॥

१८

हांरे बीरा वे हरिजन म्हारे हिवड़े रा रे जी; मोत्यां मूंगा बधावे म्हारा लाल। वे हरिजन ॥टेर॥
हांरे बीरा सत की रा भंवरी शब्द सूं परखे रे जी;
एतो ज्ञान री एरण चढ़ावे म्हारा लाल।
साचा वचन सो चोट देवे घणरी रे जी; मन विचलित नहीं थावे म्हारा लाल ॥१॥
हांरे बीरा माया ले पग री मोजड़ी जाणे रे जी;
इणी सूं मांय ठगावे म्हारा लाल।
हीरा अमोल मुफत लूंटावे रे जी; हिम्मत करे सो ले जावे म्हारा लाल ॥२॥
हांरे बीरा जो लेवे तो भेट लेवे शिर रो रे जी;
इणने देवतड़ा ही डर जावे म्हारा लाल।

जो देवे भेट पार पहुँचावे रे जी; अधविच नहीं छिटकावे म्हारा लाल ॥३॥
हां रे वीरा तन मन करूं कुरबाण वांरे ऊपर जी;
ज्यांने पलक भूल्या नहीं जावे म्हारा लाल ।
वे हरिजन म्हांने प्राण सूं प्यारा रे जी;जिके दे दूरबीण दिखावे म्हारा लाल ॥४॥
हां रे वीरा वांरो आसाण पलक नहीं बिसरूं रे जी;
वे रग रग मांय समावे म्हारा लाल ।
केवे रामदेव इसा साधों ने रे जी, रामरूप कहे जावे म्हारा लाल ॥५॥

१६

लाल म्हारा वीरा रे, देहड़ली मांयला हीरा, हेरो हो बाबाजी ॥टेर॥
ज्ञान रतन री गांठड़ी ले आया हो बाबाजी ।
नुगरां आगे तो मती खोलो रे म्हारा वीरा ॥१॥
नैणां रो काजलियो कोरे कूंपलिये नहीं रींझे हो बाबाजी।
पर ने नारी रा मोयोड़ा परले जावे रे म्हारा वीरा ॥२॥
हाथ में दीवलियो नुगरांने उजियालो नहीं सूझे हो बाबाजी ।
गुरुगम रे उजियाले काया हेरोरे म्हारा वीरा ॥३॥
अमृत रस भरियो नुगरांने पीवणो नहीं आवे हो बाबाजी ।
मदिरा रा पीयोड़ा मति रा हीणा रे म्हारा वीरा ॥४॥
घर मांय घर है नुगरांने निगे में नहीं आवे हो बाबाजी।
बाहर रा भटक्योड़ा किम कर चीन्हे रे म्हारा वीरा ॥५॥
तँवरां रो टीकायत सिद्ध रामदेवजी बोले हो बाबाजी।
सन् री संगत में रूड़ा हीरा रे म्हारा वीरा ॥६॥

२०

लाल म्हारा वीरा रे समझने परखो हीरा, हीरा हो बाबाजी ॥टेर॥
सूतोड़ा जागो थे अब तो नींदड़ली निवारो हो बाबाजी।
सिर पर है जमराणो नीन्द किम आवे रे म्हारा वीरा ॥१॥
मनुष्य जन्म थांने फेर हाथ नहीं आवे हो बाबाजी।

कायारो कमठाणो पलक में जावेरे म्हारा वीरा ॥२॥
गयोड़ो स्वास पाछो नहीं आवे हो बाबाजी।
सूई रे नाके सू डोरो जावेरे म्हारा वीरा ॥३॥
करणो हुवे सो वेगो करलो हो बाबाजी।
ए घड़ियां गयां फिर पछतावो रे म्हारा वीरा ॥४॥
घर मांहीं घर खोजो थांने बाहर हाथ नहीं आवे हो बाबाजी।
गुरु गम रे उजियाले वो मिल जावे रे म्हारा वीरा ॥५॥
तंवरा रो टीकायत सिद्ध रामदेवजी बोले हो बाबाजी।
नुगरां थी बचियां सूं सुखड़ो आवेरे म्हारा वीरा ॥६॥

२१

निज आनन्द हम ओलख्यो हेजी होजी; ऊगो सहजे सूर ॥टेर॥
बचन बुद्धि सूं ओ पार है हेजी होजी; इसड़ो अद्भुत नूर।
कलम किया पहुंचे नहीं हेजी होजी; लिख दूं तो होय कूर ॥१॥
जप तप इणने लागे नहीं हेजी होजी; मुक्ति रहत मंजूर।
करम किया सारा थक गया हेजी होजी; हुय गया चकना चूर ॥२॥
बाहर खोजत घर में मिल गया हेजी होजी; बाज्या म्हारे अनहद तूर।
साची कही साचा मिल्या हेजी होजी; ऊगो म्हारे ज्ञान अंकूर ॥३॥
बारी हो वारी बाली नाथजी हे मी होजी; हो ज्यूं परस्यां जरूर।
रामदेव परचो पायो हेजी होजी; सब में पूरम पूर ॥४॥

२२

पायो पद परियाण ने हेजी होजी; उगो म्हारे दिल बिच भाण ॥टेर॥
अजब फकीरी साधो म्हे लीवी हेजी होजी; जीवत जग्यो रे मसाण।
बिना रे आग बिन म्हे तप्या हेजी होजी; जद परस्यो महराण ॥१॥
म्हारे भेलो एक जोगियो हेजी होजी; तपतो परम सुजाण।
इण तो जोगीड़े जुलम कियो हेजी होजी; कर्यां सूं मिले ना निसाण ॥२॥
आनी जगाई जोगी जोगरी हेजी होजी; जाग्यो तप उद्यान।

म्हांने तो वाल्या ने आप यच गयो हेजी होजी; कर लियो आप समान ॥३॥
जीव ब्रह्म सारा बल गया हेजी होजी; रह गयो फकर महान।
तुरीये तख्त पर चढ़ बैठो हेजी होजी, बाज्या अनहद निशाण ॥४॥
मैं और तूं उठे है नहीं हेजी होजी, नहीं कोई वेद पुराण।
है सोई है अब क्या कहूं हेजी होजी; देखो उर घर ध्यान ॥५॥
घालीनाथ गुरु भेटिया हेजी होजी, भेट्या सन्त सुजाण।
तंवर राम अपणा आप है हेजी होजी; सुपने न देऊं जम डाण ॥६॥

२३

परियाण पहूंच्या जिकां पाया हे हेजी। गया पीछे नहीं आया, ब्रह्म में वे ब्रह्म समाया; सहजे सुरत लगाय हो। परियाण पहूँच्या जिकां पाया० ॥टेर॥
विना स्वासा सहज पोया; जीव तज कर ब्रह्म होया, हे हेजी।
द्वैत दुविधा भाव खोया, रया लगन लगाय हो। परियाण पहूँच्या० ॥१॥
करम करता नहीं भरता, नहीं जन्मे नहीं मरता हे हेजी।
निडर रेवे नहीं डरता; आपणी धुन धाय हो। परियाण पहूँच्या० ॥२॥
नहीं तातु नहीं मातु, आप अपणो सहज आपू हे हेजी।
नही अजपा नही जापू, नहीं करणी कराय हो। परियाण पहूँच्या० ॥३॥
चन्द न सूरा सहज नूरा, निकट निकटां नही दूरा हे हेजी।
सहज बाजा अनहद तूरा, ओलख्या निज मांय हो। परियाण पहूँच्या० ॥४॥
नहीं देवा नहीं सेवा, आप अपणो पाय भेवा हे हेजी।
ब्रह्म डोरी सहज भ्हेवा, गह्या छोड़े नांय हो। परियाण पहूंच्या० ॥५॥
बोलिया सिध राम वाणी, छाण्यां पीछे दूध पाणी हे हेजी।
हंसा री गत हंस जाणी; बुगा जाणे नांय हो। परियाण पहूँच्या० ॥६॥

२४

अजमाल नन्दन शबद भाखे, साध हो सो सांभले। कथल साचा ब्रह्म वाचा, देवता दरसण करे। एक राम असमान तुल्य है, जम सेती क्यों डरे। अमर बीज हाथ आयो, सो नर भूला क्यों फिरे। अजमाल नन्दन० ॥टेर॥

कष्ट किरिया कूड़ सारा, पेड़ी रैणी कुण रेवे, हे हेजी।
मूवां पीछे जन्म धारे, घणी मारां ये सहवे ॥१॥
उमा शंकर भाण राशी, ब्रह्मा-विष्णु सत करे, हे हेजी।
जाय काशी लेवे करवट, विकट मौतां ये मरे ॥२॥
धरण कूपा शिखिर वाड़ी, उरध दिश पाणी चढे हे हेजी।
अमर बीज असमान ऊगो; आ विधि विरला लखे ॥३॥
स्वर्ग ऊपर सैंस पेड़ी, प्रमाणां सूं पार है, हे हेजी।
सरब पर परियाण समरथ, अखे आप अपार है ॥४॥
शेष पेड़ी परिमाण गाया, सन्त ने सोजी पड़े, हे हेजी।
बोलिया सिध रामदेव, अजपा जपे ज्यांने मिले ॥५॥

२५

रिल मिल रहो हेत सूं हालो रे जी; कठिन पंथ खान्डे री धार। साचा जिके सदाई नर साचा रे जी; हर भज उतरो पैले पार ॥टेर॥
पहिला शब्द सुन्न मांही होला रे जी; रिषी रिषियां मिल परगट ज्ञान।
तीनों देव ने माया शक्ति रे जी; अपने आप में करी पहिचान ॥१॥
मूंगा शबद सूंगा कर दीना रे जी; मथ अमृत कर मेल्यो खार।
हंसला री होड करे नर बुगला रे जी; नहीं पहोंचे वे परले पार ॥२॥
झीणी चाल निरखता चाले रे जी; मन लालच रलियारां रे मांय।
मांयले रो मैल कियो नहीं आछो रे जी; निज करणी सूं गोता खाय ॥३॥
शीतल चाल धार घट भीतर रे जी; सुरता करे शबद री लार।
तज अभिमान मेट दियो आपो रे जी; जद बाजे परियाणी सार ॥४॥
चेतन रहो चाल मत चूको रे जी; गुरु वचनों सूं करोनी ववार।
अजमल सुत रामदेव बोले रे जी; सत में सायब है इकसार ॥५॥

२६

साधो भाई जगत कयो नहीं माने रे हेजी होजी।
घर में देव जो हाथ नहीं आवे, इत उत फिरे भटकाने रे ॥टेर॥

निज आनन्द तो दीखे नांही, आनन्द अवर बतावे।
अमृत महराण भर्‌यो है घरमें, पर घर नावण क्या जावे ॥१॥
म्हांने कहे पीरजी थे हो, हांसी इणरी आवे।
जो पोंहचे सोई पीर जगत में, घर विश्वास दृढ़ लावे ॥२॥
विन विश्वास वे फिरे भटकता, जूत जमों रा खावे।
विश्वासी नर पलक न चूके, निर्भय मौज उडावे ॥३॥
सिमरूं एक अनेक न सिमरूं, चाहे ब्रह्मान्ड उलटावे।
मेरो ही रूप सकल में कहिये, और नहीं दरसावे ॥४॥
जन्म जन्म सूं मैं सूतो जाग्यो, अबके नीन्द उडावे।
कहे रामदेव सुणो रे भाई साधो, आप में आप समावे ॥५॥

२७

सतगुरु श्रान छुडावे, मेरे सन्तों; सतगुरु श्रान छुडावे रे।
नुगणां जीव मरे और जन्मे, भटक भटक मर जावे। मेरे सन्तो० ॥टेर॥
सामो रतन नजर नहीं आवे, कंकर जाए चलावे।
जौहरी मिले तो सौदा पटसी, मूरख मुफ्त गमावे। मेरे सन्तो० ॥१॥
ग्यान सूं बिगड़्या पान सूं बिगड़्या, मोह मद में बिगड़ावे।
सत्‌संग सिवा कठेई नहीं सुधरे, तीनों ही लोक फिर आवे। मेरे सन्तो० ॥२॥
कर्मो रा पाप कठेई नहीं छूटे, करोड़ धाम जाय न्हावे।
अमर पटो सत्‌संग में मिलसी, वो फिर कोई न छुडावे। मेरे सन्तो० ॥३॥
कहे रामदेव सुनो भाटी हरजी, कब तक कह मुख गावे।
सत्‌संग तणी अगम की महिमा, शेष कहत थक जावे। मेरे सन्तो० ॥४॥

।। वाणी रूपादे जी की ।।

१.

।। दोहा ।।

ज्ञात करे परब्रह्मरी, पैंड देय एक मांय।
रूपां कहे रे भाईयों, किण विध श्याम मिलाय ।।
सुख में ब्रह्म ज्ञानी रहे, दुख में देवे रोय।
बाई रूपां यों कहे, भलो कदेई न होय ।।
दुखने दुख समझे नहीं, सुख सूं हर्ष न होय।
रूपां कहे संशय नहीं, जीवत मुक्ति जोय ।।
सतसंगी सीधा बजे, और मन नो उलटो होय।
औरों रे एक जूत है, वांरे पड़सी दोय ।।
धीमा चाले हंस ज्यूं, कहे कोकिल ज्यूं बैण।
काग भ्रष्ट पग ना करे, शीतल ज्यांरा नेण ।।
आपतो सुधरया क्या भला, लाखों दिया सुधार।
कहे रूपां उण संतरी, मैं सेवक बारंबार ।।

२

रूपां कहे रे भाईयों, ओ रूप ढले ज्यों काच।
रूप लोभ में मत रुलो, ढूंढो साहब साच ।।
पड़दे में वे रेवसी, जिहि जग रो डर होय।
सिंह सुता चवड़े फिरे, काल न खावे कोय ।।
सिंहणी बन्धी जो ना बन्धे, बान्धे किला दिन रहेत।
म्हारो प्रेम म्हारे श्याम सूं, जग सूं किसड़ो हेत ।।
जग म्हांसूं अलगो नहीं, मैं हूं जग रे मांय।
फिर पड़दो किण बात रो, ओ अचरज मन आय ।।
मन में तो पड़दो नहीं, अंग पर पड़दो होय।
रूपां कहे रे भाईयों, ओ गुण नो करे न कोय ।।

निज आनन्द तो दीखे नांही, आनन्द अवर बतावे।
अमृत महराण भरयो है घरमें, पर घर नावण क्या जावे ॥१॥
म्हांने कहे पीरजी थे हो, हांसी इणरी आवे।
जो पोंहचे सोई पीर जगत में, घर विश्वास दृढ़ लावे ॥२॥
बिन विश्वास वे फिरे भटकता, जूत जमों रा खावे।
विश्वासी नर पलक न चूके, निर्भय मौज उडावे ॥३॥
सिमरूं एक अनेक न सिमरूं, चाहे ब्रह्माण्ड उलटावे।
मेरो ही रूप सकल में कहिये, और नहीं दरसावे ॥४॥
जन्म जन्म सूं मैं सूतो जाग्यो, अबके नीन्द उडावे।
कहे रामदेव सुणो रे भाई साधो, आप में आप समावे ॥५॥

२७

सतगुरु आन छुडावे, मेरे सन्तों; सतगुरु आन छुडावे रे।
नुगरा जीव मरे और जन्मे, भटक भटक मर जावे। मेरे सन्तो० ॥टेर॥
सामो रतन नजर नहीं आवे, कंकर जाए चलावे।
जौहरी मिले तो सौदा पटसी, मूरख मुफ्त गमावे। मेरे सन्तो० ॥१॥
खान सूं बिगड़या पान सूं बिगड़या, मोह मद में बिगड़ावे।
सत्संग सिवा कठेई नहीं सुधरे, तीनों ही लोक फिर आवे। मेरे सन्तो० ॥२॥
कर्मों रा पाप कठेई नहीं छूटे, करोड़ धाम जाय न्हावे।
अमर पटो सत्संग में मिलसी, वो फिर कोई न छुड़ावे। मेरे सन्तो० ॥३॥
कहे रामदेव सुनो माटी हरजी, कब तक कह मुख गावे।
सत्संग तणी अगम की महिमा, शेष कहत थक जावे। मेरे सन्तो० ॥४॥

॥ वाणी रूपादे जी की ॥

१.

॥ दोहा ॥

बात करे परब्रह्म री, पैंड देय एक नांय।
रूपां कहे रे भाईयों, किण विध श्याम मिलाय॥
सुख में ज्ञानी रहे, दुख में धैर्य रोय।
बाई रूपां यों कहे, भलो कदेई न होय॥
दुखने दुख समझे नहीं, सुख सूं हर्ष न होय।
रूपां कहे संशय नहीं, जीवत मुक्ति जोय॥
सतसंगी सीधा चले, और मन रो उलटो होय।
औरों रे एक जूत है, थांरे पड़सी दोय॥
धीमा चाले हंस ज्यूं, कहे कोकिल ज्यूं बैण।
काम भ्रष्ट पग ना करे, शीतल ज्यांरा नैण॥
आपतो सुधरया क्या भला, लाखों दिया सुधार।
कहे रूपां उण संतरी, मैं सेवक बारंबार॥

२

रूपां कहे रे भाईयो, ओ रूप काले क्यों काच।
रूप लोभ में मत रूलो, ढूंढो साहब साच॥
पड़दे में वे रेवसी, जिहिं जग रो डर होय।
सिंह सुता चवड़े फिरे, काला न खावे कोय॥
सिंहणी चन्धी जो ना चन्धे, चान्धे किण दिन रहेल।
साचो प्रेम म्हारे श्याम सूं, जग सूं किसड़ो हेत॥
जग म्हांसूं अलगो नहीं, मैं हूं जग रे सांय।
फिर पड़दो किण बात रो, ओ अचरज मन आय॥
मन में तो पड़दो नहीं, अंग पर पड़दो होय।
रूपां कहे रे भाईयों, ओ गुण तो करे न कोय॥

३

कहे रूपां हो मालजी, मनमें धारो धीर।
आप धणी सिर ऊपरे, और सब बाप ने बीर॥
एक तुम ही करतार हो, एक है सरजन हार।
दोयां ने कर जोड़वूं, कर दीजो भव पार॥
दीन बन्धु परमेश सो, थां बिन राजी न होय।
इण सूं मैं अरजी करूं, थांसूं इद्द न कोय॥
रूपां सतसू बीणवे, सत राखो जग मांय।
सत सू आगे ई ऊबरया, फिर उबरे पल मांय॥

४

हांरे वीरा नर नारी माय एक है होजी। कोई दूजो मत जाणो।
नर नारी मांय एक है होजी॥टेर॥
हारे वीरां सत रे मारग कोई हालिया होजी; जिके जाणे पियाणो।
कायर काम नहीं जाणसी होजी; भूलां ही भरमाणो॥१॥
हांरे वीरा जिण कारीगर जगत घड़यो होजी; जिणरो अजब कमठाणो।
सोई बिराजे सबरे बीच में होजी, देखो अधर ठहराणो॥२॥
हारे वीरा सगलो ब्रह्मन्ड फिर देखलो होजी; दूजो कोई निजर न आणो।
जिण पायो जिण पावियो होजी; सूतो नीन्द जगाणो॥३॥
हांरे वीरा भेलो रेवे पण नहीं मिले होजी, ऐड़ो है चतुर सयाणो।
जो कोई भिले सो उण में मिले होजी, आप कदी आणो ना जाणो॥४॥
हांरे वीरा गुरु उगमसीजी भेटिया होजी; उलभयो ही सुलभाणो।
बाई रूपांदे री बीनती होजी; ओ ही सांचो परियाणो॥५॥

५

हारे वीरा जल सभी यह आपरो होजी; दोष करन को दीजे।
आप समझ लेवे आपने होजी; सब सांयलो पतीजे॥टेर॥

हांरे वीरा अपणी खुशी से दीन भयो होजी; नाना प्रपंच रचाया ।
मन मांयलो मान्यो नहीं होजी; फिर फिर गोता खाया ॥१॥
हांरे वीरा समभ सेरी है सांकड़ी होजी; जिणमें दोय नहीं मावे ।
एक होय जद चालसी होजी; दोय रयां अलुभावे ॥२॥
हांरे वीरा अपणी इच्छा सूं अनन्त भयो होजी; नाना करम कर लीना ।
खेल रच्यो इच्छा मांयने होजी; अखिल ब्रह्मन्ड रच दीना ॥३॥
हांरे वीरा आप हिरण आप पारधी होजी; आप ही जाल बिछाया ।
है तो आप दूजा कहे होजी; खेल विकट यह माया ॥४॥
हांरे वीरा गुरु रे उगमसीजी भेटिया होजी; जाल निजर जद आया ।
बाई रूपां ओलख्यो आपने होजी; जाल सभी निमटाया ॥५॥

६

जीरे वीरा संगत करो साचे सन्त री होजी; म्हाने साच बताया ।
संगत करो साचे सत री होजी ॥टेर॥
जीरे वीरा समभ्या नहीं बड़ बड़ बक्या होजी; शब्द कया मन आया ।
समभ गया जद चुप होया होजी; चरणों में शीश नवाया ॥१॥
जीरे वीरा संग हो मोती नीपजे होजी; समदां सीप रवाया ।
स्वाति बूंद रो संग कियो होजी; मूंगे मोल बिकाया ॥२॥
जीरे वीरा मन मुड़दा ममता मरी होजी; आशा री सीर सुकाया ।
घट में उजाला हुय रया होजी; च्हूँ दिश सूर उगाया ॥३॥
जीरे वीरा समता समंद में मनड़ो धोवियो होजी; शब्द मसाला लगाया ।
मन धुप करम सब गल गया होजी; दूजा निजर नहीं आया ॥४॥
जीरे वीरा गुरु रे उगमसीजी भेटिया होजी; मांयले रे मांय जगाया ।
केवे रूपां मांय जागिया होजी; आवण जावण मिटाया ॥५॥

७

जीरे वीरा ज्यांरे मन में विरह नहीं होजी; ज्यांरो धूड़ यो जीणो ।
ज्यांरे मन में विरह नहीं होजी ॥टेर॥

जीरे वीरा ऊपर भेष सुहावणो होजी; गेरू सूं रंग लीनो।
आप अगन में जलियो नहीं होजी; होय रयो मति हीनो ॥१॥
जीरे वीरा विरह सहित साधू होया होजी, जिकां शिर धर दीनो।
मरणे सू डरिया नहीं होजी, मग में मारग कीनो ॥२॥
जीरे बीरा विरह होय भारत लड़या होजी, पाछा पग नहीं दीना।
मतवाला झूमे मद भरया होजी; रंग भर प्याला पीना ॥३॥
जीरे वीरा गुरु उगमसी साधू मिल्या होजी; जिकां मन कीयो भीणो।
बाई रूपां री बीनती होजी, परगट निज पद चीनो ॥४॥

८

सुणो म्हारा भाईड़ो रे, अपणें जगमांहे ओ हीज काम,
समझ ने समझासां हे, निज देश दिखासां हे।
लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥टेर॥
चालो म्हारा भाईड़ो रे, आपों सतरै जुमले मांय;
जागने जगासां हे; आसी ज्यांने मारग ले जासां हे।
लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥१॥
सुणो म्हारा भाईड़ो रे; निन्दक ने ई लेसां सुधार,
अपणों बणासां हे, अपणे मांय रलासां हे।
लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥२॥
जग में म्हारा भाईड़ो रे; आपणों बैरी न दीसे कोय,
सब रा सहणा हे; कुछ सुणना ने कहणा हे।
लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥३॥
पाप्यां ने म्हारा भाईड़ो रे; पुनवान कर लेवों सग मांय,
जावण ना देवा हे; साची सैन लखावां हे।
लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥४॥
किसो म्हारा भाईड़ो रे; जग में पुन और पाप,
जीव तिरासां हे; निज रूप बतासां हे।

लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥५॥
हाथ में आयो हे; भायाँ जीव अब खाली न जाय,
आये ने तिरावां हे; जग सूं पार लगावां हे ।
लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥६॥
गुरूजी उगमसी हे; मिल्या म्हांने मगड़े रे मांय,
श्रो काम सिखायो हे; निज देश दिखायो हे ।
लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥७॥
बोलिया रूपां दे हे; मालजी रे घर री नार,
मन मांही म्हारे हे; जग ने पार उतारें हे ।
लासां गुरांरी सैन मांही हे हां ॥

६

थे मानो म्हारा भाईड़ा रे; समझने चालो म्हारा लाल,
भव दुख भागे रे; थांरा भव दुख भागे रे ।
मिलाऊँ सुन्दर श्याम सूं रे हां ॥टेर॥
चालो म्हारा भाईड़ा रे; आपां सत रे जुमले मांय,
मिलने गास्यां हे; उठे मिलने गास्यां हे ॥१॥
तीनूं दुख मेटां रे; चालो आपां गुरां रे दरबार,
मन समझास्यां हे; मांयले ने समझास्यां हे ॥२॥
मायो नुगरा मत रहीजो रे; रहीजो गुरां रा सपूत,
कपूत पणो त्यागो रे; कपूत पणो त्यागो रे ॥३॥
नुगुरां पुरषों रो रे; भाई तज दीजो संग,
थांने कंठ लगावे हे; थांने कंठ लगावे हे ॥४॥
गावो म्हारा भाईड़ा रे; आपां विरह रा गीत,
हरि मिल जावे हे; जिण सूं हरि मिल जावे हे ॥५॥
केवे यूं रूपादे रे; थांने संत रा वैण,
वैण म्हारा सुणजो हे; भव पैला तिरजो हे ॥६॥

१०

रावल माल हुय जावो साध सुधारो थांरी काया होजी।
थांने बार बार समझाऊं म्हारा धोरी कंथा,
हुय जावो साध झीणोड़े मारग चालो हो जी ॥टेर॥

मालजी ओ संसार अथग जल भरियो हो जी। वेरो तेरुड़ों पार न पायो।
हो रावल माल हुय जावो० ॥१॥

मालजी साबू मांय तत सायर बिच बेड़ी हो जी। वेने कूण उतारे पेले पार।
हो रावल माल हुय जावो० ॥२॥

मालजी काया में कूड काठ ने करोती हो जी। वा तो आवत जावत वेरे।
हो रावल माल हुय जावो० ॥३॥

मालजी रूप देख मत मन ने डिगाओ हो जी। वे री फल चाख्यां पछताओ।
हो रावल माल हुय जावो० ॥४॥

मालजी काया कू पली ने मन कस्तूरी हो जी। वां पर जरणा रो ढकण दीजे।
हो रावल माल हुय जावो० ॥५॥

मालजी पैले री नार-जननी कर जाणो हो जी। वेने बैनड़ कहे बतलाओ।
हो रावल माल हुय जावो० ॥६॥

मालजी पैले री वस्तु मांग कर लीजे हो जी। काम सर्यां पाछी दीजे।
हो रावल माल हुय जावो० ॥७॥

मालजी नुगरे माणस रो संग मत कीजे हो जी। वो तो आप डूबे ने डुबावे।
हो रावल माल हुय जावो० ॥८॥

मालजी कालर खेत बीज मत वावो हो जी। वे री हामल हाथ नहीं आवे।
हो रावल माल हुय जावो० ॥९॥

मालजी घर री खांड कड़कड़ी लागे हो जी। गुड़ चोरी रो मीठो।
हो रावल माल हुय जावो० ॥१०॥

मालजी नीम ज खारो नीमोली वे री मीठी हो जी। विष अमृत कर डारो।
हो रावल माल हुय जावो० ॥११॥

मालजी रूपे हन्दी नाद सोने हन्दी सेली होजी। बोलिया रूपांदे उगमसी री चेली।
हो रावल माल हुय जावो० ॥१२॥

११

हांरे वीरा किण ने केऊँ रे भेद नहीं जाणे रे जी।
ए तो स्वार्थ छुरियां चलावे रे लाल जी। किण ने केऊं० ॥टेर॥
हांरे वीरा सारी सारी रात ए जुमा रे जगावे रे जी।
ए तो लम्बी जोत जगावे रे लाल जी। बाहर प्रकाश उजालो नहीं मांही रे जी।
ए तो बृथा ही रात गमावे हो लाल जी। किण ने केऊं० ॥१॥
हांरे वीरा भांगे नारेल चूरमा चूरे रे जी। ए तो होडा होड सूं गावे हो लाल जी।
बाजे तंदूर मंजीरा गहरा रे जी। थांरो मांयलो भरम नहीं जावे हो लाल जी।
किण ने केऊं० ॥२॥
हांरे वीरा सिध रामदेव भाई म्हारे भेलो रे जी।
एतो कूड़ा कलंक लगावे हो लाल जी। रामे री करणी जगत सूं न्यारी रे जी।
कोई करे वो पार हो जावे हो लाल जी। किण ने केऊं० ॥३॥
हांरे वीरा परचे पीर परसे सोई होवे रे जी।
एतो बिन परच्यां किम पावे हो लालजी। बोलिया रूपांदे उगमसी री चेली रे जी।
समझे जिके नर आवे हो लाल जी। किण ने केऊं० ॥४॥

॥ वाणी रोयल जी की ॥

१

अचरज खेल अचंभा देखा। नहीं कोई रंग रूप नहीं रेखा॥ टेर॥
पांच तत्व गुण तीन पसारा; चेतन एक बहुत बिसतारा।
शब्द स्पर्श रूप रस गंधा; सब में अलख लखे नहीं अंधा॥१॥
शशि नहीं सूर दिवस नहीं रजनी; नहीं कोई संगत नहीं कोई भजनी।
नहीं कोई कायर नहीं कोई सूरा; एक अखन्डित सब घट पूरा॥२॥
नहीं कोई सुन्न शिखर नहीं गगना; पीवत प्रेम भया मन मगना।
शब्द न दरसे बुद्धि नहीं परसे; स्वात बूंद जल अहनिश बरसे॥३॥
नहीं कोई ज्ञान नहीं अज्ञाना; नहीं कोई मूरख नहीं कोई स्याना।
आप ही पेटा आप ही ताना; आप आप में उलट समाना॥४॥

जन्म और मरण हुवा कछु नांई; धूप की छाया कूप के मांई।
नहीं कोई गया नहीं कोई आया; रोयल रतन अमोलख पाया ॥५॥

२

हरिजन लाया शब्द का बेड़ा। सुगुत पुकार आवे कोई नेड़ा;
अमर लोक से आया तेड़ा। हरिजन० ॥ टेर ॥
सत का बेड़ा ले सबको बुलाया, सिर साटे लेजाऊँ भेला।
छोड़ ससार सब झूठ पसारा, काम क्रोध लुबध का खेड़ा ॥१॥
सैन समझ वाले कोई सूरा, जम का मिटावे झगड़ा और भेड़ा।
सब मरजाद लोक लाज खोई, होय निरवाला राख्या नहीं चेड़ा ॥२॥
सैन लक्ष में सुरत मिलाई, भव जल अमाप अथाग अवेड़ा।
दूत भूत कच्छ मच्छ भव सागर के, हरिजन ठेल कराया छेड़ा ॥३॥
पैंडो पियाणो करत दिन रैणा, जल ते जहाज किया ले नेड़ा।
र सलामी पार उतारे, रोयल अमर घाट का गेड़ा ॥४॥

३

वहां नहीं पहुँचे बुगला है, पहुँचे हँसला है ॥टेर॥
मान सरोवर मोती मुक्ता, गुर बिन गम नहीं पावे।
पूरण पद प्राप्ति बिना, फिर फिर गोता खावे है ॥१॥
काया बाड़ी में तरवर ऊगा, जाके अमर फल लागा।
शीश बिना लेसी सन्त सूरा, कायर सुण सुण भागा है ॥२॥
भँवर गुफा में मनवर मिलिया, जोत जुगत कर जागी।
पांच सात मिल साखी गावे, तत्त्व तार धुन लागी है ॥३॥
जल भीतर एक अगनी जलत है, बिन दीपक उजियाला।
अमृत मारा अमी झरत है, पीवे हरिजन प्यारा है ॥४॥
प्रेम पियास लगी घट भीतर, अपर कछु नहीं भावे।
काया नगर में अलख बिराजे, जो खोजे सो पावे है ॥५॥
अमरापुर में आसण कीना, दुर्जन मार हटाया।
रोयल रात गई दिन पाया, इच्छा मंगल गाया है ॥६॥

४

हंसा कठो रे पयाणा रे पहोंचरा हे। तू तो उलट अगम चढ़ बैठ रे,
हँसा गुरुजी रो देश सुहावणो हे ॥टेर॥
हँसा बुगलों रे देश में आवियो रे; जठे थारी जाण न पिछाण रे।
हँसा कौण करे थारी पारखा रे; ओतो आंधो लोक अजाण रे॥१॥
हँसा भवसागर री सीर में रे; ओतो बढ़ो जाल संसार रे।
हँसा भजन करे सोई ऊबरे रे; ए तो डूब मरे गंवार रे॥२॥
हँसा ज्ञान गुणां हन्दी गांठड़ी रे; आतो बिन गाहक मत खोल रे।
हंसा जद आवे थेरा पारखू रे; आतो बिकसी मोंगे मोल रे॥३॥
हंसा अगम पुरी गढ़ गांव है रे; बठे रे हंसो केरो धाम रे।
हंसा बुगला सिर पंछा पड़े रे; एतो हंस चढे निरवाण रे॥४॥
हंसा बुगला भक्ति जो करे रे; ज्यांने ठांव नहीं कोई ठौड़ रे।
हंसा अनन्त उपाय वे कर रया रे; ए तो पच पच मूं'वा करोड़ रे॥५॥
हंसा थारे कुल रो कोई नहीं रे; ओ तो अवर सिराणो साज रे।
हंसा मानसरोवर झूलणो रे; बठै रे हंसो के रो राज रे॥६॥
हंसा गुरु सम दाता कोई नहीं रे; थांने बार बार परणाम रे।
हंसा रोचल शरणो शाम रे रे; मैं तो वठां पायो विसराम रे॥७॥

५

लेणा हुवे सो लीजो सांचा भाईड़ों हे। अब ही लेवण के री विरियां रे साधो;
मानखो जन्म हीरो हाथ न आवे हे। फेर भटक चौरासी रे साधो; ऐड़ो रतन
हीरो हाथ न आवे हे॥टेर॥
श्याम घटा सिर श्वेत भई है हे; अज हू न आवे लाजा रे साधो।
तिरिया जिके नर करणी सूं तिरिया हे; सरिया जि कोरा काजा रे साधो॥१॥
ज्ञान कथे नर रैणी न रैता हे; बिन रैणी कैसा हाना रे साधो।
मन परमोद सके नहीं अपणो हे; औरों सूं मंगड़े स्याना रे साधो॥२॥
सजा हुवे सो हंस मत हाले हे; छीलर पांच न मेले रे साधो।

माघ हुवे ज्यांरे घट उजियाला है, अकल कला मांहे खेले रे साधो ॥३॥
शीश उतार धरयो गुरु आगे है; अब कछु संशय नांही रे साधो।
पांचो ने उलट एकण घर लाया है, अनुभव आतम मांही रे साधो ॥४॥
किरपा भई जद सबदा रचिया है, भाव भगत कैसी हांसी रे साधो।
रोयल रतन अमोलख पायो है; शिर साटे अविनाशी रे साधो ॥५॥

६

समझ हालो रे मौजा भाइयो है; थे लेवोनी गुरां सूं परतीत भाई रे लोय।
काया मांयला कुलचण परहरो है; आई है हंसो केरी रीत भाई रे लोय।
निश दिन भूलो हर रे नाम में है ॥टेर॥

धन धन साधू रे सूरवा है; ज्यांरे विरह अग्नि घट मांय भाई रे लोय।
शीश दियो पर ब्रह्म ने है; अब कछु संशय नांय भाई रे लोय ॥१॥
दिल दरयावों में भूलणो है; नाम नीर अंग धोय भाई रे लोय।
ज्ञान अंजन वांरे नेतरां है; वांने कबहू न दरसे दोय भाई रे लोय ॥२॥
अचरज ख्याली रे आप है है; अकथ कथ्यो नहीं जाय भाई रे लोय।
सुर नर मुनि जन रट रया है, बिन किरपा कछु नांय भाई रे लोय ॥३॥
चित चेतन सू जा मिल्यो है; अब बीजड़त्ता को नांय भाई रे लोय।
रोयल शरणे शाम रे है; बूंद रली जल मांय भाई रे लोय ॥४॥

॥ वाणी गांव पिथरासर के ठाकुर जगमालसिंह जी की ॥

मेरा स्वरुप अनूप रूप है, सब वेदों में गाया। सच्चिदानन्द सदा नित व्यापक, नाश सू रहित बताया ॥टेर॥

चेतन आश्रित मूल अविद्या, बहुधा भेद दिखाया।
नाम रूप किरिया में अनुगत, नित चेतन निरदाया ॥१॥
व्यापक व्योम अखन्ड एक रस, घट मठ नाम धराया।
साक्षी बुद्धि विशेषण मिलके, परिछिन्न जीव कहाया ॥२॥
देश काल परिछेद न मो में, वस्तु निरन्तर थाया।
कारण काज सजाति विजाती, स्वगिपत भेद मिटाय ॥३॥

मैं सब का आधार अकरता, क्रिया उनमुन काया।
नित प्रापत मम रूप सदाई, सो सतगुरुजी से पाया ॥४॥
सूक्ष्म स्थूल कई लोक चतुर्दश, विषय पदारथ माया।
सब में मिल्या सब से न्यारा, स्वतः प्रकाश अंजाया ॥५॥
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय बुद्धि वृत्ति, त्रिपुटी भरम उपजाया।
आतम ब्रह्म अपंपर साक्षी, ज्ञेय ज्ञाता ही पाया ॥६॥
स्वामी नारायणगिर किरपा करके, तत्त्व कहि दरसाया।
अब जगमाल नहीं कछु करतब; सिंधु में सिंधु समाया ॥७॥

॥ भजन साधू मोहनरामजी कबीर पंथी के ॥

राग-फिल्मी, तर्ज "-कोई रोके तुम्हें और यह कहवे" ॥

मन के स्वारथ छोड़ जरा, कृष्ण के मारग आता जा।
छोटे से नाते को छोड़ के दूर, विश्व से प्रेम बढ़ाता जा ॥टेर॥
अपना कल्याण तू करने को, माला जंप तप और वास करे।
बन ना निठल्ला ऐसा अब, उस कृष्ण पुजारी कहाता जा ॥१॥
कौन से वेदों का मन्त्र रटे, कौनसा उपनिषद् ढूंढे।
एक कृष्ण की गीता पढ़कर के, सब जग को अपनाता जा ॥२॥
काम करो सब विश्व के पर, व्यक्तिगत को कुछ भी नहीं।
चक्र चले भगवान का यह, तूँ भी भाग बटाता जा ॥३॥
जो तूँ एकान्त में जावेगा, तो पाप औरों का खावेगा।
खुद भी कर्तव्यारूढ बनो, शुद्ध जो भोग को पाता जा ॥४॥
औरों के भूँजे भोग जो तूँ, खायगा तूँ दुख पावेगा।
आपही कर्ता भोक्ता बन आप, जुदा पन निकाले जा ॥५॥
मोहन सब है यह रूप तेरा, तूँ ही सभी का रूप सदा।
नाम और रूप है मिथ्या सभी, शुद्ध स्वरूप समाता जा ॥६॥

राग-फिल्मी, तर्ज "अंग्रेजी छोरा चला गया" ॥

ज्ञान रवि जब उदय हुआ तो, भरम अंधेरा चला गया।
आ बैठे सत्संगत में तो, सभी बखेड़ा चला गया ॥टेर॥
राग द्वेष की चमचेड़ें, चित्त में यह रोज सताती थीं।
कुकर्मों की कोचरियें ये, नाना शब्द सुनाती थीं।
देखा सत के सूरज को, अज्ञान उल्लू सो चला गया ॥१॥
काजी मुल्ला पंडित गुरुवर नित, तरकर मार मचाते थे।
हमको झूठा दम देकर ये, माल मुफ्त में खाते थे।
आगे मुक्ति का भ्रम घँसा, बस अब वह हमारा चला गया ॥२॥
अब नहीं हम स्वर्ग को चाहते हैं, बैकुंठ की कुछ परवाह नहीं।
देह विदेह मुक्ति की दिल में, हमको नहीं चाह रही।
जब अपना स्वरूप निहार लिया, तब भरम अँधेरा चला गया ॥३॥
अब नहीं जीव और नहीं ब्रह्म, और नहीं ईश्वर का डर हमको।
मोहनराम रूप जग है, अब भरम अँधेरा चला गया ॥४॥

राग-फिल्मी, तर्ज-"हवा में उड़ता जावे" ॥

कोई ज्ञानी निजानन्द जोये, जो भाव थे मन के पोये; होजी होजी ॥टेर॥ आने जाने की दुविधा मेट कर, सब में एक दिखाया; हां सब में एक दिखाया। जैसे जल बिच तरंग समावे, ऐसे ब्रह्म समाया; हां ऐसे ब्रह्म समाया। वो सदा एक रस नहीं जागे नहीं सोये। कोई ज्ञानी० ॥१॥ जीव भाव को मिटाकर उनने, माखन आनन्द लीना; हां माखन आनन्द लीना। तपा के उसमें ज्ञान घृत जो पीवे उसको दीना; हां जो पीवे उनको दीना। जो पीवे वो ही जन मैला मन का धोये। कोई ज्ञानी० ॥२॥ सत्संग करने का आनन्द लेना होवे लेवे; हा लेना होवे लेवे। मान बड़ाई दूर हटा कर परमानन्द पद सेवे; हां परमानन्द पद सेवे। गाफिल रहे जनम भर जग में यूँ ही बात सब खोये। कोई ज्ञानी० ॥३॥
मोहन रग रग में यह राचा और न दूजा कोई; हां और न दूजा कोई।

खेल करूँ खेलाड़ी बनकर रंगू न रंग में सोई; हां रंगू न रंग में सोई।
मेरे रंग में रंगे सभी यह मुझमें एका होवे। कोई ज्ञानी० ॥४॥

राग–फिल्मी, तर्ज–"बिगड़ी बनाने वाले" ॥

दुबिधा मिटाओ मन की, ब्रह्म पद पावो; राग द्वेष को दूर हटावो ॥टेर॥
सत्संग का दावा रखते, खाली क्यों मुख से बकते,
बकते क्यों नहीं लखते; मन समझाओ। राग द्वेष को० ॥१॥
सत की नित संगत करना, दुर्व्यसनों को तुम हरना,
पाप से मन में डरना; अमी पीओ पाओ। राग द्वेष को० ॥२॥
सत्संग का आनन्द आवे, सारे विक्षेप मिटावे,
विश्व अपना बन जावे; सब में समाओ। राग द्वेष को० ॥३॥
मोहन यह आनन्द लीजे, अबकी मत देरी कजे,
वख्त अमोलख छीजे; नींद को उड़ाओ। राग द्वेष को० ॥४॥

राग–फिल्मी, तर्ज–"बिगड़ी बनाने वाले" ॥

सतसंग में आने वाले, अमृत फल खाने वाले;
फिर क्यों विषय के, विष फल खावो ॥टेर॥
गीता को निश दिन पढ़ते, आदत से फिर नहीं हटते,
तोते ज्यूं क्यों यह रटते; ध्यान क्यों गमावो। फिर क्यों विषय० ॥१॥
धाड़ा बन्दी से नहीं हटते, पापों से कुछ नहीं डरते,
कृष्ण का दम क्यों भरते; जग क्यों हँसावो। फिर क्यों विषय० ॥२॥
वसुधैव कुटुम्ब हमारा, सब ही है हमको प्यारा,
देखा है रूप पियारा; भेद सब मिटावो। फिर क्यों विषय० ॥३॥
मोहन के होय उपासी, मुक्ति है उनकी दासी,
जो क्यों भुगते चौरासी; जीवत मुक्ति पावो। फिर क्यों विषय० ॥४॥

राग–फिल्मी, तर्ज–"नहीं बदला वफा का" ॥

किया निश्चय यही हमने; सभी हम में यह दुनिया है ॥टेर॥
भूल कर हम ही हमको हम, पड़े माया के चक्कर में;

हमी को चीन लीया फिर । सभी हम में यह दुनिया है ॥१॥
हमी तो बाप बन सबके, हमीं बनते सबके बेटा,
हमी स्वामी हमी मालिक । सभी हम में यह दुनिया है ॥२॥
मेरा सकल्प सभी दुनिया, मिटा दूं तो सब मिट जाये;
सभी मृग तृष्णा का जल है । सभी हम में यह दुनिया है ॥३॥
नहीं कोई कूप में केहर, फटिक में गयद नहीं कोई;
नहीं है काच में सूरज । सभी हम में यह दुनिया है ॥४॥
नहीं है सीप में चाँदी, रज्जू में सर्प नहीं होगा;
ऐसे मोहन निश्चय करले । सभी हम में यह दुनिया है ॥५॥

राग-फिल्मी, तर्ज-"अपसाना" की ॥

करना है तुझको ज्ञान जो जग के व्यवहार का,
गीता का अमृत पीले, जो कि श्याम मुरार का ॥टेर॥
गोपाल ने निज गीता में, सब भेद बताया है।
हर छन्द से वो खोल के, अर्जुन को पढाया है।
उसको विचार ले तूं, मारग निस्तार का ॥१॥
सोये हुवे जो नींद में, उनको जगा रही।
मर चुके विषयों में उनको, फिर जिला रही।
पढाती है ये मन्त्र सारे, विश्व के प्यार का ॥२॥
भगवान ने की थी दया, गंगा बहाई है।
जो छोड़ी इसमें नैया, पार लगाई है।
दिखला दिया है जीते मुक्ति, यह मन्त्र उद्धार का ॥३॥
ये पी चुके हैं अमृत वो तो, फिर न आयेंगे।
अगर आयेंगे तो इच्छा से, अवतार पायेंगे।
होगा न पापों का अधिकारी, न दुख के बारका ॥४॥
मोहन यह निश्चय करले, निज अपने रूप का।
तज दे तूं आसरा इस, जग भ्रम के कूप का।
ले ले मजा विराट इस, भगवान यार का ॥५॥